भैरवादिपूजासंग्रह

(020)

फो- १११

[illegible] ब प्रा नि नं न [illegible] न ब भं स म व तु [illegible] ल थ्या ह ग म थें वा वि मी द [illegible]

[illegible] न ब नु [illegible] न म ना ना न ह्रीं [illegible] प न [illegible] दे वि थि [illegible] न प ना [illegible]

पि यं न्नू प ना रु व भ भा ॥ ॥ ॥ जा म क वि ब सू न न त्रा ह ल सं ॥ वा व ॥ आ [illegible]

जि चो ह ग तें गु नं पू र्ब कं ॥ छा द र्या क भें गे व सो म न स कु व प क्षु मा ॥ ज्ञ थ भ ग छ आ चि [illegible]

[illegible] नि नो ग दे ॥ ग न था का में त वि ता हु य ड व धं ग ग मा न न थ न तें [illegible] ह वि य क मा न

ॐ नम श्रीकृष्णाय॥ थन नित्य कर्म समान कायाय धुनवं मात्यका
सूर्यका॥ वलालेय॥ मालक्ष्मिन थाय समान तया वका॥ चिन.सिधुन
गवसका: दाथि. कदं थमा का: यकूयगा का. सूर्यवास. आलका.मान
कनय॥ समनमानक्षयाय॥ वलिवायव॥ अर्घ्य यानवाय॥ य यवं
लि वाय॥ वनवनमालक्षकभौय॥ कलशवाय॥ लग्नवाय॥ मा कन
द मानय॥ थुलिमय धुनवन नवा॥ जुथवाय ता धनी॥ न्यासयाय॥ ल
पो नवोसन वोयवोका:॥ ॥ आलादिलिकुनायनुमन्तु: सिद्धि ठवेगायगे॥ जवसमिन:
मानेनसदगा. पीटवाहा स ४॥ ॥ ३॥

र्वपाशसहस्र त्रिशिखि कृपद्ध नयय ॥ भूवर्षुं थनीं ॥ त्रिकूपिस्कजन त्रिकून

थाय ॥ मन्त्र ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं गालज ॥ याव तजवना लाम क्षुपूयाश्री ॥

स्वव नालग नजवक्ष पूयाव जयनय ॥ गन्ध पुष्पं ॥ कृष्णिकायाविधन्ह.कु

लढिखायषिमस्ह.गनाकृष्णिव स्वादया ॥ धूप ॥ ज ॥ पूजकेन ॥ खनूथ्यो

नास्कजादनीय ॥ ७ ॥ कूम्भिथाय लाख नां ॥ सूर्यपापगलवाढ लूव वूम्भनाथा

लगय ॥ थन श्री याव सुननानी ॥ यश्रेसगनलनानी ॥ जुलिम नानी ॥ वदनी

तिकूलं. जजमका. ह्र[illegible]. स्वानं. कर्तुवमाका. वश्रृं. वमाका. नूहानं. व मामि

थूमिनयाव ॥ सू. खिदक काया अनया ॥ यात स ॥ सकिनथन का ॥ वाक्या ॥

अत्रकाशुरवशुसहग. जूसखनसमीरुव ॥ आपूनिमीनलायाय. विरवनस

मायदं ॥ ॐ यातंजूनिपूनय७ ॥ ॐ नियानम न नाविधा ॥ अथकेहस

थन ॥ स विनिकूयतकायाको ॥ ॐ ह्ना ग्माननिक्रियालासनबनः

ततिमा माक्रियामजलास्वा ॥ सागेनासावहू ग्मोस्गाबनिशुहद

मारु कावनुमृक्ष ॥ माउक्कमावविक्षू ग्रदगलनपिमाहे नवीक्षवयाला
मानुकालेकनूयाविवि मगुनदया. यागिनी लीं नमामि ॥ मक्लि ना ॥ थ भ
मामसमा ॥ वनूदक्षगया ॥ ०० गिम बनाविभि ॥ जूथवि नखनमालिय ॥
न्यामयाया ॥ ददयाकविगासि बनस्यानगिन ॥ वाक्ष ॥ श्रीलुंखलुवन्द
नीदिव्यागक्षाद्वसूमानादनँ. मारुविगाललाठाक़. वन्द्यनींगिरक्षनी ॥
विनस्यानथूक्षाबगिन ॥ बिलङ्वगिमहादिन. बिनरुस्याविलुविन ॥ न

लाक्षा कर्पूर लीढ वी. सिंदुरा नूल मुलमं ॥ सिध नस्नान धूदा नगिन ॥ जउः
मानचित्र नगिवक्र ॥ बाक्ष ॥ वन्ध नै वन्ध नै पूनो. यथि नेथा य नाहन. श्रायद्
ह्नगनि ला. लक्ष जाजमदा रुव ॥ स्नान विक्ष ॥ नाना पूथ्व हम श्यानि. म लः
य कूह मादय ७ ॥ ॥ धूपकाय ॥ जजमान पूजा रुहतथि वध ॥ वाक्षा ॥ ज
जमान सं. ख दनिम हा या र्थ्व नय श्री रयवा न द वा वननिमिपिर्थ. कमें दनू
पूथ्व स्वाजन म हमय गा मि नम ॥ श्रायय्थ ॥ श्री सं वला स्नानादि ॥ ते कानाहमाः
कु

न्हू. भ. वजयमनखेलिगथा॥ खेंयु कानगनादवो. श्री कृष्णि कानमान्ह छं॥ नि
ह्निनरुक्मि याानम. विह्नि नरुवनाथिय॥ पूर्ण नपु तिनलपू. लक्ष्मी तं यागि
वह्नेतं॥ सर्व बीकृष्णि प्रुतमर्दं. सर्व आनिकलंजुरुं॥ जाय पूपूयाजवामिव
लक्ष्मी तं यागिवह्नें तं॥ जथबा नंप्रुसालालं. आनिरुवरु वाजिनं॥ क्षव देव
भगार्नं. आनिरुवरुओ॥ जजमानसवरुर्दत्ति मालपार्व न श्री कृष्णि कापः
कुरवा न दबार्वनकमन्हनू पूया सजनसमन्यायामि॥ जावायपूरा
र्वेनर्नं

रुम नवज्ञाय॥ पूर्नमावार्थनमरयाघ॥ ऊँ ह्रां श्रीं ह्रूं क्लीं॥ ऊँ ह्रूँ मूखलु
मनुलाकाली थाकजनवनावर्ती॥ नन्यदवासि गहि ग्रेसनत गस्ले श्रीगुरु
वनम॥ गुरुब्रकागुरुविभूगुरुदवमरुश्चन॥ गुरुदवजगमर्वेगस्लश्री
गुरुभ्यनमः॥ श्रीश्रीवनमहिग्रुरु श्रीवनमावार्थ श्रीगुरुजादिदवयाइ
क्लीं॥ जयश्मासनयाइ क्लीं॥ नयपास्लानायपाइ क्लीं॥ उक्र्मोस्लायपाइ क्लीं॥ः
उक्लिलिशविश्वक्कक्क॥ यक्राःअस्त्रायरुढ॥ ऊँ न्नैं ह्रूं रुढवजगीजनलाला

३ ॥ ॐ त्र न म कू ल कू न म त्र ल क्रौं ॐ रु ठ स्वाहा ॥ ॐ ग न मा रु ग व णि द्र ल्क्म

ला यं क्रां श्री ज्रू गु स्वा र या [illegible] रि का ये कू नु दि पा ये ॐ श्री ने ॐ

न्या ये पा इ कौ ॥ ॐ ॐ ई व थं त्र रि स्व ह्र श्री म ध्व मा ये पा इ कौ ॥ ॐ ग थ

ज भू घा ज भू घा ना मू रि व ह्रू नू या ये ॐ श्री भू ना पि का ये पा इ कौं ॥ ॐ

ज व्हौं ह्लौं मं द्र ना ति का ये ॐ श्री क नि स्वा यं पा इ कौं ॥ ॐ कि नि श वि स्व क्ष क्ष

ना यं ॐ १ श्री क ज ग ना य्र पा इ कौं ॥ क न्या स्म ॥ ॐ न मा रु ग व णि द्र न क म

स्व न घा न जु घा न जु था ना नु त्विव ह्रूं ना ये ह्रूं श्री ह्रूं श्री न म क्रा प पा ह्रूं कां ॥ व

लायैऽं श्री ऊर्द्ध वक्राय पादुकां ॥ ह्रूं कृष्णिकायै कुलद्वीपायै श्री पूर्व वक्रा
ये पादुकां ॥ ऊं ऊं हूं व वं न मि स वङ्गूपायै श्री ऊ लु न वक्राये पादुकां
॥ ख्रां ख्रीं म ह नानि कायै श्री याम्यि म वक्राये पादुकां ॥ ऐं किनि शवि खं फ्रां
कनायै श्री पश्चाय न वक्राय पादुकां ॥ ॐ ह्रूं गि वक्रान्यास ॥ ऊ न मा ह्रूग वं
गि हृत्कमलायैऽं श्री हृ म लायैऽं श्री हृदयाय पादुकां ॥ ह्रूं कृष्णिकायैः
कुलद्वीपायैऽं श्री जिनश्मशाना ॥ ऊं ऊं हूं व वं न गि मा य वाबदू ॥ वा

नें ल्ले स्ला न ना पिं ह्रां का न व क्रि मदुलाय हजकला न्ग न म॥

अथ स्नादन विधि लिखन ... वाह्न मगलाय नमः

नतुषानजूषा नामूर्खि वन्तु नेयायश्रीकनवायहुं॥ ॐ ह्रौं मद नाशिकाय

ह्रीं श्री नमस्त्वाय वायवा षट्॥ ॐ हिनिशविद्वकीं कनारो ह्रीं मूत्राय स्वहा॥ अगन्

हा ॥४॥ न भाजल पात्र पूजा॥ जलपामात्राय नमः॥ ॐ ह्रां आनन्दं गकिरो

नवानन्दविनाशि वनयश्री श्री जलपात्र स्थानका श्री येयाइ कीं॥ ॐ

हृदयाय याइ कों॥ रक्त श्री ॐ नमः यकं॥ ज्ञावाद श्री नादिष्यनमः

ह्रीं ह्रुं स्वाहा॥ गायत्री॥ ॐ श्री जकुखिकाय विप्रदत्तकुल विद्यायधिमहि

*बमर

नमो कृष्णि यवादयानु ॥ श्रमक्रु लदवनाधि सर्व्व दवज्ञात्मा न ताय ॥ ॥

नमोस्तु ब्रयात्र पूजनं ॥ जूबयायासनायया इक्लीं ॥ ॐऽ डांर्ड्रं कुं ब्रह्न न २ ध्वी

न २ नननननू त्र वग २ यवन २ केलृ २ दंम २ ध्नानुय २ विध्नानय २ विष्णि

२ हूं ३ स्न ठ श्री श्रीमहाकामानीकाविश्वं याइकौं ॥ ॐज स्त्रौं ज्ञानवलकिहं:

वेवानन्दे श्रीमहाविष्णानाअज्वनी स्त्रौं श्रीसूर्ययाज याइकौं ॥ रवऊ:

ऊंनतैवूषा ॥ ज्वावाहनादियानिम स्त्रौं जड र्गव्वन ॥ जूवयागस्वाहः

॥ ॐ नमः ॥ ॥ श्री ॥

न का या व ख व ना ग ति का न वा या व ला न ग या व क्र य म ज व ना ॥ ओं

हृदि ॥ क्ष्रूं वक्र ॥ क्षां मिन ॥ क्ष्रूं वक्र ॥ क्षां कदि ॥ क्ष्मां आनन्द अक्षि हेव ब्रनव

विना मियनय क्ष्मां ज मनमाय क्ष्र नाक्ष्म यवूर्यं याइ का ॥ वि

लयनरवननयाइ क्ष्म का ॥ जैं सिनल्य पूक्ष्म न याइ का ॥ श्री विनलम

सिंइनेयाइ का ॥ क्ष्रुं क्ष्रूं सर्वनमा ललिया इ का ॥ क्षौं नानाम्रग आर्न

कानयूर्यं याइ का ॥ क्ष्मौं याइ का ॥ वा ग य न ग ना मि का या मि ना मि

गुनाहन ७९६

क्ष्मां मनाक्षी साविक्षान ॥ ओं मनि पूर्ण ॥ क्ष्रुं क्षिन्द ॥ क्षौं नमा मां क्षौं

क्षयं७॥ ॥नमो देवपूजनी॥ वक्षं अहन पयक्षा॥ रकानें वायविलेन
दुयविवनें॥ वजयानिनदर्ढं॥ कानें वर्णुकरक॥ गइयनियवनमं॥ वद्रि
विजनलदसें॥ ॐन्हविन्हलयानं॥ लिनकमनदन क्षिविभानाम्रवकें ह
बांक्षकेटेइनिलें॥ दहृगिकूनमनं॥ मनूरुनहिंयाय॥ ॥नाविकमह
कायवं॥ मनितनानयायय॥ बाक्ष॥ जिवहक्षि नीवमगं॥ पिढ्रि पिढ्रिव
दवहि॥ जूलिमानानेदवात्रियाभ्यह॥ द्विनयावाक्ष॥ श्रीखगुवन्हनेविद्य
लिदुरुथवाक॥ जलिकाधिकरस्मलपाइक्षनेकेनागतरुवें॥ भमिनाग्गिसम
लिजुरें लिदुरंषिगिजरकेगी॥ ॥दिसाकायवाकय॥ ॥दिव्यनललसमापृकेंवद्र

कद्दुपनाकावाकः॥ ॥कश्रु धँतु-पनाकोचः-वृ-द्धिकोपनमभ्रयो॥
मव ओहाग्वदी चँव-ग-ह-ना प व म्ह व वि-॥ ॥४॥ प गापाः डि
गन्धा थी ः हु मा मा ह नै ॥ आ ह छि गै नै ना ज ख्व व कु नै थ्रे गु ह जा ॥ मि न्ह नयावाः
का ॥ वि ग व्व ना म सो विन. वि न ह ल्व विह्न छि ग ॥ गो ला क्वा क र्प नी द वा. ति ह्न न
नूनमूलमं ॥ ह सि या वा क्वा ॥ ल्व र्ग म ल्व क या जा यं. न र ई ग ए द ज कं ॥ दिं ब्व च
हु ह्न ना ल्व थं. ह छि कं ख लि ग क्वा गी ॥ क र्पु प ना का या व क्वा ॥ क खी थ हु ग सं ध्वा
थ ना का नं व व र्लु कं ॥ या कु लि डि ह्न ना ल्व र्थं. ग ला न ल्वा ज मू ल मी ॥ ग्रा का ग या का
क्वा ॥ द्वा क्व न ला ग धा नि. ल क्वा न ज न व व दं ॥ सि डि वसा छि द मी न. ग लो तः
नदवालयाजाकोः॥ ॥विहा थ्रु न ग ग ह सवं वै नू प्य म प गा य नं॥ ज ा ६ क्र न याः
ओ म ब्र ज स ह० र्वे कृ नु ः॥ ॥

जगदंबिके॥ जजनकायावाका॥ जह्लायविनं.पेनैमृ ... यनमगजापनः
न॥ वहअयणिसमूसूकमजयणिमक्रमूहे॥ जह्लायविनयनमक्तगजे॥
मनामधियावाका॥ नानाञ्जालसकामं.विनामानिमृक्लयरे॥ मनामन्याः
निदवनि.सायगयमि॰ कमी॥ स्यानक्सयवाका॥ नानायूयासूगझानि.
मानयाकूसूमादय॥ सोनर्यसिञ्जिवस्ल.यूझानासनमूलमं॥ नायनि
दयावाक्षा॥ मविश्वरु क्रदंदजी.रुक्तिमहिवानाकूसू॥ ... मनमवन
जगमनावावाकः॥ ॥जञ्जायवीनं.पूनमंयविर्जं.प्रगायनयनसहमं पूनकाणूामापू
कूमूगुं.पूनिमिचह्लजञ्जायवीनंयनमक्रगजः॥ ११६॥

द हि. य न ग्रा व य न मा ग गि ॥ ने श्चैं ग ला नं ला ला ॥ थ न गि य ह्मा य ॥ सू ना स कि
लि बा मो ग. न तं लि ला न मू ल मे ॥ व हि लि छि उ गे य र्थ. सू नि स्न ना ना य वा म:
हे ॥ ०० गि द व स ना न यि मि ॥ द र्थे. क ग. भू न. वा म ह ल ५ ला ॥ द गि. य म ङु
य द हे ला ॥ ग ना मा न नि य थ ॥ ॐ ग ज यु लै मा निं द वी नि र्म्भ य मू ल ना ग नी
ह्म न अ कि उ ह ह विं. वृ हि ली ग व व र्ष नी ॥ सं नि त र्ष ह्रू गा ना. सं मा न कि व
व छि गा ॥ गा जा वि गा य लि द वी. का नू र्ण कृ न व ल्ल ल ॥ ज य गि य न म व नि

नि नि

थो न सहृ लिं ग. ज्ञा म्र खी निं हृ नां । थ क नू या य ना ह्ला न. ता कि ह्ला सि था कि
या. मं ग ला ञ ञ्चि न र्खा. यू न ३ तं प ना ग ड्र व ल्ह गु ला. को न नू या ग्र हृ र्नाे व भ कि
हृ ता गि य स. ता सृ ना श्री पि नू या. लि वा थ्व प नां म व्र वा म त्र श्री रा म ना ३ त्र चि
को वि न्ह नू या व थ्र मा ई व ल्हा. हृ पि ल्हों गि वा ला । नू उ म को ॐ को न त्र को नः
ला का न म का न र्त सा श्री स. ग ल मा य द श्री भ. ग ल नू या ल नू या. व स ग म का न
व स्प यि नी. आ पि न को न नां हृ वा. या नि ल नू या व श्री क ० त वा यि नि. नू ३ मा

तागथानन्द गङ्कि ॥ हूसू ॰ त्रिमतिमनि सार्थिनी॥ ङावसूपिलिथिसालिवा
ह्मनहूताहुनाख्याख्वर ॰ंासगोङ्किव सायालि का॥ नूयसालाखिंगाखं कूदग
लोसनसंस्यागिनि वात ना का मू गा खि दूत या नि स्यँ व द हू य पा॥ यव सन्याः
कय ना नव नि र्ज्ञा न सो स्याप्र द रे न विसे व वा ज्ञा न क्रि अ नू गङ्कि य नाम
तिनि नूउ माना र्थ्रि न नूउ गङ्कि ॥ खगिद्धि या ता ग्व विसिद्धि माना खि हूग
हूनाशिपि या न्या न्हूव वा खिनुङाजि वासिद्धि वा ता ग्व नी॥ माथकाशि द्धिमि

ध्याज्ञिया. मञ्जु नाहिद्धिलक्षीविरूगिविरूजिगणि॥सासुमायनास्यागिनाः
नायनीनक्षत्रज्ञक्षनालक्षना. हिमतूयामहाचूक्वायागथियालजयेला
जिगानूद्रअक्षितेमाहृनि. त्वेनयात्मानन्दद्वलाखात्तअयानाल्लपामकुमा
मार्ग्गानूगेमरिहरि॥विनयानानूनक्ष॥सरुके थ्वसेपूजमदवीयवामसे॥
हिंयायानात्लवेमरुकेकानकाथ्यावेनि. एकजन्महिजन्मेगिजमवउ॥य
कुवस्त्यजन्मा ईवेन थ्वनाथे॥रुलः वलर्यमनयसीसाप्रिय. मञ्जुविसाव

नाहाथिरिं। मूलुश्रीकाल काया जिरिं दिवाव थ्यानू नूयेनमस्नानउँकालस्वाह
॥ अकानश्री षढ्वषढ्काव स्ढ्का नजा पिरिं भरि थ मन्त्रा क चा ज्ञा विरिंश्री
मरु का ह्रिं न श्रा क मू पा व लि ना पिरिं १ साध के १ प्र ज के। मोलि ह्रिं न स्त्र ली बिलि
जे या गिरिं र्था गिनी व न्ह म ना य के दि वा क्रि जल ली य ग्ने स या गि नी नोंरु गी
ह्लि यु द। दवि लिं य म य ग्रा य मे ला व्र ने स्ह रु य ऊँ ह्रु ते य श्ल मू। गद या कु नि कः
ह्रि गा। स य क या गा ल री क्व व ना हि ह्रि न थ्या रु पा व ल न रु क्रि न या ० ह्व द व गः

ककालद्धिकार्णत्रिकार्णवरुः।पञ्जसूक्ष्मकवाक्षौशुविमलनखासवाम
नवः।लोयिश्रीनाह्निगङ्गर्जुवः।यर्द्धवनायपिसनकास।दवीपूजानूनागम
अतागालक्रीत्रुयकसथोनान्यदानानूगकस्वत्रुकृप्रगप्रामसादवाद
य्याविसच्चेपि।नपिसेस्सखदविलद्धियसूमपूर्जुवस्त्रानूकानीरृनद्विव
मालिवडलेजुलावुवृगनवृलेयपिवज्ञाहभवध्वनेनागयालेः।उत्त
वद्धवावायुविसूपिभनामसेकिलनादवीसूत्रनियानेमेलावाथियिरिः।

ते स्म लक्ष्मा सा नविं इ हृद य न.म स्ता कालि का स्ताग्नि मज व्रह्म लि म्लग्न विद्रव

मे ह्व व्रह्मा के प्या यू श्वा ३ मो नि मा ना ली स्त ल्य क्षा कि ज ल्ल स्ता वि ज नै ३ स्त र्ष वा

ना म्भि क ह्ये वि ह्य न व्र लि स न ध्या ग मा ह क्ष मे ल्ल य ना र्थं क्ष त्र ल्ला य ना र्थं गि व॥

एव ह्व मा मंद वि.ह्ये वि वै न म स्ता म ना.ग क्ष लि ऋ वि नि र्ह क्षु.नि र्ग्र मा य नु मः

मनी॥ ॐ ह्रूं द क्षा का लि क श्री पा दु या मि॥ ॥ थ न त्रा न व्र नि क्ष वि धा॥ ऐं ॐ

श्रीं क्रीं श्रीं यैं नं लं वं अं मं लं हं कं लां हं क्रीं स ३ ल्लू स्म क ल्य या क्ष स्त र्वं ह्रि या लि वा म

ता २

मानयनश्रोचलक्षक्षजिक्षाघ्रालघ्रालायलॐ स्रागत्यसूस्वविर्नपिठुक्षः
स्वाहा॥ ॥ग्रायेनम॥जूरमनिर्यनम॥जूर्ध्वनम॥वन्दनेनम॥सिंहवेनम॥पू
र्वेनम॥धनूथानिमूर्द्धंगेयर्७॥ ॥ॐ नमयूलाह्लायपाइर्मा॥ॐ ह्रौं श्रीं क्लीं वू
लयूत्रवरकक्षयपाइक्लौं॥ॐ जक्षंश्रीयूसवहकनाक्षकयिलजमालनतूव
त्रिनर्वक्षालामूररजुत्रलनश्वद्यक्लिरुगवनमवुलमक्ष्यकयवायथनीनीव
लिपरक्रःरश्रीविनार्थनन्दस्वलामहूँहूँफुट्स्वाहा॥ । ॥ॐ जनवाह्लायपाइर्मा

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं ज्वालायायै स्वा ॥ ॐ हुं क्ष व ह्मा ना वि य न य स क्ष ना य स्तु
व न व २ म स्तु न म क्ष सू व म न २ व सू ल ज ति म ल का श क्ष म क्र स्ट ट क वि श ल
या न थ म ला का या ला रु न ना य वि सू ला गि म म सु स्ता उ क्षा दि रु ग व न स्त्रि न
व नू य न. य श्च य नि गीं ग. क्र २ म म वि घ्रीं घ द ना य क्रां क्रीं क्रूं स्ट्र स्वा हा ॥ ।
ॐ शि ख खा य यायै स्वा ॥ ॐ यों जा गि नी भ्या यायै स्वा ॥ ॐ श क वि ७ या गि ना र
वै या ७ जा क्र प जा. श्या ग जा. ग र्हुँ जा. क्रू ल जा. स श्या ह स्वा. य क वि ७ या गि ना नी श

बनी. रबनी. गंधबनी. अक्षकनी. यक्षनी. यक्षनी वज्रय क्षुयदू सपक्ष रूक्षेब

कनी सं. प्रि ह ह्लमलिना. य आब्रुत्र मनी ॐ दबलि गृह्ण स म स सिद्धि कुरु

हूं हूं हूं फट् स्वाहा ॥२॥ ॥ ॐ ग श्र मा ह्लाय पा इ का ॥ ॐ ग ग्लौं ग्लूं श्री सिद्धि

बा मू ल श्री बलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ मू ला ह्लाय नम ॥ ग्लौं गौं ग्लूं गौ गू ग

सो श्री क्रू हा ग ल अ बा य ह ज ब ह स ब्या ह दि ना य ग्लूं बलि गृह्ण २ स्वाहा

॥ गनमक्रनमस्मनकास्वलि ॥ ॥ मू बा हृ ना दि. दज नई ना. या नि बि दू ग.

नमूस्वाद्वर्जयः० ॥ अथ दर्शनं मेदयज्ञाजाय ॥ श्रीं क्लीं लाहा १० ॥ ह्रौं सा सा १० ॥ ह्रौं सास
१० ॥ क्लूँ सा सा १० ॥ ह्यौं सा सा १० ॥ जाप ॥ ॐ ग गौ र्यां पूजकमार्वे । गगनगपलिक
उर्य याणिनीं व । वायू अवनुनयाति नद्र यापि स्वमू स्वों वि । प्रसानि गलानी
पूज्या ज्याधूयदियापि यमपूवलितिरि ह व स्त्रगारूपिनागि । वक्रमतपूसितानाना
विनि हत्य दूमि नं तुक्रि मू कि द सह ॥ यः स्त लाक याला र्वनविध्य मला
यनीयूर्द्ध मनुः ॥ ॥ जपगन्धादि ॥ नूमियः वलि ॥ वलि स्वयानमणि दय

गुनवलिविय॥ ॐ आं ह्रीं हूं फ्रः यानायवलिं गृह्न २ स्वाहा॥ दधूप॥ ॐ आं
ह्रीं ह्रूं नपूरवह्रूफ्रा भयाबलिं गृह्न २ स्वाहा॥ दवप॥ ॐ आं ह्रीं हूं नमोलखना
यबलिं गृह्न २ स्वाहा॥ खवप॥ नर्द्धनयाय॥ श्रीगणेश नातनह्रा. हूयलयवल
लो हिनवी मन्त्र न. ला. वसीवलुं मतनह्रा. ह्लिलिलिह्र. लि. नाकयानह्रलिडा
नवायं हृलिथ. यिलहगंन सगलं नानेनाकेपयाना. यथिन्यां संगयवाह
जलयनखव[illegible] यानमगलत्यीवह. यिवरु दवनासर्द्धे नवाखेवगलोमि

ये २ ध्या गि नि क्ष व यो ना . स्व म म द्ध दु य व ल्यो ना ३ ॥ य न ला व न या य ॥ मू म न

या घा य ॥ ना ष्कू ला दि रु कर्णी ॥ न र्य न ॥ भू ष्ठा वि अ न्तू न्म मा धं न्य . म ला वि अ ष्ट्रि

र्भ के ॥ वि न व कृ ष्ठि म नि ष्ठ . म ध्या स्तु के न मा स्तु द्द ॥ न म ष्क व ऊ म ख्य र्द . न म

ष्ठा न ध्य य क ॥ न म ष्क रु न व वू या य . न म ष्क रु व मा त्रे के ॥ जू ष्ठा स्व क शा लि नि

नी . व दू का ना न थे व व ॥ रु न वा ना भि र्द व्ज . म का का ने न मा मा र्द ॥

प न ला ध न वी य थ न दा ढ . पू न्म जा व थ न . ना ति य न्या स म्रा य ॥

द्विनानी॥ वेस्रू वी ब्रलिनूयाच ब्रलिउर्स्वै नमारूग॥ ॥षाम यस्कग॥ मस्रू
कॅनिवघ॥ ध्वावद्द ब्रूक्रुनालाख्य मानॅसानिगरुाविाते॥ वलिग्रन्द्रामरूावदवी.
यनुग कॅ सम रूकै॥ ॥नभायजनीनृषिनै मायमरव्र्च वसैरुलीप॥मधूरिग्व
नृधीच नृषि याख्यबि भ्रनग॥ र्जैं र्द्वौ. क्रौजिकानृभिनन्नयाचिर्गी॥ स्वानतिवा
क्याद कैः जिनश्चसल्पुदाच र्कैं॥ ॥मगविच॥ जून्कॅरूजा वदिस्यजा. वकि
रूवाजगजरा॰ वेताक्वाविजयादावि.क्रूलदीयंतिवदर्न॥ ॥नगजाविन

वज्रभैरवध्या ॥ ॐग्र र्व. दिव्यास्त्रकायेनमः ॥ नेत्रत्रय. पायचाक्रस्त्रीः ॥ वायव्य
पूवनायेरः ॥ ॐ अन्याकालिकायेरः ॥ ॥ नमः स्तूयाः ७ ॥ ॥ पूर्वा ति नाप
वचिवा ॥ धूप. दीप. नैवेद्य ॥ ॥ नकृवन्तू प्रासा ॥ समयगञ्छ ह्लुत्वा. व धारसीव
हनः ॥ ॐ निवगुयागसंभव ७ ॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ नमाक्रीमानापूजनी ॥ मध्यादि
हस्याना ॥ ॐ जांजीं सः जूं मसामार्तं गुरुनवाय. जीयकासगञ्छिसहितायः ॐ
मीजुर्वायस्वाहा ॥ ॥ ॐ जांजीं सः मसामार्तं गुरुनवायनमः ॥ जीयकासगञ्छि

नमः॥ ॐ ऐं नादि लादि नवग्रहस्वा नमः॥ जाप॥ ॐ ह्रीं छ्रिं श्रौं छ्रिं स्वाहा॥ १० ।
त्राप॥ नृसिंह सर्वकार्यार्थे॰ कूल मार्ले नुह्न वं। नोमिय्वकामङकि थुः॰ ढुकि
मृकिहलग्रदं॥ ॥ अखनुमनुलाकानाविघुवनमस्कार्वकावथउ॥ ।
मारुकन्यासं॥ ॥ नपाकर्वगन्यास॥ क्रं १ जूस्त्रावरुढ ५ ॥ कवसाधनं॥ ॐ जं
गुह्यास्थौं नमः॥ ॐ गऊनीयां नमः॥ कूं न ध्यमात्यां २॥ क्रें नूनाभिकास्थौ २॥ क्रौं
कनिह्यास्थौं २॥ क्रः १ कनमलयुह्यास्थौं २॥ –वर्वहदवाधि॥ ॥ जलवारपउनी॥

ॐ ग जलपात्रसनाययाइ की ॥ ऐं ज क्ष्मौं जलपात्रस्थापिकायपाइ की ॥ स्थ
स्थानपूजा ॥ नाबाकूनादि ॥ धनमू क्ष्मौं जा ॥ गणप्रीनक्षाय ॥ ग कूल कामानः
विस्धह. मन्त्रु का ख्स्यधीमाहि. नन्न४ क्ष्मौं कालिनीपुबांदरास ॥ ॐ पिसनव
वपूजा ॥ ॥ गणाअर्घपात्रपूजनं ॥ ऐं ज अर्घपात्रास्नाययाइ की ॥ ऐं ग ओं ध
स्फ्रूनरक्षानरगनुरयवगरकदरदमरख्यानमरविख्यानयुरविश्रिरक्षौंः
रुटूकों श्रीमहाकीमानीविश्वयाइ की ॥ ऐं ग सं इजानबअकिरअखानख्रा

मा दा वि द्या ना ऊँ क्ष गी ह्रूँ जर्य या त्र ह ह्ल ल का य या ह का ॥ ब ठ ज न स द ख ॥ जा
वा रु ना दि या नि मू जा ड ह्रूँ र्गे यं नू ॥ ॥ रु न रु द्धि ॥ जा ल य स ना ॥ ॥ जा वा द
ना ॥ या सा य न य ना रु क्षा ॥ ख ग ह्म ख ख नू पि नी ः य नि वा न स मा य कू मा या नु
ॐ रु म गु सा ॥ ॥ न ना य कू व लि द या ना ॥ ॐ ग म य ना स्वा य या ह का ॥ क्ष्मां द वि य
ज व रु क ना था य व लि ग क्र र स्वा हा ॥ न ना स्वा य या ह का ॥ क्ष्मां यां का ह्रूँ कू ः क य
या ना य व लि ग क्र र स्वा हा ॥ मि ला स ना य या ह का ॥ ह्रूँ यं ह्रूँ या या गिं ना स्वा व

तिगढ्नरस्वाहा॥ प्रनास्नाययाइको॥ भ्रूँ क्रूँ श्री सिद्धिराम लुं ध्वना वलि ढ्नाग
रस्वाहा॥ मूअस्नाययाइको॥ ग्मुँ गं गां ब्लूँ गूँ ग गो श्री कल ग ल ध्वनाय व
तिगढ्नरस्वाहा॥ जावादु भ्रूँ नादि द लु ग ऊँ ति यानी विदु गजम डा ड्ड गे
यगु॥ ॥ ॐ गमयूनास्नाययाइको॥ बदूकनाथयमयूलास्नाययाइको॥ का
मानीमयूलास्नाययाइको॥ दिमास्नाययाइको॥ बुमास्नाययाइको॥ मयूलास्ना
ययाइको॥ गवूऊस्नाययाइको॥ मदिमास्नाययाइको॥ गजास्नाययाइको॥ प्र

नाथाय पादुकां ॥ श्रीकनाथाय पादुकां ॥ कुजननाथाय पादुकां ॥ महाकाल. रनाथा

य पादुकां ॥ वामजु ॐ: घुनाथाय पादुकां ॥ ॥ गणपूजनं ॥ ॐ गं वं ह्रां सर्वविघ्नानाय हृ

दयाय नमः ॥ स्रूं ह्रीं क्ष्रूं स्रूं गणाऔमान निद्धिकाजिन मस्वाहा ॥ ॐ ह्रूं स्रूं वद वद

निक्षुनादि वाक्षलिजि षाय वषट् ॥ सं हूं वज्रानि वज्रधनाय हूं मम कवचा

य हुं ॥ ॐ ह्रूं ना वा नि ल जूलूक अक्षिः श्रीं द्रूं माहाया स्रू य नास्त्राय सहु अस्त्राय

फ्रें फ्रें फ्रें ॥ न्यास ऊलि ॥ ॐ ग कुलकौमालिकाय द्रें हें सं हे क्ष्रूं द्रं कुलवा विन्न

नत्रुगत्र वक्रद्रा ॥

नी १ ख्यँ स्वाँ सिद्धि हरिक उँ ञाँ श्री कूँ ल्ह्यँ स्वँ ने को मालि द वो वि ख्व रु या ऊ वि पुः
वा या इ की ॥ ध्यान ॥ उँ ग ॐ व न्धु का नु न सै का लीं. ठ दि क्को गि स म ग्र ला ॥ खे नु यो वि
नि सा द वी. ॐ व त्य ह सि गा त न ॥ वा न नु या मा हा मा य. को मा नी वि ध्व नु यो नि ॥
ह था ध्व रु उ ज का थे. म्यँ अर्ते ती स कि हु उ के ॥ व प ना ग. स ति स क्का. ना ना लें कु
न उ थि गा ॥ सि रि ला ज स मा नु ध्य. वि ष्णु क सा का न के ॥ सो सा य स च्या द ल क्ष्मी.
मा रा वृ उ द जो श्री यँ ॥ स र्व कर्म ध्व नी द वी. त्व र्व चा भि स ह ध्व ना ॥ आ ग ध्व सः

ह्निनावक॰ नेलाकुअ॰ ह्निकानीला॥ ध्यायानेमिसर्द्ददवी॰ कामानाज्ञुरुमेग
ना॥ ध्यानक॰ [illegible] नमठ॥ विन्दुमजाद्व॰ अयह्न॥ ह्मूं ह्मीं ह्मूं नधिमालुकानाय
॰ श्रीं क्रीं वटु॰ कनाथाय वलिगृह्न॰ २ स्वाहा॥ धुजवनवलिम॥ ॐ॰ गांगींगूं गय
यालाय॰ मांमींमूं माहाकालाय॰ गांगींगूं गनपति वलिगृह्न॰ २ स्वाहा॥ धुरुव
ह्नदुववलि॥ ॥ॐ॰ ह्नूं ह्नूं ह्नूं वामन्भैरवाय॰ कांकीं कन्य यालाय वलिगृह्न॰ २ स्वाहा॥
धुरुवनवाग्यद्धठ्ठवलिम॥ ॥हुजाठ्ठावलि विय॥ ॐ क्रां क्रीं क्रूं जूं जूं॰ जुमि

ठाङ्ग रुद्र वाय श्रीं ब्रह्मायणी अक्षिमर्दिनाय बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रां
ह्रीं ह्रूं ४ ०ं ०ं ० ऋं ध्रू चक्र रुद्र वाय श्रीं माहेश्वरी अक्षिमर्दिनाय ४ बलिं गृह्न
स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं उं ३ वज्र रुद्र वाय श्रीं कौमारी अक्षिमर्दिनाय ब
लिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं गं गं क्ष धर्म रुद्र वाय श्रीं वैष्णवी अक्षिमः
र्दिनाय बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ० ० ३ मन रुद्र वाय श्रीं वाराहीः
र्दि अक्षिमर्दिनाय बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं एकपाद रुद्र वायः

ग्लौं ह्रः त्राय नी अक्षि मर्दि नाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ ऐं हिमवन्ते
ग्लौं नवाय ग्लौं वाम खु अक्षि मर्दि नाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं खूं खूं अ
सौ नैरुत ग्लौं वाय ग्लौं माहालक्ष्मी अक्षि मर्दि नाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥
नागमूलबलि ॥ ॐ ग ग्लौं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ ॐ वरुण नवाय जू घा ग ह्रीं क्ष घा न ह्रीं
घा न घा न न न ह्रूं ह्रूं म ब्लुं हूं म ब्लुं हूं ह्रूं हैं स ह्रीं नूड नूप ह्रूं क्ष जू घा न ज माः
घा ब न द्व वि म न श्री क्षो मा नी वि श्व या इ कौ ॥ ॐ ह्रूं गि नि र रु नि र व लि र म न र

ॐ श्री श्री श्री श्री वज्रुमाहाहेन वाय श्री श्री श्री कौमारी भक्ति महादिगाणेश्वयद व
लिंगध्वा२स्वाहा॥ ॥सात्विक बलि॥ ॥याक्षिक बलि॥ ॥प्रतिष्ठा॥ ॥धुवदीप
नैवेद्य॰ फलया॥ जाय॥ धौं कौं स्वाहा २१॥ थ्वों स्वाहा १०॥ ग्राय॥ ॐ नमः श्री वज्रकाये॥
कोनि वानस्पवव॰ कालकरगगायनी थ्वे ॥ जाध्यायिथिस्मि नानल॰ वेगव॰ के:
निवासिनी॥ माहामयूनमान॰ झ॰ मटव क्रावज्रुनविनी॥ जवाकूस॰ मसेका
गसिंध्यूलान॰ नविग्रह॥ वज्रकुजाय नाद वा॰ लकाकाविन्दुमडया॥ नकमीसा

प्रियादेवी. अणिमुख्या गन्. विनिबद्ध र्म्मं वाक्यसहः कः. श्वउत्म घ्नेन वाथ्वनी । मा
यालक्ष्मी समायूकः. क्षोमा नामयाइ कीं ॥ आह्वा कयश्च्युलवीं. मन्त्रसिद्धि ददाय
कैं ॥ भैलाक्ष्मयू जिनादेवी. सर्व्वकर्म्मकलिश्रुसा ॥ हंसियू र्व्वाधिकात्रिव. दक्षिण
श्वनी ॥ यथिमकृष्मिका कात्र. खमास्वा नाश्चउर्ले न ॥ कामास्वाउर्द्ध्वका श्ववी.स
दक्व वज्रयोगिनी ॥ एनास्थयूजनि देवी. यत्रम्नायायूनार्श्विग ॥ यहृयाहृगु कर्म्म
वि. लाक्षियूलिकनानिव ॥ माहनेहृकूलंख्व. सिद्धिवामनखठनी ॥ अग्र नाल
नीनिवलः धगडिः दक्षिणोः क्षायवाक्या: ॥ ॥ ङ्कमधिकमिदकर्म्म यादिक्षि द्रमक्षिद्रकें ॥
कृतस पूर्द्द नीः सर्द्दि दक्षिणाचिपुरोसकयनी ३॥ ॥

जया वृद्धि, लक्ष्मी सिद्धि प्रदायक॥ पूजा काय यथविधिं, सर्व्व कामार्थ लाय दयाव
॥ ॥ अथ गन्धादि॥ ॐ कौमारी पूजा विधि॥ ॥ यन्त्र कमल ध्वाअज
यायक, मून याक, वाअ याकः कौमा, नी याक द ओज य थून सा, थकानान
किनिसा॥ कथनं सध्यं विय वजं नंकाय॥ धूपिध्यून ब्वयान क्षकायवि
यविकिदं ख्वान॥ कौमानी सथ्यन याव॥ म्हयं मासि ध्याय॥ कौमानी रहूल
ओक्षाय च्वन काओ॥ दुन याय॥ यीओन पूजा याम ओन॥ इओ म्यव दग्र:

कौमारि विधि जन ^ नाम सुंवनी ... न ... ना च विन्द्र

स॰मानकायकाका॥ ॥सिद्धार्थ दिपावनंच सगुर्ण संपूर्ण चन्द्रा जम जामाप कुनि मोघना

पियाऊलि॥लसनहायदवक.विगलिथनें.सगां.मासानी.खनखाय॥
नेयग्घाय॥त्रिर्थख्वाय॥ ॥ध्यानकोकोया॥कलेसेयालसनहाय॥
पिनमिंध.तग्वन.ध्यानविय॥ ॥थुनिक्षुनदाओ॥कूरूजायातंव
नेनंलखाथि॥थनवनूजाय॥ ॥थनदवनथोनू॥थनलखजाय॥नर्थ
मयाथ॥सूखाविंगनूकमाक्षन.सूखाविजनिकेर्मवं वीनवक्रकि
कि.नंनिल.नयायूंकेनमामाकं॥ ॥नमस्तेवक्रमध्यक.नमस्कार
जानकनि बोक्तार्थललिकुमप्रदा॥ति घो पू॰ चिरकानेटहविजयनेवस्यासदावकि
कुं.अर्थपाटकलेदयनकलवजगाननदेवि कुसदापाउ व ३॥ ॥ई ॥ ॥

मौनि क्राय वा करं॥ ॥त्रै लो क्य मा हि नि यै· त्रि पू कूले द ह नी· ध्री ष्मि नी ज्ञा कि नी नीः
न धाराकं॥ नमस्कृहेनवबनूयारा,नमस्कृरुवनानकं॥ नूस्तास्तकंयाः
गिनीज्ञो,वदूकानान्ते,थेवबाहेनवानामिदंवकृ,मकाकानंनामा
माहं॥ ॥त्रैजसूविनागंरुवदकं,सूजनामननमवव॥मस्तावलंव
कूदकं,,नाउग्रीनकचूत्रकं॥अकूनाञ्जमयकुमवछि,लक्ष्मीसत्कानिकर्ड
नंामस्वाचूष्टिर्कचकुस्या,तायूः श्रीकान्तिवर्द्धनावत्तायनायंसर्वेस्य,दवदवी
मूनिस्मिनायनामृननसद्धिवांपीयनारुवरुमउं॥मनाउकुलयागि
नकोःसूनाःविद्वाचाोदृचिनरुपुरुःनीसर्वमकुःध्यकोनी॥सादवीमाहिनीसैःत्रिप0ः
गविवनाःसर्वसीपकौदाताःसौस्राग्वी दिवमजीअ हिमन रुलदाःसर्वमपाक्लिदयूः॥

माहर्द्धी कामनं दक्षिं मजां नं मकू सा हृदी।। कक्रां लंद कू दो रा यी मा ह नं द क्षि दा य क ४।।
नन कायी अं नि च।।

न्या नन्द नु कूल यूं र्का नं नन्द नु जों कूला चाय्यां शचा न्या कूल दी ष्चि लः।। द
ष्चिनः सू खि न स नु सू खा सी नं नु द कु व ना।। यसाद कु न व दा स्यामि त्तल
लजो ठ क्ष न लं।। ।।ॐ ग म त्ता मां सं म का मा सं श कू वां ज ल कं व नू।। व
श्रु का नू त नूं दि वां उ थ क सू यं जं ख कु गु सी सर्व स्व म लु कां।। ल गु न्या दि
स मा या कू ख यु सा ... थ अ थ नः।। अ थ नं भ त मा कू त्वा ज थ नं ज त्म मू कः
नि।। ४।। ।।ॐ ज रा रां कि दि च्या कू न पा द य क जं तु सं न ना मा मि न यू कः
३ कु कि पू कं न मा नु गं

दारंकं॥ अनन्तसिद्धानकमनिप्युदुधकं। नमामि वाक्षाणकआगीनीगन।
आगिनीवज्रकर्मधक्क। मायमन्तुलववथिनं॥ नमामि जिनसानाथं। हेव
वंह नवाचिप। मायदाद्रुलिमानागम। तमस्यावानन्नभयना। सर्वानिम
विआहंतु। दिव्यवज्रसमनत्वां। संपूजिकानांयणियालिकानां॥ जिनेन्दुसाना
:मनमाक्कदारकं। दसभ्रदानस्या। यूनरुजिवाह्ला। केनाउसां। हगवांकु
जसा। आसामाह्लायुहावनज्वथनादुनंभारां। नमस्कास्यासमस्कास्यावा।

गिनी ग्या निवं नयां। नं न्हंउ साधका, कूल निनि मा जिसंथ्व, सा याय थं सें नि:
समय, दिथिजा गितिना॥ अ साद्व, सर्‌ल निंकाय समाय थीवे॥ उ स्य:
गुनू चन नय कं भदवं। नन्हंउ साधका जिड्डा, नर्न्दउ कूल जा गिनी, नम्ह
उ साधका वाउ, उ वानव कूनदि ह्नना। दह्नि नसू ह्निनउ, गुखासंउद
द्दिनवाव्र सादंउ सदानाल, वननं जिवड्डालसं॥ ॥ ॥ ॥ थ्वन:
कलंकयूजनं॥ नास्मिय॥ न्यासा॥ तंउ कां ह्नसोदे दि ७उ ॐ न्यास॥ उसयाव
थ्व न पाउ अ(ध्या) न्हूल पूजा· न्हूयल्हू य पूच्य काय न्याग निं पत्वस्ह्वा न

पूजा ॥ जन (१) दक्षिणः पश्चिम॰ उत्तरः ईशान्यः आग्नेय ... कां ... स्थ्य लोकि था न
सूर्यपाद्य. स्नान शुद्धि. आसनपूजा ॥ ॥आवाहनं ॥ पाद्यादि ॥ मत्तं मार्वाब्ज ॥
चन्दनादिना पूजनं ॥ आक्षन अक्षु ग्याम तनो ॥ ॐ ग यस्मा तनाय याइकां ॥ ॐ ग
थुनास नायायाइकां ॥ ॐ ज कंकलं कनाथश्च कं लं किनी सहिनायास सर्वनिर्मा
ला हृस्ष कार आगच्छ नमः ॥ ॐ ज मा ग अस नायायाइकां ॥ ध्यान ॥ ॐ अकल्प ध
मुक्तिना का न. भक्त व क्तु त्रि सावनं । व्याघ्र चर्म कटि स्थिता. क लं कायो
लक्षनकं ॥ थुनाय निस्थिन मोदं. मूल आघास्तव लः स्थिनं । वामान् स्थामसहाद

वी॰ नदु याडि ब्यनू थि ली (मान ॐ मान ख्नि ना थवी॰ नाम्हों ला ष्ठ मत्रू थि ली ॥:
नवं स ध्यान नू थं॰ ऊ लं का न्के न ना म्यदं ॥ ध्यान यू थ्यं न मः ॥ प्राया ॐ ति ॥ ॐ ग
ग्मां ह्रूं ह्रूं सिद्धि मान ॐ ध्व नायया इ कां ॥ ॐ ग म्लौं ह्रूं ह्रूं सिद्धि मान ॐ ध्व नाद
वी या इ कां ॥ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ ङ्डि या इ कां ॥ पूर्व ॥ ॐ गति
ङ्डि या इ कां ॥ दक्षिण ॥ ॐ ग वत्सला या इ कां ॥ पश्चिम ॥ ॐ गत्त
वत्सला या इ कां ॥ उत्तर ॥ ॐ नि वपुनमः ॥ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अस्त्रा

ॐ आ ना॥

नारायाइकां॥ औं ग्रंरा॥ ऐंज औंडांरोहीक्षारोयाइकां॥ अग्निय॥ ऐंग नौः

दाश्रेयाइकां॥ नैर्ऋत्य॥ ऐंग कालाश्रेयाइकां॥ वायव्य॥ ॐ निसउ जैः सैः॥

थनसूयपगपूजनं॥ ऐं ह्रीं श्रीं श्रूं क्लौंः नाउमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥

ऐंग नगमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥ ऐंग वनमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥

ऐंग ध्यानमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥ ऐंग वनुमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां

॥ऐंग वीनमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥ ऐंग उयमानक्षं ज्वनीदवीयाइकां॥

ऐं गउच्छिष्टमातङ्गी ज्येनी देवी याइकां:॥ त्रिवर्लिपूजनं॥ हृनस्थानमः॥
शुभस्थानमः॥ त्रिअथस्थानमः॥ नाकुगस्थानमः॥ ॥ द्वानपूजनं॥ शिवा
यनमः॥ अनायनमः॥ गरुडायनमः॥ उलूकायनमः॥ ॥ आवाहना
दि.संहारमुद्रा दर्शयेत्॥ धूप.दीप.नैवेद्य॥ जाप॥ ह्रूं स्वाहा॥ १० ॥ अथ॥
नमास्तु गकलंकाराकृत वायमहासमेन.कुलवणुस्वयूयाय. नित्यंनि
मोस्थमाक्लिका॥ नमःउच्छिष्टनाथाय.धूम्राञ्जनसमप्रहं॥ सर्वविय

विनामाँय, सर्व्वसिद्धिप्रदायकं ॥ अक्षतगन्धादि ॥ विंदुनयां ॥ प्रकाशनक ॥
सुम्यपर्व्वगनं ॥ सर्व्वथ्याय्थ्यांदथ्यान् ॥ वलिविसर्ज्जनं ॥ माह्लगुहेनवा:
सान्तिसंकल्प्य ७॥ मूलगुह्येउस्तुतिवं ॥ ह्रथयन् ॥ यंत्रवलिंसाह्रनउस्सय
नक्षियन् ॥ कंलकाहिश्वक: ॥ ॐ जिवलक्षीपूजा ॥ ॥ ॥ ॥

आमन्त्रिहंकृत्वा वाक्य॥ आमन्त्रीभाषियोगिन्या. सगृह
गुरुपूर्वक. प्रषद्वांकृत्वा गच्छ. सोमनस्यप्रयत्नमा॥
योगिन्यादिगनं०सर्व: स्वकुन्दल नवांनकु०॥ भूतम
रुद्रमित्यर्थं:निमकुलकनामहि:॥ ॥यारुद्यगुर्के०।

लोकः॥ सर्व्वधर्म्मपरित्यज्य. कौलधर्म्मसमाचरेत । कौल
धर्म्मप्रकाशेन नरवैतनकैउत्रमः॥ ॥अस्महर्ल्पिघूग
मपापं. कुहिलाव चहिपुगः देवमनुप्रकाशेन. नरवै
ननकैउत्रम॥ ॥अस्महलापुगमपापं: कुहिलाव चहू
पुगीः देवमनुप्रकाशेन. नरव ननकैउत्रम॥

प्रज्ञापा सर्वज्ञतानस्या । प्रज्ञाप्यावदास्तद्गता ॥ प्रज्ञा ।
भामहत्प्रमाप्राप्ति । प्रज्ञाप्यनन्तर्वृत्तंग ॥ अपनात्सव
वैसिद्धि । अपनामाण्डवद्दिनं ॥ अपनातर्हिसिद्धिस्याप्य
पनादवगात्रियः ॥ ॥ श्रीमन्नक्षिराजानहम्मद्य ॥ ॥
भाउय्यींसूहिर्णाकेश्रीदगवतीधेस्लुच्छेमानिक्रीदि

ए॥ श्रीसंहान शक्ति पूर्वनिसन हन नाथ शक्ति श्मनस्वा
ह्लासेह्ठा कन्सेसाक्षे त्रिपू नविशक्ति नसर्वे गमनर्घलक्षि
लर्दकामा शक्ति ननहदि वलनगो गुमक्ता. पादिशक्षि
ठ्गति श्मनता ॥ वपादि ॥

पनक्षावयव्ययाद.पउऊँ च्चामहत्वा॥ श्रीं ह्रीं मलिनपापदहनी॥ ऐं ह्रीं ह्रूं स्तनकुम

कुल श्रीपादि देवपाइकां॥ पूजयामि नमः॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्ष्रूं क्लीं

पाइकां पूजयामि॥ बलि॥ ॥शिवद्वयपूजनं॥ ऐं ह्रीं नन्ताक्षायै पाइ

कां॥ ऐं ह्रीं श्रां श्रीं क्ष्रूं श्री कूजयानाथपाइकां पूजयामि॥ ऐं ह्रीं मयूना

क्षायपाइकां॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्ष्रूं नपूपवरकनाथसमाइकां पूजयामि॥

बलि॥ ऐं ह्रीं नमःशक्षायपाइकां॥ ऐं ह्रीं श्रां श्रीं ह्रूं श्री कुलगणेशनाथपाइकां पूजया

५कु त्या न॥ सं. सिं नृ मे सो नं॥ ग्रन्थ

मि॥ बलि॥ आवाहनादि त्रयनाक्रम पूर्ववन्मम॥ दशु. नर्ह्ने. गत स्मृ अङ्ग न्यय

७॥ अथ गणपति देवपूजा विधि॥ ॐ॥ नमा कलश पूजनं॥ आसन अङ्ग य लोवि

आसन पूजि कालंयाइ का॥ आसन अङ्क य याइ का॥ क्षि नाडाखाय याइ का॥ क

सस्थाय याइ का॥ कण्डिका सस्थाय याइ का॥ नलास्थाय याइ का॥ वशास्थाय याइ

का॥ कन नासास्थाय याइ का॥ य भास नाय याइ का॥ ध्यान॥ शुद्ध स्फटिक संकाश

त्रिनेत्र चन्द्र मौलिकं॥ वन्दा हस्य हस्तं व मुद्रामाना धर्यैहवे॥ ७ व ध्या लाग

लादव ॐ सुकामार्थसिद्धिरा० ॥ ध्यानयुध्यानम ॥ त्रि याञ्जलि ॥ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रुं स्यैं
ञ्ज्यायसूत्रलि ध्वनमहाहेन वायसूत्र नमस्काल श्रीसुक्तिसद्धिगायउँ ह्रीं स
र्याइकौ ॥ मत्रप्रजनौ ॥ ॐ ब्रह्मालनमः ॥ विष्णुवनमः ॥ रुद्रायनमः ॥ ॐ श्वना
नम ॥ सर्वाति वायनम ॥ ऐं आहां सूत्र ॐ यायसूत्रजिध्वनायनम ॥ वकाय
नम ॥ मार्गसितायनम ॥ झादतायनम ॥ ज्ञानवनम ॥ तथैस्तायनम ॥ का
वादितयकतसूर्धवनमः ॥ ॐ आदिदवलोकयानस्यनमः ॥ सुद्धि स्यादिन

वग्रसत्वानम॥ अमृन्यादिअराविंनदिनक्रत्वस्वानमः॥ विल्कैसादिसप्ध
विअगियागस्वानमः॥ व्रणियवादिव्रुदरुपिथिस्वानमः॥ समादिब्रदसः
नाति स्वानमः॥ मृकृत्वकस्वानमः॥ गगादिसकसागवस्वानमः॥ सूचल
मादिअरुविनजिविस्वानम॥ वजिस्वादिसफआपिस्वानमः॥ अनकाः
दिअरुकुलनागनाजस्वानमः॥ ओपियनमः॥ विश्वायनमः॥ कनायन
निवर्लैनमः॥ ववीस्वानमः॥ ॐ कृतवृकमसासनर्सामहनकलसः

निर्थमनुद्दवमाकनमलायमूलमलविद्यामलबिवमलायमूँ [illegible]

श्रीर्य[illegible]कलसमूनर्ल[illegible]इको॥३ ॥वति॥जूवादनाधिख्वनूम

जाउमेयउ॥ध्रूय.दिय.मेवायू.जाय॥ऊँ ईं सैं।ला हो॥१०॥श्रूउ॥ऊँ द

वमाश्रूविनाहनवमयिवय[illegible]यनवे[illegible]रुमूर्लिस्माक्विवेनिर्थमा

येवकूलमरूनलूगयिवविबो[illegible]नमैदवकूवला.नायमलव्रववनसे.हवि

सिंन्दनदूवों.पूथ्यमेविद्यध्रूयउम्बकुनेउननिम्रिक.नानवपूउक्रूम्ह॥[illegible]गमादि

ताः दी कूं जे यो जं ॥ नुग नञँगः ॥ शि... पूजन ॥ कुम्भ... पूजन...

॥ ० ॥ पिकनसपूजा ॥ ॥ थनलग्नवपूजनं ॥ ॐ शिवाय नम ॥ ॐ अक्राय नम ॥ नमा
क्यूक्नी ॥ जूआलत्रकयपाइकी ॥ जूनकास्नायपाइकी ॥ कन्ह्रास्नायपाइकी ॥ नना:
स्नायपाइकी ॥ व्रनास्नायपाइकी ॥ कसनास्नायपाइक्वी ॥ कलिंकास्नायपाइकी ॥ वय्न
स्नायपाइकी ॥ लिंलस्नायपाइक्वी ॥ ध्यान ॥ ॐ नक्षैलाकाना, हीनिसदवी, वक्वानाग
तमसंवे ॥ सर्व्वनर्न्नविविसृजी, त्यक्षि कात्वनविग्रहा ॥ जूसादऊत्वजीदक्वा, नानाव
नेनायुग ॥ नानानर्त्तंधनादेवी, गलाकन्यानवियग ॥ खजयाजौकूंसर्व्वंकया:

श्रीशिवप्रमाणनमः श्री...

वलि मङ्क र स्वाहा ५ ताक ङ सम्माल

लीकुलित थज ॥ नथा गीवन थ्या. ख ल्मा. नवमञ्जुवनवद ॥ रुनक धन्‌ या ङनव. सब्ब

गौ ह्री कमण्डलू ॥ ङूलमूञ्ज नबेन व्यू. ग म्हर्लि वार्ले ना कव ॥ गन्दजं ववुयि म्हाक्कु.

नदिस्न पिवि सर्पि ना ॥ गुं अक्ति यान कालख्वा. याम्हनाम्हन कारु वा ॥ ध्यान पूर्व्वः

नम ॥ धि याजोलि ॥ ॐ अ ह्म्ल्व्र्यूँ क्ष्म्ल्व्र्यूँ श्रीकुत कुसय पाइ की ॥ धि दव ॥ कों कुसयान

य पाइ की ॥ वों वद्दक ना थय या इ की ॥ गंगलय पि याइ की ॥ वलि ॥ व

ल्माय नी ङक्ति मद्दि ना यज्जुलि गींगरुव वाय याइ की वलि ॥ माल्य

नी गक्कि गद्दि गायनू नूरुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ काभालि गक्कि गद्दि गाय. जन्म
रुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ वंस्प विगक्कि गद्दि गाय. काधरुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ वा
नादि गक्कि गद्दि गाय. उभलरुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ ठेड्राय्न नी गक्कि गद्दि गाय
कयानीरुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ वाञ्जेमू गक्कि गद्दि गाय. रिपजरुन वाय पाइ
कों ॥ वलि ॥ मसाल क्षी गक्कि गद्दि गाय. अंसानरुन वाय पाइ कों ॥ वलि ॥ सूक्काः
नाक्रुल ॥ वलि ॥ ठेंन स्ना ज्ञानन्द गक्कि रुन वानन्द वाक्षियनयमसाविद्याजंम्व
ना ना

यी क्ष्म्ल्व्र्यूं श्री कुलकुरुकुल्ले निकाययाइ कीं ॥ ऐं ग क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्स्ख्फ्रें श्री कुल·कुलायप्र
इ कीं ॥ ऐं ग ह्स्ख्फ्रें क्ष्म्ल्व्र्यूं श्री कुलकुरुकुल्ले नि कायजूलिमूकाय
या इकीं ॥ व लि ॥ कुलयादिवर्ष गनमयूखा ॥ आः
वाल नादिया निमूजाउर्जयप्र ॥ जा या ॥ ह्स्ख्फ्रें स्वाहा ॥ १० ॥
आग ॥ ऐं गता गात्रिं धूनव ओंजकुलमसायभावागय मश्री.व व कुं
कवशनर्दिनवकलधनंसव्रजरू ठादिदले ॥ काश्यवि दधवंगकुल्य

व सु [illegible] कामदं ॥४ ॥ [illegible]

वनधनानलहमीगस्वाहं.सिंहह्रिं विंध्यनूर्पापोहवननसिंनद्दिएद यानमह्लु ॥ सूजग

थादि ॥ कपिकृष्णपजाविधि ॥ . ॥ गणावनवृजनीं ॥ गैं १निलऊनकमनास्वायः

याइको ॥ ध्यना ॥ वद्रुकाणिमसाफर्जं.विनर्पावबवुह्वया ॥ पूर्णुयाउधूनादवी.व

नवाकवनासथ्रीकानमलानाविपवी.वथ्रअक्रिनमामुप ॥ त्रियाऊंलि ॥ सेंल

लयकामसानक्रिंदविवाइकों ॥ वलि ॥ प आगनासतनेचयाइकों ॥ हूर्यकोणिम

सानऊं.युगहक्षिविनाचनी ॥ विद्वयाउमनापूर्ण्ण.उत्याचाकानदारुया ॥ यांनाः

नाना [illegible] दाम [illegible]

[illegible]

जमामक्रिदविवाप्र अक्रिनमारुम ॥ त्रियाॐति ॥ यंमों व ला य वा ज सा प क्रिः

द वी या इ का ॥ वलि ॥ नैत्र क म न्तु वा स्ना य या इ का ॥ [illegible] ना ॥ का ला यि म म द्व सं स्वा य

विं या लि स पू र्क्ष ॥ या वि जा न व वा रु या सं र्व स्म त्र नि दा य कं ॥ त्रि या ॐ लि ॥ ॐ मं

र्वो ना म सा व क्रि द वि या इ का ॥ व लि ॥ ॐ भि त्रि व नू पू जा ॥ ॥ न मा श्री या उ पः

जर्नं ॥ जा म ना दि अ ब पू ष्ठि का स नि ॥ ॐ स व क म न्तु ना य क नि न ॐ न का म ला स्त

ना य या इ का ॥ ॐ ग जा म ल व का स ना य या इ का ॥ ॐ ग ईं स्वा धि म्ना न व क्रा स ना

[illegible]

यथाइकी ॥ श्रीमनिपूनक वज्रासनाय पाइकी ॥ ॐ नूनाकृज वज्रासम्नाय पाइ
की ॥ श्रीअमोघसिद्धि वज्रासनाय पाइकी ॥ श्रीअनूल्हा वज्रासनाय पाइकी ॥ ॐ अवे
नूत्रिमनुलाय दअधर्मकनालननमः ॥ ध्यानवज ॥ ॐ अवें हूर्य मनुलाय धाद
अकलालननमः ॥ ॐ अयूँ ह्नूँ स्रूँ म्रूँ न्रूँ यनमासून श्रीमहायायायनमः ॥ ॐ अ
याग्रपूनथर श्रीयाग्रयविनकं कनूरखाहा ॥ ॐ अंसाममनुलायबाउ
अकलालन नमः ॥ ध्यान ॥ लाक्वातसनिसदवीज वाजविम्वला

जिनां ॥ जीवनागकन्नून्याक्षि. तिनजाद यानूयि ली ॥ मध्निवानन्वगन्या. द
आद्धत्तुज[illegible]मिली ॥ खमृपि मूलवर्द्धव. दिखिममूजलंलिथा ॥ गदायसवन
दला. पासमर्धवि नाजिग ॥ रुठकाकूअघञ्जाव. खध्रींगवर्द्धकवूय ॥ निला
चनरुयविद्. वारुमवि भनिनी ॥ दिवानलकृणामायी. रुमारुननल्हू. खिमा
॥ खिणायवासनादवी. वर्द्धयवसनान्यूगं ॥ एवंनूयामसादवि. वानूलीविज्वनूयिसी
॥ कमनतिक्रोदखव. कियातिड्डिसमन्विर्ग ॥ सेसवलामसादिख्यानू. प्रायखिलं

पिंगयनी ॥ महाआजिकनीनिय, महादेवयऋदायनी ॥ ३ बलिछिमसदवी, प्राग्रपूआः
महारुल ॥ ध्यानपूर्यनमः ॥ पियअलि ॥ अघान ॥ वज ॥ बपिपि ॥ ॐ ग ह्रौं आनव
गकिरुनवानन्दविनाषियनय श्रीमहाविद्यानास्यनी ह्रां श्रीमहाया ह्रीं ऊरु
र्लतिकायया२की ॥ ॐ ग ह्रीं ह्रां वलिगजरस्वाहा ॥ ४ ह्रीं ऊंमनमः श्री ॥ आ
वाहननादि. यानिमजा ह्रीं ह्रीं उर्घय० ॥ आव ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ आव
॥ ॐ ग कार्यविद्यालिपूर्णं ह्रीं ह्रूं यतमञनमर्य ॥ ह्रीं नकेसिंहनवर्णुत्रमाम्

खड्गसंभूता। वरदनिग्रहदिनिता। शुक्लनायायवसया॥ सारस्वति ग्रहरूपा। संकल्पसूत्र

गनाम्ना॥ बयक्रिसदवीसो स्वयंदिवयज्ञा महिमनरूलदामा कुलक्ष्मायवकामा॥ स्तु

त्यगीपद्य॥ अथ शिवाय पूजाविधि॥ ॥ गणपति पूजनं॥ ॐ गं वध्यय स्वाहाय

याऽस्तु॥ ॐ गं ह्रूं स्वाहा स्वाहाय याऽस्तु॥ ॐ गं यस्वाहाय याऽस्तु॥ ध्यानं॥ ॐ गं एकदन्तवक्रतुन

ण्डव। ध्यानवर्ण वक्तुंशुंजं॥ अक्षिनी सालय लउर्द्धं। अहयवविवशुया॥ वर्द्धयसासनाभि

नी। सर्वयानिविविक्रेय॥ खड्गमूदवसिआनी। सर्वकामरूलयर्द॥ खड्गमूध्यानपूर्वं

पाइका ॥ वज्रनी ॥ ओं ग स्म गुनुरुक्ष्मी आनन्द दवयाइका ॥ ओं ग व नमगुनुजावर्या नन्द दव

याइका ॥ ओं ग यममक्षिगुनुमित्रा नन्दं वयाइका ॥ ओं ग श्रीपिनृद्धिहलर्भिपिकाः

ययाइकी ॥ वलि ॥ मूवाहनादिध्यनूमूउाउं अं वा० ॥ पिनृद्धिवृजाविय

॥ ॐ ॥ नमानवालाद्वार्धनी ॥ नवात्माव्याप्त ॥ ओं ग जनुस्त्रायरुठू ५ ॥ क

चिधनी ॥ ओं ग ह्रीं अनुगुह्याययाइकी ॥ ओं ग क्षं नरुद्र न्याययाइका ॥ ओं ग ल्वं म क्षमाययाइ

का ॥ ओं ग यं अनुनामिकाययाइका ॥ ओं ग उं कनिद्याययाइका ॥ ओं ग कनपताययाइका ॥

ॐ ग ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ग ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ग ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ ग ह्रैं कव
चाय हुं ॥ ॐ ग ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ग ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इति षडङ्गन्यासः ॥ ॥
ॐ ग आधारशक्त्यादि न्यूह पूर्विकासनाय नमः ॥ ॐ ग यज्ञासनाय नमः ॥ ॐ ग वास
नाय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ ग य आसन ज वह ऋ दन व क्रति लावनं ॥ खर्व स्थूल तनु
दिपि सर्वल कन मरनं ॥ खर्व स्थूलतनुं व क्रतु दक्षिण कर सारिखं ॥ उर्ध्व न पीन
वस्थूल इर्ध्व न कन [illegible] नं ॥ न कस्यो दक्षिण पूजा खन मूलं जम व च ॥ गद्गद्वयान

वर्णुस्थ॰ यानस्यावृर्त्वंदक्षिणं॥ नक्षमूर्त्तनपिस्याव्रुः लदर्क्षथ वमूर्लमें॥ नूस्वा॰ दखुअ
दवं॰ कवल्मसानेखुपिना॥ खमेरुठकधर्नं दवं॰ लिगूलूर्मेकूगनथा॥ नूवकामखुल
ग्रथं॰ तमनूवक्षगमवघ॥ वालं धनूसमयूकं॰ यगूघम्यसूसाहिनं॥ वक्षववग
वायानि॰ ववनारुयरुसकं॥ क्षघविरुधनादवं॰ नानानंकालमखुनं॥ सवयिनरु
ववर्णु॰ सातनसूखसहिनं॥ ७वंनूयानवास्मानं॰ मखुनगुरूमखुल॥ ध्यायषूकय
यूकाला॰ स्थियसिद्धिनिमानव॥ ध्यानयूधीयाइकायूऊसामिं॥ ज्ञानव

गक्षिरुद्रैवानन्दाधिनाथिपनथ श्रीपादुकां पूजयामि ॥ ॥ नमो ५ पूजनी ॥ ऐं ५ ह्स्रौं
मतापूजायुनूमनुलं श्रीप्रिक्ष श्री थपादुकां ॥ शिकानमः ॥ ऐं ५ ह्रूं ऐं मतापूजायुः
नूमनुन श्रीअत्याथपादुकां ॥ पूर्व ॥ ऐं ५ प्लूं ऐं मसायजायुनूमनुल श्रीपादुकां ॥
दक्षिणा ॥ ह्रूं ॐ पनमयुनूमनुल श्रीक्लनाथपादुकां ॥ उत्तर ॥ ऐं ५ ग्लूं पूं ५ युनूमनुल
श्रीजूक्लनाथपादुकां ॥ विकनाय ॥ ऐं ५ श्रीमिद्दणलवयुनूमनुल श्रीपनाथपादुकां
॥ वाक्षमणलयूर्ध ॥ ऐं ५ विद्यापलवयुनूमनुल श्रीपनाथपादुकां ॥ दक्षिणा ॥ ऐं ५ जा

लनलयुनूमनुत श्री वनाययाइक्वं ॥ उत्तर ॥ ऐं ग श्री ज्ञाह्लाहूरूमाययाइक्वं ॥
पश्चिम ॥ ऐं ग श्री जयाययाइक्वं ॥ आग्नेय ॥ ऐं ग श्री विजयाययाइक्वं ॥ नैऋत्य ॥ ऐं ग
अजिताययाइक्वं ॥ वायव्य ॥ ऐं ग श्री अपराजिताययाइक्वं ॥ ०० अननाप र्वक्रमणः
त ॥ ॥ ऐं ग श्री हृअकाययाइक्वं ॥ मध्य ॥ ऐं ग श्री वृंअकाययाइक्वं ॥ पूर्व ॥ ऐं ग श्री नैं
विशाययाइक्वं ॥ दक्षिण ॥ ऐं ग श्री लंतिर्लययाइक्वं ॥ पश्चिम ॥ ऐं ग श्री वंग्रपिप्ताः
ययाइक्वं ॥ उत्तर ॥ ॥ ऐं ग श्री कृतरूपवाययाइक्वं ॥ आग्नेय ॥ ऐं ग श्री कृतनाः

भरुनवायायाइक्ली ॥ नैऋत्य ॥ ॐ ग श्री कुलतु म्हुनु रुनवायायाइक्ली ॥ वायव्य ॥ ॐ ग श्री
कुलकयानुरुनवायायाइक्ली ॥ ४० आनी ॥ ॐ ग [illegible] जूनम्ह गक्लि रुव वानन्द विना
षियनय [illegible] याइक्ली ॥ ॐ ग [illegible] जूनम्ह ग [illegible] क्लि रुनवानन्द विनाषियन
यश्री [illegible] [illegible] विद्यानाजन्व [illegible] नी [illegible] श्री [illegible] नवामागुनूमजुलरुद्दनीक्ला
ययाइक्ली [illegible] ॥ ३ ॥ वति ॥ [illegible] जा [illegible] वा रुनादिपिजून याजिमजाउर्ज
यस ॥ ४० गिनवामायूजविखि ॥ ॥ [illegible] नगन्यासमानरु७ ॥ जूथनसंद्रवक्ष्म

पि॰ कुर्म्माव्र्वं नमस्माव हु ३ ॥ माः यनि अर्द्धं नासि ख॰ ह्मा द ओ गम उ ग कं॰ सिवि य्या य्याउ

पि का ष्टव॰ नष्ठु भा उम स्मा व नेु ७ ॥ ॐ ग न्यास विनाद व॰ नह्रियु आ स्तन न हु ७ ॥ ॥

नगा वृथ मन्यासं कानय उ ॥ ॐ गवि निशवि श्व का ह्न ना अद्वा ८ जूस्त्रा य हुहू ५ ॥ कल

माधवी ॥ ॐ न नमा हु गव पिक्ष ल्कम लायेजं श्री जूत्र ह्मा य या इकी ॥ ॐ न क्षुं कुं ह्रि काय

कुलदि भा य ङ्गी श्रीं गर्जू न्याय य या इक्ता ॥ ॐ न क्रां ङ्गीं कूं व र्व्व व मि स्व कूं श्री मैं ष मा यका

इकी ॥ ॐ अ श्व नजूर्व नजू षा नामू सिव कू नू या येङ्गं श्री जू ना मि काय य या इकी ॥ ॐ न बी

ह्रूँ मदगानिकायै स्वाँ श्री कनिक्षायै पादुकां || ॐ गक्लिनिरविश्वकाक्षनायै ह्रः ठः तः
ननाराय-ठ पादुकां || || ॐ ग नमो रुगवपिहक्षम नायै स्वाँ श्री उद्धवक्षाय पादुकां
|| ॐ ग ह्रूँ कुक्षिकायै कुलद्विपायै श्रौँ स्वाँ श्रीयूर्वव क्षाय पादुकां || ॐ ग स्वाँ स्वाँ ह्रूँ वर्व
नमिसह्रूँ दक्षिनवक्षायै पादुकां || ॐ ग पा ग नूधा ग नूधा नामूलिवक्ष न यायै स्वाँ ग ह्रूँ
श्री यक्षि मव क्षाय पादुकां || ॐ ग क्लि निरविश्वकाक्षनायै ह्रू श्री ह्रीँ नायववक्षायैः क्षि ग
पादुकां || || ॐ ग नमो रुगावपिहक्षम नायै स्वाँ श्री ह्रदयाय पादुकां || ॐ ग ह्रूँ ह्रूः

स्वागुका
ये

त्रिकायेकृतदियाथेऽं श्रीजिनसम्भासा ॥ ॐग सँ ऊँ हूँ वज्रनमिथायेमिथायाव
थठ ॥ ॐग धानजूधानजूधानामूखिवकूनूयाये श्रीकवचायहूँ ॥ ॐग ह्रौं
ह्रूँ मदकानाकाये सौं श्री नरूजयाय वामट् ॥ किनिरविश्वकाक्ष नायक्षः ४ सूमाः
यरूठ ॥ प्रथमन्यासमुद्रंगं॰ति ॥ ॥ नमान्यासनादिन्यासकानयरा ॥ ॐग साँ ह्रैं
हूँ हैं सौं हं । वज्रमणुलवज्रनीनूमायमसयावगगनविशुद्धसाधयरहूँ रूठ
क्लौं वजासनहूँ याइक्लौ ॥ वज्र ॥ मनामन ॥ ॥ ॐ ह्रैं श्रीं हूँ क्लौं क्लौं मार्हणुतलावे

नमजाम्बिनाकुं रुठ् क्षौं पादुकां ॥ सूर्यार्घं ॥ नमो भगवते श्री ऐं सवरुहा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ठ जू
म्भाय रुठ् ४ ॥ कलशार्घ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं नूगु क्षाय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं गं न्याय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं
क्रूं समघमाय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं जूनामि काय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं कनिक्षाय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं
क्रः कनगताय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ऐं ह्रीं क्रूं शिखाय
वषट् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं कवचाय हूं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ऐं ह्रीं क्रः अस्त्राय फट् ॥ ॐ गि
मठ ॐ ज्वाल सर्वघातकाय ॐ दंवतिग्रक्रूर स्वाहा ॥ ॥ गणपति न्यास ॥ ऐं ह्रीं श्रीं
सरं नं

त्रिकाकि लप्याइ स्वा॥ वसंवानम॥ ॐ गमांसिआंर्द्धयाइ स्वा॥ वतयातक्ष्वन॥ ॐ गहुंन
नानयाइ स्वा॥ कयालम॥ ॐ गगंदक्षिनमत्रयाइ स्वा॥ जवमिखा॥ ॐ गवंवामनत्रया
इ स्वा॥ खवमिखा॥ ॐ गपिंनासिकाग्रयाइ स्वा॥ क्षमक्ष॥ ॐ गक्षुंमुखयाइ स्वा॥ क्षुथु॥ ॐ
गकुंदक्षिनकर्णयाइ स्वा॥ जवक्षाम॥ ॐ गखिंवामकर्णयाइ स्वा॥ खवक्षाम॥ ॐ गकांइ
विवूकयाइ स्वा॥ मन॥ ॐ गयेंकण्ठयाइ स्वा॥ कण्ठ॥ ॐ गडांहृदियाइ स्वा॥ नूयुन॥ ॐ
गडौंदक्षिनजानुमयाइ स्वा॥ जवइर॥ ॐ गडूंवामजानुमयाइ स्वा॥ खवइर॥ ॐ गधांद

क्षिलकर्ण्णनि याइकी॥ जवयाका॥ ॐ न वं वामकर्ण्णनि याइकी॥ खवयाका॥ ॐ न थूं नासि
याइकी॥ नासि॥ ॐ न थां तिजमूलयाइकी॥ लिंग॥ ॐ न वं गुह्य याइकी॥ मल॥ ॐ न थूं ग
गुयामाइकी॥ मार्ग्गस॥ ॐ न थां दक्षिनजानयाइकी॥ जवपूठ॥ ॐ न वां वामजानयाइ
की॥ खवपूठ॥ ॐ न मूं दक्षिनयादयादयाइकी॥ जवयाठ॥ ॐ न सिं वामयादयाइकी॥
खवयाठ॥ ॐ न ख्यौं वालकूथयाइकी॥ मीलखा॥ ॐ न ख्यौं दक्षिनक्षुंथयाइकी॥ जववाल
॥ ॐ न किं वामक्षुंथयाइकी॥ खववाला॥ ॐ न लिं दक्षिनयार्त्थयाइकी॥ खवथका॥ ॐ न

विं कायाकु याइ स्वा॥ वसपाल॥ ॐ ग थं पासाक्षेत्र याइ स्वा॥ याठ मलनीक॥ ॐ जि वनि
नी न्यासरु ह्मन काय ॐ दं वलि गृह्न स्वाहा॥ ॐ॥ ॐ जि वनि नी न्यास॥ ॥ नूथग्र
न्हि न्यास॥ ॐ ग हं जूपदुग्रन्हि पाददुय याइ स्वा॥ याठ नक॥ ॐ ग ह्रां कालग्रन्हि ग्रुरुदुः
य याइ स्वा॥ गुठिनिक॥ ॐ ग ह्रिं नूदुग्रन्हि जसदुय याइ स्वा॥ घठनक॥ ॐ ग ह्रौं [illegible]
न्हि ठनूदुय याइ स्वा॥ कठवक्षुठिनक॥ ॐ ग ह्रैं वामग्रन्हि लिगस्याय याइ स्वा॥ लिग
वास॥ ॐ ग ह्रूं पिलुग्रन्हि मरुह्मन याइ स्वा॥ गुठमल॥ ॐ ग ह्रैं वस्कग्रन्हि वुस्कस्याः

नयाइकां॥ व्रकाजु॥ ॐ ग हूं सूर्यग्रन्थि नासे याइकां॥ नाकिदव॥ ॐ ग हूं साम ग्रन्थि
नासे याइकां॥ नाकिम॥ ॐ ग हूं प्राण ग्रन्थि उदय याइकां॥ यनम॥ ॐ ग हूं जीव ग्रन्थि
हृदय याइकां॥ लुखुतम॥ ॐ ग हां विन्दु ग्रन्थि ह्रीं वस्म नयाइकां॥ कंपु॥ ॐ ग सों कूट
ग्रन्थि नासुमध्य याइकां॥ थकाम॥ ॐ ग हूं ॐ ज्वन ग्रन्थि जिनस्म नयाइकां॥ जिनम॥ ॐ
जरु॥ ३ म सासि व ग्रन्थि मूर्ध्नि स्मान याइकां॥ कयातम॥ ॐ शिव ग्रन्थि न्याम सुहान काय
ॐ देवलिंग क्र रस्वाहा॥ ॐ शिव ग्रन्थि न्यासं॥ ❋॥ अथ सम्याने न्यासं॥ ॐ ग नमस्तु

रुद्रयज्ञानास्त्राय फट् ॥ करतल ॥ ॐ नमो भगवते वज्राङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नमो भगवते
वज्रतर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ नमो भगवते वज्रमध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ नमः सर्वतथागत सर्व
ज्ञानानामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ नमः ह्रीं हः क्लीं कनिष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नमः समन्तबुद्धानां वज्र
ज्ञानास्त्राय फट् ॥ करन्यास ॥ ॐ नमो भगवते वज्रहृदयाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वज्रशिरसे स्वाहा ॥
॥ ॐ नमो भगवते वज्रजिह्वाय वषट् ॥ ॐ नमः सर्वतथागत सर्वज्ञ कवचाय हूं ॥ ॐ नमः
हूं हः ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ नमः समन्तबुद्धानां वज्रज्ञानास्त्राय फट् ॥ अङ्गन्यास ॥

शिखायांन्यासंरुद्रानकायॐ देवलिगह्नरखासा॥ ॐ शिखायान्यास॥

जपद्धादआकन्यास॥ ह्रूंसञायेपादद्वयायाइकां॥ याचनीकं॥ ॐ गह्रांसाद्धायेजानु

द्वयायाइकां॥ याउनिक॥ ॐ गह्रिंविश्वनाथायऊरुद्वययायाइकां॥ वसत्रविभूवि॥ ॐ गह्रीं

लं गुह्ययायाइकां॥ गर्भस॥ ॐ गह्रैं दिक्पाये नाभ्यैयाइकां॥ नाभिस॥ ॐ गह्रैं माली

न्याये हृदयाययाइकां॥ नगनस॥ ॐ गह्रैं शिवाये कण्ठयाइकां॥ कण्ठस॥ ॐ गह्रैं वासन

स्वयमूस्वयाइकां॥ कृथूस॥ ॐ गह्रौं नासाग्रमाये नासापृष्ठद्वयायाइकां॥ क्रमसंधानगं

॥ ॐ गं ह्रौं कनकाय वज्रदंष्ट्रायायुद्रकी ॥ **कवचायनेत्रं** ॥ ॐ गं ह्रं हनीकजीह्रकोवेवाइ
की ॥ **शिखा** ॥ ॐ गं ह्रः ७ मूखिजिनतियाद्रकी ॥ **शिखा** ॥ ॐ पिण्डादि अङ्गन्यास ह्रदानकाय
ॐ दंवतिग्लक्रस्वाहा ॥ **ॐ पिण्डादि अङ्गन्यास** ॥ ॐ ॥ **अथ पञ्चाङ्गन्यास** ॥ ॐ गं ह्रौं
सर्वज्ञानायहृदयाय नमः ॥ ॐ गं ह्रीं अमृतनगजाम्भालनाकृष्णिशिनमस्वाहा ॥ ॐ गं ह्रूं
ज्वलज्वलदनीजनाधिवषनाशिखायैवषट् ॥ ॐ गं ह्रैं वज्रनावज्रधरायस्रमकव
वचाय हुं ॥ ॐ गं ह्रौं गावानित्यनृनृकात्मिकासहस्रनजाविननत्त्रयायवषट् ॥ ॐ

अर्हं ॥ नमो ऽस्तु सर्वज्ञाय नमः ॐ क्लिं ॥ शिला ह्रूं महा या ञ्नुय मा स्त्रा य य म ह्रैं स्रा क्रा य यज्ञू स्त्रा य ह्रूं
फट् ॥ ॐ॰ शि व त गी न्या स रु द्दा न का य ॐ॰ दे व लि ग्र क्र र ला हा ॥ न्या शि व ठ म न्या स
न ॐ ॥ ॥ न मा मा ल ना न्या स॰ कृ न्वा ॥ न्वा ल स स्रृ ॥ ॐ ह्रीं नं ना दि न्ये जि मा य या इ क्षौ ॥ शि न
न्या स ॥ ॐ ह्रीं श्रं ग्र स न्वे र्ड जि ना मा ना या या इ क्षौ ॥ व र्सं पा न ॥ ॐ ह्रीं सं नि व स्वे पूर्वे इ
शि ना मा ना या या इ क्षौ ॥ ह व न ॥ ॐ ह्रीं जं व्र णि ह्या य द क्षि ण जि ना मा ना या या इ क्षौ ॥ उ
व न ॥ ॐ ह्रीं दे व्रि या य व र्लु न जि ना मा ना या या इ क्षौ ॥ ख व न ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आ ल्याप य या चि ः

मजिनामालायायाइ स्वा ॥ लिखन ॥ ॐ गसं वा ॐ ग्वेह जियनग याइ स्वा ॥ जिखादानम
ॐ गधं विवदेर्जन्नाग्न ह्रय याइ स्वा ॥ जिखानया ॥ ॐ गलं नानायन्नो कर्ध्व ह्नयाइ स्वा
॥ ह्नमनया ॥ ॐ गउँ माह न्यो दशिलक ॐ स्हवलं याइ स्वा ॥ उदह्नमनउ ॥ ॐ गउँ य
ह्नयवामकर्ध्व स्हवलं याइ स्वा ॥ खदह्नमनाउ ॥ ॐ ग ॐ त्यु स्कमस्को नामापूर्वः
यपाइ स्वा ॥ क्नामयानिका ॥ ॐ ग वँ वज स्व वक्रयाइ स्वा ॥ स्वालम ॥ ॐ ग कँ कदय
हस्हयायाइ स्वा ॥ मतवानका ॥ ॐ ग सं मालि मा य उद्ध्व दर्गनय मा याइ स्वा ॥ वीं ख

वा॥ ॐ ग गं जि वा ये जू र्द्ध व र्ज न य क्वो या ह् की॥ का थू वा॥ ॐ ग यं घा घा ये ऊ र्द्ध स्र या ह्
की॥ थं थ क्र थू सि॥ ॐ ग ढं वी ना ये जू र्द्ध स्र या ह् क्व॥ का थू क्र थू जि॥ ॐ ग ङ्कं मा या द घ
जि क्रा यी या ह् की॥ म वा सा॥ ॐ ग जूं वा ग्र म्व र्य जि क्रा या या ह् की॥ क्र थू स॥ ॐ ग वं जि
सि वा स्र [illegible] क ल्ठ या ह् की॥ क थू स॥ ॐ ग रुं सा व न्ये द क्षि ल वा क्र जि स्व न या ह् की॥
ज व वा स्र न॥ ॐ ग यं वा ग्र वा गा ये वा म वा क्र जि स्व न या ह् की॥ व व वा स्र न॥ ॐ ग ठं
मा या ये द क्षि ल वा क्र द ल्छ या ह् की॥ ज व वा स्र क्रा॥ ॐ ग रं जि ना य का व वा म वा क्र द

स्तु याइ क्वो॥ खड्ग वाराहिका॥ ॐ गं ठं पूर्व मायेकव नखड्ग याइ क्वो॥ जव खव्द्लाम॥ ॐ
गं टं कानि ल्ये दक्षि नहस्त कलाङ्गुली याइ क्वो॥ जव यविद॥ ॐ गं ऋं कूर्द्ध ख्ये वाम
हस्त कलाङ्गुली याइ क्वो॥ खव यविद॥ ॐ गं वं दायर्ल्ये मूल दक्षु वक्षि नहस्त याइ क्वो॥
जव वन्या॥ ॐ गं यं ज यक्षि सि मूलाग्र दक्षि नहस्त याइ क्वो॥ जव नाला०॥ ॐ गं ढं का
पालि न्ये कपाल वामहस्त याइ क्वो॥ खव लाला०॥ ॐ गं पं पाव न्ये हदि म्ख याइ क्वो॥
लं म्बजटा॥ ॐ गं दं जूम्बि का थस्या लाक्षा व याइ क्वो॥ लं कू काम॥ ॐ गं सं सर्घा लम न दक्षि

नयाऽर्व्व याइ की ॥ लीं ह्र न व म ॥ ॐ ग जूं ०० स्वा अ ख्के वाम र्व्व(या) याइ की ॥ लीं ह्र ख व म ॥ ॐ
ग हूं ख्म ग त्य द क्षि नीं क्ष न्य याइ की ॥ अ व इ इ म ॥ ॐ ग लं पू ढ ना थे वा म ह लु न्य या
इ की ॥ ख व इ इ म ॥ ॐ ग यूं ज्ञा मा त्ये य य द्ध य याइ की ॥ लूं द कु जू वि थ वी ॥ ॐ ग थं ल
म्ना द थे उ द त्र या इ की ॥ यं न म ॥ ॐ ग कं सं ला नि न्थे ना रि म ख्य याइ की ॥ ना रु म ॥ ॐ ग
मं म ला का खे नि न म्व याइ की ॥ य न म ॥ ॐ ग सं कू जू मा यू ख थे गु ख्म याइ की ॥ लि ग म
॥ ॐ न जूं गु ज्ञा न थे सु क्र याइ की ॥ बी ऊ म ॥ ॐ न नं मा ना द थे उ नू द्ध य याइ कीं ॥ क ल

जवपव॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रां नाथे दक्षिणजानो याइका॥ जवप६॥ ॐ ग ॐ क्षि याथे वामआसे

याइका॥ खवप६॥ ॐ ग ॐ गमयखे दक्षिणयेमायायाइका॥ जवखनम॥ ॐ ग ॐ साबि

खे वामजेमायायाइका॥ खवखनम॥ ॐ ग दं दह न्व दक्षिणयाद याइका॥ जवया६

म॥ ॐ न रं र क्षा निध्ये वाम याद याइका॥ खवया६म॥ ॐ ग ०००पिमालनीन्यामय

०००द ब तिग क्षर स्वाहा॥ ॥०००पिमालनीन्याम॥ ॐ ग न सं ह्रदयायनमः॥ ॐ ग

न ह्रीं शिरसस्वाहा॥ ॐ ग न हूं शिखाये वाषट्॥ ॐ ग न ॐ कवचायहूं॥ ॐ ग न ॐ नत्र

याययवथ्रू ॥ ॐ ग नरुँ जूम्हाय स्तू ॥ ग्लाँ मालनीरुह्नानकाये ॐ दंवतिग्रक्रारला

ला ॥ ॐ शिमालनीब्खअच्याम ॥ ॐ ॥ मप४अद्वनामिंख्यासमातरुनु ॥ ॐ गजूँः

श्रीकन्नतताढयाइका ॥ कयानदाभस ॥ ॐ ग जूँ जूननकमगुलवक्रयाइकी ॥ ख्वानस

ॐ ग ॐ सूश्रीसदक्षिणनग्रयाइकी ॥ जवशिस्वाम ॥ ॐ ग ॐ तिजूतवामनग्रयाइकी ॥ खवः

शिस्वाम ॥ ॐ ग ॐ जूमनीसदक्षिणनौसांपूँढँयाइकी ॥ जवक्रम ॥ ॐ ग ॐ जूधीसवामकांर्दृयाः

इकी ॥ खवक्रम ॥ ॐ ग सँ शिखिसदक्षिणनासापूढयाइकी ॥ जवक्रामधम ॥ ॐ ग सँ सानरुपि

सुवामना·गापूर्वयाइका ॥ सवक्मासधम ॥ ॐ गहं स्मान्दक्षिणगणुयाइका ॥ जववकास ॥
ॐ गउं हनवामगणुयाइका ॥ सववकास ॥ ॐ गउं ठिअजूर्ध्वदमनयक्षोयाइका ॥ कापूव
स ॥ ॐ गनैं रुणिमउर्द्धदगंनयक्षोयाइका ॥ थंपूवास ॥ ॐ गऔं हयाजामजूर्ध्वसूयाइका ॥ का
पूसास ॥ ॐ गऔं जूनुग्लहासउर्द्धलयाइका ॥ थंपूमि ॥ ॐ गजं कून्मनमाहूमक्षयाइका ॥ थंः
कास ॥ ॐ गजं ८मलासनलिक्षायीयाइका ॥ मयास ॥ ॐ गकं आधवक्षिणक्षेक्षवाइका ॥ अ
वलवकास ॥ ॐ गखं येणुदक्षिणकाकृदणुयाइका ॥ अववाकालस ॥ ॐ गगं व्रवणुदक्षि

नह्रूमनिवन्धयाइ क्री॥सवब्ल्याम॥ॐ गधांग्निव दक्षिनह्रूयाइ क्री॥जवकावनास
॥ॐ ग ढं त्रक वृद्धदक्षिनह्रूकतीगुल्येयाइ क्री॥जवजूंगुलिम॥ॐ ग वंक्रूर्भवामस्क
ध्याइ क्री॥खवलदकस॥ॐ ग ह्रूं कनववामवाकदलुयाइ क्री॥खववाकालस॥ॐ ग जं
वरमूखवामह्रूमनिर्वध्याइ क्री॥खववत्या॥ॐ ग जं जूआस वामदस्कयाइ क्री॥खव
कावतोला॥ॐ ग ॐ अर्भग्रवामह्रूकातीगुंनियाइ क्री॥खवजूंगुलाम॥ॐ ग ढं सामच्चन
दक्षिनह्रूक्ष्मयाइ क्री॥जवकलम॥ॐ ग ढं लांगुतिसदक्षिन्धवृवाढयाइ क्री॥जवपूरुस॥ः

ओं ग तं या न्हकान्ह दक्षिनजा नीया इकी ॥ जवयलस ॥ ओं ग ढं ऊर्द्ध नानी ज दक्षिनज खायीय
इकी ॥ जवखलस ॥ ओं ग नंउ माकान्ह दक्षिन यादया इकी ॥ जवयागंछस ॥ ओं ग नं जूबाषिः
सबागरुक्ष या इकी ॥ खवयाकास ॥ ओं ग थं दक्षिण सबामान्हबा छ्याइकी ॥ खवकेजलसबो
॥ ओं ग दं अयीसबामजा भोया इकी ॥ खवयाछस ॥ ओं ग धं ऊर्द्धनानी सबामज खायीया इकी
॥ खवखलस ॥ ओं ग नं मखबामया दया इकी ॥ खवयागंछस ॥ ओं ग यं लातिन दक्षिनयार्ख्वया
इकी ॥ जवयनबास ॥ ओं ग रं जिरिब्रबामयार्ग्वया इकी ॥ खवयनबास ॥ ओं ग वं कृगलउय

सर्व सत्या रक्षां ॥ त्रिकवास ॥ ॐ ग हं ध्रौं नेत्र नारिसिम क्ष्य यारक्षां ॥ नारिस ॥ ॐ ग मं मसकाल

हृदय मक्ष्य यारक्षां ॥ तिम्रतम ॥ ॐ ग यं वाली सत्व व मक्ष्य यारक्षां ॥ सनलिगम्यम ॥ ॐ ग

नं रुजं ज्ञ न क्ष यारक्षां ॥ रुलिगमूलस ॥ ॐ ग लं पि नाकि सर्मां स यारक्षां ॥ लानारिनल

स ॥ ॐ ग वं रव ज्ञ न द्ध स्नायु मक्ष्य यारक्षां ॥ समक सस ॥ ॐ ग अं अव का नन्द नूहि मक्ष्य यार

क्षां ॥ मातकाअ ॥ ॐ ग मं स गान न्द मर्ज्ज यारक्षां ॥ कक्ष्युतमूलस ॥ ॐ ग सं रुद्यु सुक्र यार

क्षां ॥ विर्ज्जलिंगवास ॥ ॐ श हं ताञ्जुती सखा ला ख न यारक्षां ॥ हृदयस ॥ ॐ न कं ४ सर्व तेजाय

यावकुषयन्ति मव्यायाइकी॥ यविनक्रम॥ ॐ ग१ॐ गिश्रह्व ताजि न्यासाय ॐ दवतिग
क्र२खासा॥ ॥ ॐ गिश्रह्व नाजि न्यास॥ ॐ गहसअउ नाहृद याय नमः॥ ॐ गहसअउ
नागित मसासा॥ ॐ गहसअउ नींगि माये वाषट्॥ ॐ गहसजउ नीकव वायहूं॥ ॐ गह
सअउ नीन स्त्र यायवषट्॥ ॐ गहसऊ नीजून्त्राय फट्॥ ॐ ग [illegible] गद्वताजिरुद्दा
नकाय ॐ दवतिग क्र२खासा॥ ॐ गिश्रद्व नाजियअज न्यास॥ ॥ पर्षवन्वा
ना न्या सैकूना॥ ॐ ग [illegible] जूर्मु झायेइ॥ ॐ ग [illegible] गर्जू न्याइ॥ ॐ ग लंमय [illegible] मायेइ॥ ॐ ग [illegible]

अनामिकाय३ ॥ ॐ ग उं कनिष्ठाय३ ॥ ॐ ग अं अमृताय स्वाहा ॥ ॐ ग ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ग श्रीं इ
शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ग स्वं शिखायै वषट् ॥ ॐ ग चीं कवचाय हुं ॥ ॐ ग नत्रयाय वषट् ॥ ॐ ग
अं अमृताय स्वाहा ॥ कनिष्ठा नमः ॥ ॐ ग हं जिह्वाग्रे नमः ॥ शिखा ॥ ॐ ग सं सिद्धि नमः ॥ व
मयान ॥ ॐ ग कं ललाटे नमः३ ॥ कयानमः ॥ ॐ ग मं वक्त्र मले३ ॥ स्थालमः ॥ ॐ ग लं हृदः
य३ ॥ नभ्वतमः ॥ ॐ ग वं नाभौ३ ॥ वक्षमः ॥ ॐ ग युं स्कंध३ ॥ तिजमः ॥ ॐ ग यं जानू द्वय३ ॥ :
पादनमः ॥ ॐ ग उं पादद्वय३ ॥ पादनमः ॥ ॐ ग अं अमृताय स्वाहा ॥ ०० पिनवालान्यासाय ००

दीवलि गलक्त २ स्वाला॥ ॥नमाम्वगि नमिकुञनी॥ मतलमम्लानन्काय॥ यौञ घानाऊ
मन्त्र नञ ऊत्ति मूलयजा ध्य र्षना॥ मन्त्र॥ ॐ ग गगनानन्द देव जूविलाम्वादवा वाउल
जूहे लालाम्वयं ३॥ ॐ गगरुमूक्षानन्द देव रागग्यादवि वाउ लजू हे लाला स्वयं ३॥ ॐ
ग ऋीतानन्द देव स्मनाम्वादवी वाउ लजू हे लाला स्वयं ३॥ ॐ ग स्वानन्द देव गक्षम्य
दवी वाउ लजू हे लाला स्वयं ३॥ ॐ ग ज्ञानन्द देव वाउ लजू हे लाला स्वयं ३॥ ॐ ग सद
ानन्द देव वाउ लजू हे लाला स्वयं ३॥ ॐ ग ठीक्षानन्द देव वाउ लजू हे लाला स्वयं

३॥ ॐ ग धनमानन्द देवताउ लक्ष्मू ह स्ना सा स्व य ३॥ ॐ ग द्रवानन्द देवताउ लक्ष्मू ह स्ना सा:
स्व य ३॥ ॐ ग व व गानन्द देवताउ लक्ष्मू ह स्ना सा स्व यं ३॥ ॐ ग ऊ य व मानन्द देवताउ ल
क्ष्मू ह स्ना सा स्व य ३॥ ॐ ग क्ष्मू त्र स्ग मानन्द देवताउ क्ष्मू ह स्ना सा स्व य ३॥ ॐ गिरिनगुह्वि सा:
लायूसा॥ ॐ ग भ्रू खा न भ्रू मा थ व न देवी म ल श्री र्भू व क्षा य नी वि श्व ३॥ ॐ ग भ्रू खा न भ्रू मा थ
व ल देवी म ल श्री र्के मा हु श्व नी वि श्व ३॥ ॐ ग भ्रूं खा न भ्रू मा थ व न देवी म ल श्री र्वं क्षा मा नि
वि श्व ३॥ ॐ ग भ्रू खा न भ्रू मा थ व न देवी म ल श्री ठंवे भ्रू वि वी श्व ३॥ ॐ ग भ्रू खा न भ्रू मा थ व

न्दवीमलश्रीगंबानादिवीश्व ३ ॥ ॐ गन्तृधानन्तूमाघवनदविमलश्रीयं ० द्रायनीः
त्रिश्व ३ ॥ ॐ गन्तृधानन्तूमाघवनदविमलश्रीयंवामूआवाश्व ३ ॥ ॐ गन्तृघनन्तूमाघ
वनदविमलश्रीगंमहालक्षविश्व ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रूं ह्रौंः क्ष्मां ह्रूँ ... याइकी ॥ नावाव
नाथीवन्दनाक्षनयूयींनमः ॥ नमायश्रीमहाकानयठु ॥ ॥ ... ॐ क्षायननयक्षमू
जा ॥ ह्रींक्षनमूजा ॥ श्रीह्रूनमूजा ॥ क्ष्रूंयांनीमूजा ॥ ह्रौंःमलमू ... जा ॥ ० नियक्षम
जा ॥ विमऊनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रूं ह्रौंः क्षौं क्ष्रूं श्रीक्लां ॥ ० पित्वानि नति आत्मयूजा ॥ ॥

जनयागपूजा॥ क्ष्मौँ जनयागयाइकी॥ ज्ञावाहनादी॥ध नूमूसाद्वर्गयत्रू॥ मयना॥ ॐ ग क्रः

श्रिकायविसह क्ष्मौं कूलदिलायथीमह्रि. गन्ना क्ष्मिव्रवदयात्रू॥ ॥ नूर्वयागपूजा॥

ॐ ग क्रौं क्रौं कूंय ऋनरक्षानरगजगनूयवनरघवगरकहर वमरदमरक्षान

यरविक्षानयर विप्रिरहूंइरूठ क्रौं श्रीमहाकामानीकाविश्वइ॥ ॐ ग क्ष्मौं नूर्वया

यथाइकी॥ ज्ञावाहनादियानिमूसाद्वर्गयत्रू॥ हनगुप्ति॥ ॐ क्रौं श्रीं हूं क्लौं ८ क्लौं हूं

श्रीं ह्रौं ॐ क्ष्मां क्ष्मौं ज्ञालनयागयछदनायायाइकी॥ ॐ वन्दनयाइ॥ क्रौं नूक गंइ॥ श्रीं

वीररूपसिद्धे ३ ॥ हूँ सर्व्वजनमोहनी ॥ ह्रौँ नानास्तुतज्ञाने कालरूपिणी ३ ॥ इति मूलमुद्रा
॥ ॥ अथ कराङ्गन्यास ॥ ओँ ग जाँ जीँ जूँ ब्रह्मने २ हृदयाय नमः १ ॥ ओँ ग ध्याने २ गगनगमनू नय
जिन मस्वाहा ॥ ओँ ग बग २ ब्रह्म ठ २ शिखायै वषट् ॥ ओँ ज कद २ बम २ कवचाय हूं ॥ ओँ गवे
षा गय २ विप्रि २ हूँ ३ रट ट जू स्त्राय हूँ रट ट ॥ ०ं गि भूषा नाङ्गे न्यासाय ०ं दबलिग क्र
र स्वाहा ॥ ०ं गि जू षा नाङ्ग न्यास ॥ ॥ अथ मातृकानुन्यास ॥ ओँ ग जू षा न जू मा घ ब व न द
वीमले श्री ब्रह्मकारिणी विश्वे ३ ॥ ओँ ग जू षा न जू मा घ ब व न द वीमल श्री मा हू सं नी विश्वे ३ ॥
तेँ घन स ॥

कंपुस॥ ॐगजूघानजूमाघवनदवीमलश्रीकौमालीविश्व३॥ यंकुस॥ ॐगजूघानजूः
माघवनदवीमलश्रीवैष्णविविश्व३॥ स्वातस॥ ॐगजूघानजूमाघवनदवीमलश्रीवा
राहिविश्व३॥ कामदवस॥ ॐगजूघानजूमाघवनदवीमलश्री ॐ ड्रालीविश्व३॥ दना
ऊस॥ ॐगजूघानजूमाघवनदवीमलश्रीवामण्डुविश्व३॥ गननियवस॥ ॐगजूघा
नजूमाघवनदवीमलश्रीमहालक्ष्मीविश्व३॥ वसंयालस॥ ॐ गिमारस्वन्तुन्यासाय ॐ
देवलिगक्ररस्वाहा॥ ॐ गिमारस्वन्तुन्यास॥ ॥जूपदादिपंक्तुन्यास॥ ॐगह्म्रौंह्लौंसदे

नाभिकाथे ज्रां ग्लूं कलाधिसांसां ग्म्लौं विशुद्ध शाकिनी नाये व्र क्रु निपूनिखजी आनन्द देव ३
||कण्ठ|| ऐंग घा नक्ष्मा नक्ष्मा ग्लौं नाम्रखा वक्रु नूयाये रुं ग्रुं मन्त्रा वि कां कां क्रं क्ष्मौं नू
नाहनकाकी नियगुनयूनि वि आनन्द देव ३ ||हृदि|| ऐंग जां ज्रां ह्रूं मर्द्ध मिखक्लूं ग्लौं ह्रू
व क्ष्रौं धि लांलीलं ग्म्लौं मनियूनकलाकिनि रामहायूनि श्रि आनन्द देव ३ ||नाभि|| नि
ग क्ष्रुं कृष्ण काये ग्लौं कूनक्षीयाये ज्रौं ह्मूं यादधि नां नां नू ग्म्लौं स्वाधिष्ठान लाकिनि ये धा पू
नी नूनूगहो आनन्द देव ३ ||लिङ्ग|| ऐंग नमाहगवनि ग्लौं हलक मलाये ज्रां ह्मूं हवनाधि

ऐँ ह्रीँ हूँ श्रीँ ज्ञाक्ष नताक्षि नियमनियू नामि श्रीआनन्ददेव ३ ॥ गुरु ॥ ॐ ग क्षि नि र विश्व काङ्क

नाथ रू ः श्री ह्लूँ न ला षि ह्रौँ ह्रीँ हूँ श्रीँ ज्ञा ह्ला ह्ला क्षि नि ये यू यू नि श्रीज्ञू स ह्रि आनन्द देव ३ ॥

गुरु पा दु ॥ ॐ ग यौँ यीँ यूँ श्रीँ त श्री ला ट य कू ली य य कू ली यू नि कौ लि आनन्द देव ३ ॥ ता

ला ट ॥ ॐ गि दा दि वृद्ध ना श्री हा य ॐ दे व ति ग कू र स्वाहा ॥ ॐ गि दा दि वृद्ध ना हा ॥ ॥

ॐ नि धा रु न्याम विधि ॥ ॥ न ना गुरु यक्षि यू ज नँ ॥ ॐ ग हूँ स स का ना ह्ला य या इ का ॥ ॐ

ग काँ कौं ह्रूँ रूः कू त या ला य ३ ॥ ॐ ग य रू ह्ला य ३ ॥ ध्यान ॥ ॐ ग र्व्व न व श्रीँ खि रु जा कू द क्षिः

लाआथमातिका॥ वामदक्षहि क्षायाउ. कवकियति थ्यानन॥ नीवदुथमितंमक्षे. कुक्ष
जिनुवर्म्मभवव॥ थ्यासनह्नि नंदव. वक्षदंगु थनेनथ्या॥ मर्व्वमयपिमर्व्वक्ति: नाना
मिगगलंथवं॥ थ्यानपूथ्यायाह्का॥ गगति॥ ओंग क्ष्मं श्रीगुनुयक्ति रुद्दानकाय
याह्कायूजयापिनम॥ ॐ दवतिग. क्रस्वाला॥ क्ष्मं वादनादि. धनुमूजाद
जयत॥ ॐ पिगुनयकीपूजा॥ ॥ नमामस्गनपूज नं॥ ओंग यथ्यामनाययाह्
ओंगक्षोंगि वाययाह्का॥ ओंगं गकययाह्का॥ ओंग स्व क्षामादिजूक्षविलंजि:

विस्वाइ ॥ ॐ दवलिगक्न रस्वाहा ॥ क्रमकन, सिंधुमृढपूजा ॥ ॐ र श्री दवोयाइकी ॥ ॐ
गक्ली ल क्ष्मी दवोयाइ का ॥ ॐ दवलिगक्न रस्वाहा ॥ भूयादनादि, थनू, या निमृजाइ र्ग
हा ॥ ॐ तिसगनपूजा ॥ ॥ थन, मा रु निरु या ॥ मलिमि नाल, वा गु वसीज वाय ॥ अय
लय ॥ मन्त्र ॥ ॐ क्लीं सौं क्ष्रुं क्ष्रुं ह्रुं स्वाहा ॥ सत्रिअयतलयी ॥ क्षन १० ॥ ॐ माद निविश्वमादना
थेदिवाजनस्मयया ढ्रुं क्ष्रु ह्रु मिनम ॥ मनविय ॥ ॐ ग गां गीं गूं मां वह्निनूयायनम ॥
नगायूजनी ॥ ॐ ग ॐ क्ली श्री जू निमासिश्री याइका ॥ ॐ जीं श्री लघिमा शृं सिश्री याइका ॥ ॐ श्री

श्रीं ॐ ख्मा सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कमि गासि द्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं व्रका गसि द्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं
श्रीं सुक्ति सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ जित्व सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नम सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं मा क्षा सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कामप्रदा सिद्धी यायै नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ द गदिग ॥ ॐ न आं ओं
हूं भ्रूं ताकिनी यायै नमः ॥ ॐ न नां नीं नूं भ्रूं नाकिनी यायै नमः ॥ ॐ न लां लीं लूं भ्रूं लाकिनी या
यै भ्रूं नमः ॥ ॐ न कां कीं कूं भ्रूं काकि भ्रूं नी यायै नमः ॥ ॐ न सां सीं सूं भ्रूं भ्रूं साकिनी याय
नमः ॥ ॐ न यां यीं यूं भ्रूं याभ्रूं किनी यायै नमः ॥ ॐ न सां सीं सूं भ्रूं साकि भ्रूं नी यायै नमः ॥ व

ति॥ ज्ञा वाद नादि यानि मू डाउ र्गयथ ७॥ ०ः निमादनिपूजा॥ ॥ननाजमविपूजनी॥ ॐ न

यथा सनाय याइ क्षी॥ ॐ न स वा स नाय याइ क्षी॥ ध्यान॥ ॐ नय मा स न सू स्वासि नंःथ्य न व ॐ

तिलावनी॥ शिव क्राद क्षीलन क्षःथ्य न या न न्थाल नी॥ लु आ सा रू म ला वा ना. द थ क्षी स

ऊ न ॐ नी॥ उमनूविसूल जूवं व ना ला त्व लस मयसु॥ या ग विदूक नीश्रष्ट. या ना न गय

थथ ना॥ अथविकर्म ध्यान व्या. जाविगं विनजानं॥ ध्यान पूर्थ याइ क्षी॥ ननापूजनी॥ ॐ गः

क्षूं श्रा सर्वजन कारु नी ३॥ ॐ न श्रीं सर्वजन मारु नी ३॥ ॐ न क्षूं श्रा सर्वजन जरू नी ३॥ ॐ न क्षूं

क्षूं

वि २

श्री सर्व्वजन स्तम्भनी ३ ॥ ॐ ग श्री क्लौं सर्व्वजन आकर्षनी ३ ॥ ॐ ग क्लूं श्री सर्व्वजन क्षोभनी ३

॥ ॐ ग श्रौं आनन्द अकि रुन वानन्द विग्राम विषय नयश्री अ मषि कर्म रुद्रानकाय ३

॥ ०० देवतिथ क्रा र[illegible]ा ॥ आवाहनादि यानि मूद्रा दर्शयेत् ॥ ०० गिजषषिपूगा ॥

नगा श्री कम्यूजनं ॥ ॐ ग व मास नायद ३ ॥ ॐ ग सिं सस नायद ३ ॥ ध्यान ॥ ॐ ग व मासि

ता स नं देवीं । हिमकुन्दन्दु सनिहे ॥ त्रकवक्रशि नत्र कृ द ध्या नूयमहादेवी ॥ वरदः

कमह ध्मानं । त्रिशूला कं कं ध्यानन्दी ॥ द ध्या क क्रा नूआलिंग । कपालयूजे पाणेध्या ॥ द ध्या

विवृकं षु स्वाउ. सव्वदसु वृक्षलगं ॥ वामनू ह्नं गमीदवी. स्यामाज्ञीनवयौवना ॥ व
नारुयकनादवी. त्रिनत्रादि व्यानूयिनी ॥ दिव्यनस्ला अरु षाजी. दिव्यवस्त्रुयविषना.
॥ ॐ वें क्ष्मस्वामहादेव. श्रीकर्णयवनमध्यनी ॥ ध्यानपूर्वयाइकां ॥ नाया ॐ लि ॥ ॐ ग [illegible]
नानन्द ओंकि रुनवानन्दद्विनाषियगय [illegible] श्री श्री कर्णनाथयस्वगक्विसद्विना [illegible]
ययाइकां ॥ ॐ दवलिग्ह्रस्वा[illegible] ॥ जावा [illegible] हनादि त्रिशूलयानिमूडाउ गस्के ॥ [illegible]
ॐ गि श्रीकर्णयजा ॥ ॥ ननामाठकाग नर्ह्रीती ॥ ॐ ग हसासनायइ ॥ ध्यान ॥ ॐ ग

ह्र सा त न क्लि गा द वी, आ ग म जि न प्र क्ष नि र्गा॥ खग व र्द्ध व रु वा ह्र, स र्व्व ल क्षा ल ह्ल, षि गी॥
जु क्ष यू ष्ठ क ना द क्ष, या म च व न या उ क्ष॥ जु व र्ग्ग पू ज य ल न्तु, ॐ न्दु वि न्दु प्र स यू गं॥ ध्यान
पू र्व्व या इ क्षी॥ ॐ ग जु क्षा न जु वा क्षा व त द वी म ल ॐ आँ श्री जूं व क्षा य ना द वी क्ष क्षु ३
ॐ द व लि गु क्ष श्रा क्षा॥ जु वा ह्र ना दि, य य म ड्रा उ र्ज्ज श्रीं स ह्र॥ ॥ ॐ ग वु क्षा स ना य इ
ध्यान॥ ॐ ग वु व ह्य का टि व ज्रा स, त्रि न त्रा सा व रु र्त्तु श्री॥ जु क्ष श्रू त ध ना द वी, व सा पू
र्णु या उ क्ष॥ कु व र्ग्ग पू ज य त्रु द वी, द क्षा ग न स मा ह्र गा॥ स्वन्दु वि म प्र स ज न, मू ज्ञा क्षा य

र्व्ववत्सदा॥ ध्यानपूर्व्वयाइक्ती॥ ॐगजूघामजूमाघावनदवीमतज्ञीम्ल्यूँश्रीकंमाह्नग्व
नादवीविश्वइ॥ ०ः०दवतिग्नक्ररस्वाता॥ जूवाहनादिषिग्लूतमूजउर्गयस्र॥ ॥
ॐगमयूनासनायइ॥ ध्यान॥ ॐगमयूनासनमानूश्रःवानाक्ककागिशविमा॥ वर
ईआक्रमानास्ववामजक्विथनावना॥ वनदावामकुयातिवसर्श्वातष्पतरूबिमा॥ व
र्ग्गयूजयद्ववीस्वण्डुव्रनद्दहृयूगं॥ दवीकूगनवकनपूर्व्ववलर्व्वकानयस्र॥ ध्यान
पूर्व्वयाइक्ती॥ ॐगजूघामजूमाघ्ववनदवीमतज्ञीम्ल्यूँश्रीवंकोमानीदवीविश्वइ॥ ०ः०द

वर्त्ति गरुडाय स्वाहा ॥ आवाहनादि त्रिजिह्वा मृत्युर्मयम् ॥ ॥ ॐ नमः समन्त नाय याय

की ध्यान ॥ ॐ गरुड आसन मन्त्र. स्याम वर्णं मस्तक पि ॥ सर्वत्र कालमासानि. वर्त्त

जाविनाजिग ॥ वज्रक्रोमाद कीवाम. वनवाया नयाय क्षा ॥ ठ वर्ज्जपूजय द्ववी. दवी

कुठ नथे वर ॥ पूर्व वज्रायान दवी. वरुण्ड र्य प्रसिद्धि गा ॥ मार कुठ समायुक्त. पञ्चस

र्द्धव काय स्तु ॥ वज्र वायुजय स्थव. सर्व्व कार्यार्थ सिद्धिदा ॥ ध्यान पूर्थीयाद की ॥ ॐ गरुड क्षा

त्र जमा पवन दवी मन्त्र स्त्रीं ग्राठ वज्र वादवावि श्वद ॥ ॐ दे वर्त्ति गरुड स्वाहा ॥ आवा

हृनादि. तितिस्वामूर्द्धाउर्गंयत्र ॥ ॥ ॐ गमहि स्वाहानायः३ ॥ ध्यान ॥ ॐ गमहि मह्मनूनवर्ज्जी
हाहातहृनन्रूविना ॥ हृदानमूर्द्धं ध्याहा ॥ हृदिवज्रमू स्वयस. शिखिनववि हाथाका ॥
हृअवत्वानमयूमाउ ड्डाकनावदना ॥ हृजाहामन्तु ध्यालनादकाउथगादावासि ॥:
केर्शिकायालवामकवनदावामकयाली ॥ सर्वातीकालरूपिनानवर्ग्गलरयूशुके ॥ अ
क्षिकूटनयेववम जदियूर्व्ववलर्व ॥ पूजिमसर्वकामद. ध्यानयूर्श्चयाःकी ॥ ॐ गनूध्यान
अथायवनदवामलज्जौ मुग्री गवानाहिदवापिड्ड३ ॥ ॐ दवलिट्ठरूर स्वाहा ॥ आवा

हृनादि कालमृत्युउद्धरणीय स्वाहा॥ ॥ॐ गगनासनाय याइकां॥ ध्यानं॥ द्विनयन सकीना देवीवा
मकर्न वनपुरहा॥ किंनिठि अक्रनगाव. सर्वालंका लरूपिणा॥ वज्रकुंजा जनिर्द्धक. वम्य
कूरवक्षतिना॥ वनदा वामक पालीं. यव र्गपूजी न सदा॥ देवी कुठ समल र्खा. नवा याद्रु
नयूर्वेना॥ सर्वसिद्धिप्रदा देवी. सर्वपापप्रमोचनी॥ ध्यानयू थीं याइकां॥ ॐ गजू खा न सूः
माघव वन द्धदेवी मल ॐ ह्रीं श्रीयं ङ्कः ज्रायनि देवीविश्वइ॥ ङ्कः देवलिंग क्ररवाता॥ जा
वाहृनादि शुक्रमृत्यु उद्धरणीय स्वाहा॥ ॥ॐ अथ माससनाय याइकां॥ ध्यानं॥ ॐ ताजीमाक्र

शुभव्रतस्था. शिनत्रीवन्द्रनूपिनी॥ उक्ता कावासववदनी. सूजाक्षासृतुक्षतृनी॥ न्यवादिज
ववनिस्थ षगामूखलमरूवा॥ थयादगकुमूसुमू. सूखाजिहिगिवश्रीका॥ द्विपिवर्म
प निक्षना. भक्षनाघसुनावका॥ खगरुढकक्षनिवृ. उमनूखक्षांगमववा॥ कलिमूक्षव
मर्लव. क्षमर्नककयातक्ष॥ पिसावरूमवगाला. जिवानश्रुसूनगिका॥ त्रववि क्षरुवा
मूसुयवर्म्मयूजयत्सदा॥ दावाक्षिविजयूर्ध्वहि. माहकूढमेघववा॥ मूडाश्चायूर्द्धवद्धवा
लनवसुगायिना॥ जूरिहूश्रुसदादवी. स्वामूज्ञावसुमातिनी॥ क्ष्मानयूर्ध्वयाइकी॥

ऐँरभूषानभूषाघवनदवीमलस्कँग्लूँश्रीयँवामृञदवीविश्वइ॥ ॐदेवलिगकरह्ला
ह्ला॥भूवाह्ननाँदि.कास्वमृजाऊर्गग्न॥ ॥ऐँगलिह्लाह्लनाययाइकौ॥ध्यान॥ऐंगसिह्लह्ला
काढिवब्राह्ला.चिनतासारुउर्उआ॥स्वअ हढ [illegible]धनादवी.वनदावामषागध्याना॥अव
र्जमर्व्हलागघ.रुमनवषमक्षिकौं॥पूवर्हलख्वडथानि.साययल्यनमस्वनी॥ध्यानयू
सौयाइकौ॥ऐँगजूघानभूमाघवनदवीमलस्कँग्लूँश्रीअमह्लालक्षींदवीविश्वइ॥ॐ
देवलिगकरह्लाह्ला॥भूवाह्लनादि.विन्दमृजाऊर्गग्लूँस्वस्न॥ॐलिमारुकागलपूजा॥ ॥

नमारुनगलधूजनी ॥ ॐ गसिलासनायः ३ । क्ष्मना ॥ ॐ गजुसिनाङ्रुनवमादं. ह्रुसूरं ह्रु
सूवद्धसी ॥ प्रलयानलसं कागं. ग्रसत्रिववमावनी ॥ कलालवदनं घानं. लालाजिह्वा
ग्रहिवलीं ॥ मूकूछनाविविशनः. कार्त्तिकूञ्चलमस्तिगो ॥ नलमालासिनधियायदृका
ह्रमदायिना ॥ मूक्ष्मारूलहूनामाला. कञ्चक्षयवधिनाजग ॥ वृहद्वक्ष्मस्थलासगं. नाग
सहायकिनी ॥ विशनागकडिवर्द्धं. ऋद्धघञ्जिकमखना ॥ क्षादलेप्रतुजेयुक्ता. नानाली
कालमस्तिनं ॥ त्रिमूर्तीकरुनीखर्ज. नागयाञगवाक्रुगं ॥ दक्षिणनकगस्थ. दिव्यायुधयु:
वि

दायिनं॥ काश्यरूठ कखबाकं. था ञा गकिसु मृजनी॥ बामभार्ग्वेबनानारू. मकुसेथाव

शाबनी॥ काश्यमालावतम्वाव. दमस्र. वनग्रलिगा॥ मिताकृ. र्टमशाथोर्द. गर्जु नेरुन

वसन॥ वयागयुनमध्यरू. कीतन्भयागरिः शमद॥ ध्यानयुर्थयाइकी॥ ॐनभ्यौं श्रीगः

मिगाकरुलवायशु॥ ॐ दंबतिगक्रशखाता॥ जावारुनादि. विनुमृजादर्ज श्रीः॥

ॐनजुलामनायपाइकी॥ ध्यान॥ ॐ गनूनूनाथंमशारोंमं. गाप्राऊंनाम्रवर्ज्वसं॥ मुथाबि

म्वयगिकाम. मिन्द्रगयवकमनिरी॥ क्रिनाठगलनश्चिनं. वजकूलुलमङ्गिनी॥ शाय

कयान्ऽसाराश्री. महार्स्लिविर्हपिणी॥ उत्ताक्षकसमायण. नानानैकानमणिण्डणी॥ षिशू

लंतमलंपाणी. नाममाज्ञस्कंदशिला॥ मृडाविनानथासर्व. मूअंलवासमाजिना॥ न्द्रुमा

लविविगाश्री. ओयादगललम्बिना॥ गर्जमानमहारिमं. ध्यानानर्तमहाबली॥ कीतन

यागिनीसार्द्ध. वनन्भयनृनसध्यगी॥ ध्यानयर्थीयाइकी॥ ॐनमोश्रीनृत्तेश्वराय३॥ ॐनृ

र्दवलिगद्धूरस्वाहा॥ नृवारुनादित्रिशूलमुडदर्भयन्न॥ ॥ ॐनमकालागनाययाइ

की॥ ध्यान॥ ॐनवरुनाथंमहागीर्द. निलाॐनमसमयुर्ह॥ नागोवर्ल्लयम्पीकाजंनालम

यसमग्रहं ॥ मकुटनविचित्र न. सर्व्वबलमयनउ ॥ नलकुलुतंग्गासार्थ. दिंमानंमसौ
जर्वी ॥ हेमनलकूनामाला. कनस्फारविनाजग ॥ द्विवक्त्रकत्रुअर्थूकों. नानातकानः
मलिगा ॥ कार्यसद्धाअदणुष्टु. याग्रगक्तिष्टवामक ॥ वज्रयनिवमूलक्षू. तमनूरअद
क्लिल ॥ ट्रुदुद्वक्रस्रुलासग. सर्व्वलक्षनलक्लिर्गं ॥ सर्व्ववयवक्लासार्थ. कांतयक्षिसमा
त्रिरं ॥ क्रोडमानीविश्वलाकं. योगिनीवक्रमख्यांग ॥ कांनापूर्नंसमाहाय्य. क्रोडमानं
मह्लोजसं ॥ नानानूयधनस्रुया ॥ ध्यानयूर्यांयारका ॥ ॐ ग श्रीं थीवज्रुरुनवायाउ ॥ ॐ

दवतिगन्हरस्वासा || आवाहनादि पूजार्घ्ययत् || ॐ रगनूता सनायया इकी
|| ध्यान || काथसिंहमहावोर्द, गु जाठ पूनमखग || नीलात्यनदल ग्यामं, वीनरुस्मसम
प्रह || किनाटि कूलुलेर्यू क, वजवस्तप्रदीपिर्न || महानस्ताकि गामासा, क न्ह ह्मा व
विनाजग || उ ॐ १ श्रीतज काथर्न, नना कयूनमस्थिर्न || वनतमूलसूजव, नागं वा
गंमवजक || कम्हगक्ति धनदक, म क्षवामवदामार्हं || काथंपिना क यविर्धं, ध न्ह
याश्रेसमूजन || कल्हकादर्याजंवाम, दीयामानं सूनजस || विस्तर्ई वक्रास्हरुगं, विश्र

ल न र य मा क्ष ली ॥ ति न र्घ व न दं दं दं ना नू ल का न म न्ति र्मं ॥ क या ल मा ला रु व ली ढं ङ्का

स न वा व ह्लि र्मं ॥ सू ह ला स यू या क ह्लै [illegible] मा न व्या व ह्लि र्मं ॥ न म म या गि नी ला र्द्ध ख

ग ह्लि व न द र्यि न ४ ॥ आ न यू षी या ६ का ॥ ॐ न क्ष्मौ श्री क्रा ध रु न मा य ३ ॥ ॐ दे व लि गु क्रा र

ला ला ॥ नू या रु ना दि मू डा उ र्ग य न ॥ श्रीं ॥ नं ग स गा म स ना र या ६ का ॥ आ न ॥ त्रैं

ग क्ष जा ढ यू न ग अ र ना थं या न्म रु सं रु र्क ॥ अ न आ मू द व ॐ रुं दी व मा नं स ग ज स

॥ कि या ठि ने म ला रु गं व ज कु नु ल थ नि लीं ॥ स्फ ठि क र्भ नि मा ला रु १ जि न स्फा रि र्वि

नाजन ॥ त्रिनर्यंस्वादगङुजा. नानालंकावमत्तुर्न ॥ मूलंखजनथावालं. याजंयनिघम्
ऋयं ॥ दक्षिलनकनसंस्थं. दियास्रुदियानूयिलं ॥ नूउखढकनागऋ. यिनाकंयह्नः
दर्थलं ॥ याममार्ग्गवसंस्रऋ. दियास्रदियानूयिल ॥ वकंवियलमासार्ग. हमयह
विह्रयिर्मं ॥ द्रियानह्लह्नगमाना. जायदगलतयिनी ॥ नूयुग१केढिह्नग्वय. याह्नी
थानासमज्ञुर्नो ॥ हसयानसमानूऊँ. जराकीयूनम. ष्मांग ॥ नमनयागिनीसार्द्धक्री
डमानंमह्लावलं ॥ ष्मानयूर्थंयाइकी ॥ ॐम स्त्रूं श्रीउग्रर्ल्कवयाय३ ॥ ॐ दविलिः

ॐ ग गृश्मा समनाथपाइकी॥ ध्या

ह्रूं क्रः स्वाहा॥ जावाद नादि मूजादर्गयमू॥ ॥ ॐ नमूश्म सनाथयाइकी॥ ध्यान॥
ॐ नरिय नेकर्तिकामश्मा. त्रिकानपूजम श्वग॥ क्रव क्रू लंमहा कार्य. नकाई ग क
वर्ज्जरा॥ किनाटि नम्रूमजा स्त्रं. नलकुगुलमगुिगं॥ नील वज कृगमाला. कन्हस्थावधि
नाअम॥ गेरवस्र्. कि कमालारि. यावादम तालम्विगं॥ दग्न वा कृ महासीमं. नानारुज्ञल
मणिगं॥ स्वअयाजमथागली. रुर्जव वदद किलं॥ स्व ट क तम नृ कासीमं. अनमूगलीपि
य॥ वामयार्त्थस्थि नाक्रानि. कालानलसमप्रस॥ सर्वलक्ष लमंयू क्रुं. सर्वावयस्थारिगं॥

नाम द्विनदनी स्थि नादवी वाभिकनप्रनिषप्रना॥ किनि मिनी सहमा. ॥ क्रीस पीनेका
मरकिमा॥ नमूत्मा मग्रह्मा नीनें धिमिद्रि प्रदा पीनी॥ पजे कृनं ध्वनं प्रा मे दर्द निप
नं कष्वर॥ पथ ॐ नम्लपू क्रवि ह्रीरु न्हूनेत्रु क्रिनन तु॥ ध्यानं कृष्ण पाइकी॥ पूजम

नानानलमयामाला. कटिर्व्वजाविनाजन॥ जस्वानूट ८ सूनजास्त्री ८ कोतगव क्रमश्म
न॥ स्वगक्कि वलमाग्निला. क्राजगमिगनजसा॥ एकाश्रयूनमश्वस्र. श्वकमाग्रिस्वपिठ
नि॥ ध्यानयूश्वयाइकी॥ ॐ ग स्मां श्रींषलरुनक्षयइ॥ वलिन्ह क्रः स्वाहा॥ जावाद नादि
मूजादर्गयमू॥ ॥ ॐ यू ग ग वाह नाथयाइकी॥ ध्यान॥ ॐ ग ह स्वरुं कंमहाना
यं. कगुिकायनिसंस्थि नं॥ क्रूरू यावदमंकाअ. वियरुसमसमयरुं॥ महा गजेमस्र
कायं. सर्वावयवस्थारिगं॥ झुजं८ मातनसेयूकः. नानाकयूमगुिगं॥ विजाटि नमहा

मिनमहा॥ ग ष्ठे ग्नी कपालीनी नगवायपाइकी॥ वलिग क्रः स्वाहा॥ जावाद नादि

धार्य रत्नकुण्डलमण्डितां || हेमवल्लकनामामाला। कण्ठाववविराजितं || नागाभ्रानय
नर्गीतं दुःरुगर्दिवयभूपितं || कनगंकभूयानवकु। नागमूलऋदर्पितं || कर्लगादमनु
नामप। दिर्घमानागतिश्वर्ख्य || काञ्चसूर्यमखवज्र। अक्किमकूगनामनें || पिनाकयालि
वरदं। दक्षिणे नविराजतं || सवयानेमाभूरु। दविकाद्धान्कसंक्लिष्टं || नमनयगिः
नीलाङ्ग। नानाभूषणविभूषिता || सर्वक्लिवलमाभ्रिस्व। क्रीतमभागिनालहु || ध्यानपूर्वः
यारकी || तंग श्रीसर्वनागराजाय || ॐ देवलिङ्गकर स्वाहा। आवाहनादि

मुद्राउर्ध्वयम् ॥ ॥०॥ दिक्पालपूजा ॥ ॥ गणपत्यर्च्चनं ॥ ॐ गं कूर्मसाक
लायधाय स्वाहा ॥ ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लः गणपतये सायधाय स्वाहा ॥ ॐ गं यथासनाय नमः ॥ पाद्यासनाय नमः ॥ ॥
ध्यानं ॥ ॐ गजेन्द्रवदनं देवं कनकाभं त्रिनयनं लम्बोदरं वरदं हस्ते धारिणं नानालङ्कारभूषितं सिद्धिदं पद्महस्तं चन्द्र
ललाटं ॥ पञ्चवक्त्रं धनदं वाचिवशं नमामि ॥ मस्तके सिद्धिं वन्दे विश्वेश जगतां गुरुं
मूर्तिमान् ॥ नमस्ते मम लल्ल दिक् कलकल तमसीमा ॥ यक्षं वर्णं धनैश्वर्यं नागदं स्वाधिना
ज्ञानं ॥ नागरूपधारिणं सर्वपूजाकर्माणि सिद्धिलाभनं ॥ दशबाहु समस्तजगत नागजक्षाधि

गर्के ॥ कयातें रूढकेयाउं स्वर्द्धंगदर्पनत्रिय ॥ वानवनास्वआदिर्षं दक्षिणनग ४ ५

गूलू ॥ खड्ग वालले श्मसर्पं त्रिशूलवनदगथ ॥ यञासननसमासीनं वृषावृतुस्तुरूज

जूं ॥ एवंध्या त्वामस्तादवं रुनवंमालमथ्यूगं ॥ थ्यानवृथांयाइकां ॥ पूजना ॥ ॐ नमश्वाय

ओं थ्या नओं श्वानश्वानननकं रुं सर्व्वनमस्सर्व्व रुं हंसः ओं नृउनृयजः १ श्रीशिखास्व

च्छन्द मस्तरु नवायथ्याइकां ॥ पूजयामि ॥ ॐ १ क्षां श्रीस्वच्छन्दरुनवाय ० दवलिगक्ष २

सास ॥ जूवारूनादि गर्डं नीमृडाउर्यय ॥ ०० श्रीस्वच्छन्दपूजा ॥ ॥ समालगव

ॐ ग नमः श्रीं क्रीं चण्ड चाज्ञाय पादुकां ॥

निवृजनी ॥ ॐ ग मालाक्ष्मादि जूम्भयूष्टि कासन माइ का ॥ ॐ ग शिखाम नाय ३ ॥ ॐ ग समदि

२ ह घाँ नाय ३ ॥ ॐ जनूह्याम नाय ३ ॥ ॐ ग निगुह्याम नाय ३ ॥ ध्यान ॥ ॐ ग जौ उग्र वज्र मल

देवी. ध्यायगरुगणित्रनाग्निवा ॥ गफवामिक्षनावक्षी. नानापृथ्वीयसारुमा ॥ स्वेन

वर्णं त्रयनिक्षना. महिषासनगामिनी ॥ किनीढिकृन्नलाकाली. कयनामलिनायूनः

॥ नलामालाविविजंन. लानमालावलंविग ॥ जूसादअसुजाकाको. यीनवक्त्रलानौ

नूला ॥ लजअनम्लथावक्र. वर्जांकूजधनागुह्य ॥ वनदेतमनूदुला. गूनयाजसा

रिणी ॥ दक्षिणीन कनाथ ना. यथा ह्रा ह्ला न थ सुह्ल ॥ रु न कव नह्ल लँ व. ग दा र्व थ सह्ला
रिणी ॥ या अ म ऊँ नी दः कँ व. ख ड्ग क स या अ र्क ॥ वि न्दु मू ला न थ सि द्धि. सिं ह्ला स न य
त्रि ह्रि णी ॥ ध्या य म ह्र म ह्ला द वी. म ह्ला ग व नी न भा सु र ॥ रु उ व ओ व्र व ओ व. वो ओ थः
व ह्ल न यि. का ॥ व ओ व ओ व नि श्व व. व ओ न्पा म श्व व व ॥ ज गि व ओ द्वि व ओ व उ थः
व ओ न श्व व व. ॥ ह्ल य नि वा न स भा य कँ. जा सा सु ॐ हु म सु ल ॥ ध्या न यू र्थ या ह का ॥
प पा वा ला ॥ त्रैं ठ उँ क्षौं ना ज य द ह्रूँ र य्र व हि श्वि प म दं नी हूँ रुँ स दा न का र ल्वी मीः

ह्मः हः ह्रू वृ दः न या ३ स्वा ॥ यज्ञनं ॥ ॐ ग वृ ड व ज्ञ अ ये ३ ॥ ॐ ग व व ज्ञ अ ये ३ ॥ ॐ ग व ज्ञ आ ग्न
ये ३ ॥ ॐ ग वे नु ना य का ये ३ ॥ ॐ ग व ज्ञ अ ये ३ ॥ ॐ ग व ज्ञ व ले ३ ॥ ॐ ग व नु नृ पि न्ये ३ ॥ ॐ ग वै
जु गि व ज्ञी का ये ३ ॥ ॐ ग उ य व ज्ञ अ ये ३ ॥ व उ ग न सै य सं ॥ गयत्री ॥ ॐ ग का त्वा य व नाथि
य दृ कन्या का मा नी धि स दृ ग ता ३ जों य वा द या ग्न ॥ ॐ ग म्बु जी उ य व ज्ञ रु ह्य
न का य या ३ की य रु या मि ॥ ॐ ग भुं त्रा लि छि या स ज्ञु व नी ः ः द व लि ग स्वा ३
स्वा हा ॥ नां वा रु ना दि या ति सु दा ह ड ग य न्न ॥ ०० ॥ गि उ य व अ य जा ॥ ॥

गमा वाग्यश्वरी पूजनं ॥ ॐ ग यस्मा स न्नाय याइ का ॥ ध्यानं ॥ ॐ ग नक्त वर्लु मदा मगा द्वितु
गा सा रु ना न नं ॥ शिनशं ब बि ला ना द्वि. ब न दा रु य या लि नं ॥ य य ह्म द ब शि मृ द्वि स र्वा:
गं ब्र नरु बि गा ॥ म न का द ब गी या श्र. ध्या य मा भ न मू र्लि नं ॥ ध्या न पू र्वा या ३ की ॥ ग य
ञ्जलि ॥ गिं कि ठि गिं कि ठि कू म कू लु वा श्य श्व री व र्द्ध म द का नि का बि श्व पा ३ की ॥ श्रु
दे व लि ग्न ह्र श्वा हा ॥ आ वा ह ना दि. या नि मू ला उ र्भ य स्तु ॥ ००ग वा ग श्व री पू जा थ ॥
गमाकन पूजनं ॥ बक्राजनं ॥ ॐ ग म त्मा शि अ वा उ श्र ह ग य स्त ब ग यू न धा धू प पं पू ल स्कृ

भायमह ओणगनबदि कमस्याङ श्रीविनीय ॥ जाभनह्नानयत्र्यबतछगकवः
ष्याय ग्रकाला समगं मष्या ह्न कर्मबक्र शुरुग्रु नदद नेंस्मयादान कलक्ष्मी ॥ ॥ ग्रेंग
जाभनज कमयाइकां ॥ जा का स नाय याइ कां ॥ कन्या स नाय याइ कां ॥ नत्रा स नाय या
इ कां ॥ यत्रा स नाय याइ कां ॥ कस ना स नाय याइ कां ॥ कस्रिं का स नाय याइ कां ॥ यथाः
स नाय याइ कां ॥ ग्रेंग बडम छु नाय याइ कां ॥ ग्रेंग बडमद नाभिषनय ब्रक्षत्र ना स ना
य याइ कां ॥ ग्रेंग लहूर्यम छुलायइ ॥ ग्रेंग लहूर्यम छुला भिषनय विहूथ ना स नाय याइ कां

|| ऐं ग अग्निमण्डलाय ३ || ऐं ग अग्निमण्डलाधिपतये वह्निध्र नाम नासयाइ की || ऐं ग अर्क्कि

मण्डलाय ३ || ऐं ग अर्क्किमण्डलाधिपतये ०॰ ध्वनध्रु नाम नासयाइ की || ऐं ग ब्यमण्डलाय

|| ऐं ग ब्यमण्डलाधिपतये सदाशिवध्र नाम नासयाइ की || वृ नाम नासयाइ ३ || सितागनायाइ

|| ऐं ग सोंम्यां सावह्निध्र नाम नासयाइ की || ०॰ त्यासन || ध्यान || ऐं ग नीलवर्ण्ण वाननानिल.

न्ध्वं वर्य्यक सेहि गं १ || ध्विनस्रु वर्ष्वद जीया. नलस य्याङ्कि वश्चिगं १ || वह्नि नारिङ्कि

नास्त्राकृ. दृ गांत्यु श्वागिरें नवा १ || कहना लागन्ध्या प्रों हृ. का श्री कगिस्रु हास्य वान || वि

त्र कुलं चक्र ध्वजा. द्वानं व दम्भ वा कुरिश ॥ पानि आनजा पमा ला. पूर्ण कारुण्य कंके गे ॥ भू
न्य ह्रा कृद्व या त्वा सू. कव र्म्मा वूनविग्रद्द ॥ दवा वूनअं भ्रा नव. स दे व श सहिं नं नवश ॥
प्रसंगाद सूत्र माना. म र्थं नद्द कम वूव ७ ॥ ॥ ते ग नी ला ॐ न म भ ग वा क्षा. कृ पित्र
मा म ह्ला द नी ॥ म द्व क्रा ह्वा द अ तु आ. स र्या हि न ल व र्ष्णि गा ॥ मृ तु मा ला प लि यो जो. दः
ह्मा क ना लि का न ना ॥ सू क्ष्मा द अम्बि का द वी. व ह्रं ना र्ध जि ला नू हा ॥ व्या छ्र व र्म्म प नीः
मना. हिं ला व र्म्मा लु नी य का ॥ द वा रुव न तु पा ङ्गी. नू ह ला र्यं व लु सि नी ॥ न त्या या नेज

तवक्त्रा. मूर्द्धनेस्थाम सतिनिरु॥ दक्षिणकृष्णवर्णं च. गतामूखवयदर्शिनं॥ पूर्व्ववक्त्ररुः
द्रवक्त्र. पीतमउज्ज्वलं हृटि कायमं॥ तदग्रसूर्य्यसंकाशं. उर्द्ध्ववक्त्रायनार्च्चितं॥ पीतवक्त्रयव
वामच. दक्षकर्णु ग्रूजिष्ठयि॥ नासाग्रविलतवृतीच. गलक्षयिक्रमालर्कं॥ शिनाविस
दालसयं. गमवक्त्रं च वीमयहृ॥ जलसोम्यचवामाता. पूर्व्वचक्केदेकर्णुग॥ यानाच
क्रामूर्द्धदशं. गमर्म सूकयनाहिदं॥ सर्व्वदक्षकायालानि. वक्त्रान्धूकानिसंरूना
॥ नूक्षालयस्यापवऊमिकृष्णिकायामसाहिच॥ दक्षिणनयस्यागच. वामसवविजा

श्री २ ... श्री ... जनक ... ध्यान

नथ॥ ति गूलीं व क्रु व ज्ञानिं दक्षि ज बा म गा यं श्रीं॥ नी ला ल्वे ले म ना लकं भू न्वों व म गु

स्व द्वा गं घ ज यू स्न कें म नू स्ले थ्या॥ कु या लीं बा म कु ग्रा कुं ति ला म न म बा म ना॥ ज दं ध्या ल्वा

म स्ला द ग्रा ध्यां ल्वा ति ङ्ग जि मा न व य॥ ग्र सं ग्रा द ल्ल मा गा ता म थ्या न द क्रु मा ख बी ग्र॥ ॥

ॐ न क्षां क्षीं जू सु विं ज जि क मं द व द वी स्था ध्या न यू र्यं या इ क्षी यू ज या म्नि॥ या य

भा व क्षूं क्षैं म नी य न म॥ जू घं न म॥ ह्मां नं न म॥ जू ति म ना नें न म॥ च ल नीं न म॥ ॐ

ति द क्षौं क्षः नें न म॥ जू कु व न म॥ यू खीं न म॥ श्री या ॐ लिं॥ ॐ न जू धा त्र कों थ ध्या व

त्ता घातय घातनगत्र हूं फ्रं सर्व्वगतसर्व्वसत्वेज्ञ ह्रः १ ज्ञों नृउत्रूपज्ञः १ याइका ॥ ऐं गनें वज्र
कृध्रिनाक्रूं गेता क्का कर्व नोज्ञो कामीं गड्राव नी ह्लीं स्त्रीं गसा का रुका वनी ऐं सोंस १ श्री
याइका ॥ ऐं ग नमारु गवति ह्रूं कृध्रि काय ज्ञां ज्ञा हूं घा वज्र घा गज्र घा नाम खीं च्यीं च्यीं
किनिरवि श्वर्याइका ॥ ऐं गन मारु गवति ह्रूं कृध्रिय ह्लां ह्लूं हूं फ्रे नल गज्र घा ना
मूसी ह्लां ह्लीं किनिरवि श्वर्याइका ॥ ऐं गन मारु गवतिसिद्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं यकृध्रिक ह्लां ह्लूं
ह्रूं खरा ऐं घा गज्र घा नामूसी ह्लां ह्लीं किनिरवि श्वर्याइका ॥ ऐं ग ह्र श्रीं घा नक्ष
काइ

क्लि रु न वा न न्द वि ना थ य न य श्रीं पा दु कां पू ज या मि ॥ ऐं ग श्रीं आ न न्द अ क्लि रु न वा न

न्द वी ना थ य न य श्री म हा वि द्या श्रीं ना ऊ ध्व नी श्रीं पा दु श्रीं कां पू ज या मि ॥ म ल य

ऊँ ग ल शै य न्त्रं ॥ आ वा ह ना दि ध्य नू श्रीं या नि म ज ड श्रीं न्य य ग्र श्रीं ॥ ॥ ऐं ज श्री गु ह्य वि म

न या गि नी त्या पा दु कां पू ज या मि ॥ ॥ ग णा त्रि का श्रीं स म ध्य य ज नी ॥ ऐं ज स्लूं श्री य व ध्या

व ला दे वी श्री म हा ड ष्ट क च पा ल श्लौं क्ष ग इ त्य श्री ओ दि या न म हा मू ला पि ठ श्री ओ दि य ना

थ दे वी श्री न क्ता वा [illegible] वी श्री आ क्ष नी आ न न्द दे व श्री कु का वि म र्द ना पि का व र्म श्री क द म्ब

क्ष श्री उदयगिरि पर्व्वत श्री वटुकनाथ क्षेत्रपाल पद श्री कुब्जिकानन्द देवपाद का पूर्वा
त्रंज क्ष्म्ल्यूं वज्रद्वार पद्मासन नाम्ना देवी श्री सुगन्धि क्षेत्रपाल श्रैं श्री ग गायत्री श्री जातिधर्म लाभ
ज्ञापि ०श्री आ नाम्ना देवी श्री आतिज नाथ देवी श्री कलान म्ना देवी श्री कुलत्रि मातकः
देव श्री कुक्कालि मर्द्दकानिका वृ क्ष श्री कामरवि क्ष श्री दासगिरि पर्व्वत श्री यमदण्ड क्षेत्रः
पाल पद श्री कुब्जिकानन्द देवपाद का ॥दक्षिण॥ त्रंग म्लूं जलन्धर पीठ कदम्ब नी देवी श्री योः
पान क्षेत्रपाल श्री श्रीं द्वार पन ऋग श्री पूर्ण्णगिरि महासूज पि०श्री पूर्ण्ण म्ना देवी श्री पूर्णि

गनाथदेवी श्री वज्रेश्वादेवी श्री वक्रि आनन्ददेव श्री कुब्जि का(कु)मि महं गानिकाचक्रे श्री वि
च्छिवि चक्रे श्री जूननगिरिपर्वते श्री विमल क्षेत्रपाल नूय श्री कुब्जिकानन्ददेव पादुकां ॥ ३
कमा ॥ ॐ ऐं ह्रूँ श्री नवत्वी पयर्मादेवी श्री महाकाय क्षेत्रपालपां श्री कलियुग श्री कामरूप
महामुद्रा श्री पिठ श्री कामविजयास्वादेवी श्री कामिसनाथदेव श्री महाकुस्वा स्वादेवीः
श्री मदिवि आनन्ददेव श्री कुकानि महं गानिकाचक्रे श्री विल्वचक्रे श्री सामगिरिपर्वते श्री
वज्रदेवु क्षेत्रपाल नूयाक्षिग श्री कुब्जिकानन्ददेव पादुकां ॥ ज्यास्त ॥ ॐ ऐं ह्रूँ श्री महानवत्वी

पथर्म्मादेवीश्रीमहाकालयक्षयपावश्रौंञूवगानयूगश्रीपनींपनवन्दवी७श्रीवड्डिल्पोस्वा
देवीश्रीवद्धिसनाथदेवीश्रीमीनंञ्जिन्यस्वादेवीश्रीञूमवलिश्रीमनूगिलिवर्द्धगश्रीविज
यनाथक्षत्रयालमर्द्धव्यापिस्रञ्ञीआख्यागिनश्रीकूप्निकानन्ददेवयाइकां॥ पश्चिम॥ ॥
म॰श्वतिक्षानव्यापिगयक्षुपि७स्यावलिग्रह्न२स्वाहा॥ यक्षिपिठिकं॥ ७॥ ऐंगञ्चदिवि
मल्पदिश्रीमार्गस्यअविमलयक्षुकस्यायाइकां॥ बलि॥ विमलयक्षकं॥ ॥ ऐंगमर्दगा
लिकादितातियक्षानश्रीयाइकीं॥ पूजयामि॥ बलि॥ त्रिगजतिवद्धाणयूक्षः॥ ॥ ऐंजमनाय

गादि श्री पादुकां पूजयामि ॥ बलि ॥ पूर्वादिक्रम स ॥ ॥ ऐं ५ क्लिं काथेअख्यानन्दादि पं:
वकस्थापादुकां पूजयामि ॥ बलि ॥ ॥ ॐ नि पूगवउक्षाग्निकालं ॥ ॥ ऐं ५ जूं कुलाया:
नन्दादि पं वक्रस्थापादुकां पूजयामि ॥ बलि ॥ जकुलादि पं वकं ॥ ॥ ऐं ५ ॐ स्वायि वृद्धक
र्मानन्दादि श्री पादुकां पूजयामि ॥ बलि ॥ ॐ ग्रादि वउर्ष्ठं ॥ ॥ नगक्रु वक्ति पजनं ॥ ऐं जर्द
सूर्यमण्डलाय धातनकलात्मने पादुकां ॥ पूर्वउर्द्ध लक्षपायीं ॥ ऐं ५ सं सौं स मण्डलाया धातउ
कलात्मने पादुकां ॥ दक्षिण लसःक्ष लखायां ॥ ॥ ऐं ५ नं ज्रूं ग्निमण्डलाय दत्तधर्मकलात्मनेया

इ कां॥ उर्ल्ल न जु थ १ लखाया॥ ॐ पिस्नु बपिपूजा॥ ॥ ऐं ग जुं जूं ॐ ॐ उं ऊं गं गां ॐ ॐ नं नं ओं
औं नं जू १ श्री ल ता ८ ब्र या ग जा खा थे ब्र म्हा ल्वे सर्व मंगला थे ब्र ण्याथे ॐ ह्रु जु म्ह रु ल वाः
या ब श्री या इ कां पूज यामि॥ वलि॥ ॐ पिसू ह्र य ग स॥ ॥ ऐं ग ग न ना त न्दा दि न व ना
थ श्री या इ कां पूज यामि॥ वलि॥ ॐ पिन ब ना थ॥ ॥ ॐ ज श्री सूर्या न न्दादि भाउ स प वः
ह्नि ग द व गा स्था या इ कां पूज यामि॥ वलि॥ भा द स व ग स॥ वाह्मः ऐं ग श्री कु ता ये व स वा न
न्दादि भा द व य साह्नि ग द व गा स्था या इ कां पूज यामि॥ वलि॥ भाउ स व ग यू घादि ॐ भा न

र्को॥ ॥नगा॰आक्षतलवउ क्षाग्नि क्रा॰नपूजनं॥ भूग्न॥ ओं अ कौं क्रउयानायया इकी॥न
न्वा॥ ओं अ गौं गनयनयया इकी॥ वायव्य॥ ओं अ श्रीं औं वद्रकलाथयया इकी॥ ०॥ जानं॥ ओं
अ यौं याणिनिस्याया इकी॥ ०॥ त्याक्ष न न कालपूजा॥ ॥नगाद्वानपूजनं॥ ओं अ लूं ०॥ क्ष्मा
पिदगसाकयानस्यायाइकी॥ पूजयामि॥ बलि॥ ॥ओं ज क्षा नादिश्रीयाइकी पूजया
मि॥ ॥ओं अ क्ष्मौं जिवनत्वाषिकालयनाथेयाइकी॥ ओं अ नू घान क्षौं क्ष्म ४ यनमघानक्रूं
घानामूख्वारिमहिमलीवमरयिव२नूनू२वन२रुरु क्ष्मौं क्षूं रुरु विद्यानत्वाषिकानव

नाथ पादुकां॥ ऐं जूं ह्रौं क्रूं सौं क्ष्मौं स्त्रूं नामस्तम्बिकाम्बनाथ पादुकां॥ बलि॥ ॥दम

नकनपूजनं॥ ऐं गं क्ष्म्रौं नकावनलश्री पादुकां॥ ऐं जूं ह्स्क्ष्म्लूं गूकावनलश्री पादुकां॥ ऐं जं ह्स्खूं स्त्रूं

पनमतारुवमित्र वनलश्री पादुकां॥ ॐ त्रिवनलपूजा॥ ॥ऐं जं क्ष्मौं म्लौं श्रीमल

विंमलिकर्मह्रदानकाथदवदवीस्या पादुकां॥ बलि॥ आवाहनादि ... खन्या

निमूडाउर्थयनू॥ ॐ त्रिज्ञाख्वाविंमलिकर्मपूजाविधि॥ ॥पगति खड्गपूज

नं॥ ऐं गयस्त्रणासनाथ पादुकां॥ ध्यानं॥ ऐं गविरस्त्रबविंवक्राव.दिवाचूपामसादवा॥

त्रित्रिकनयनेयुक्ता. मन्दिवानन्दनन्दिगा ॥ पूर्व्ववक्त्राजगवङ्ख्यंरा. दिमकूरुद्रूसंनिरा ॥
दक्षिणकृष्णवर्णाभ्यां नक्रमूलनशारिणी ॥ प्रसन्नवदनं सौम्यं. किंचिल्लम्बिनितम्बकां ॥
दिव्यानलसमाभासां. क्रूरां कुण्डलरूपिणीं ॥ त्रिशूलं कर्त्रिकां खड्गं. दक्षिणभुविनाजिग
॥ दर्पणस्फटिकाकार्यं. वामहस्तेषु धारयेत् ॥ यमपद्मासनानूरा. त्रिरत्नमयनमस्त्वनी ॥ दि
व्यवस्त्रपरिधाना. दिव्यानेकानरूपिणा ॥ नानापुष्पलतास्वद्वी. नानागन्धनमान्वितां ॥ दः
दिव्यक्षमहाशागा. सार्द्धवक्त्रवविष्णिगा ॥ ध्यात्वा त्रिरत्नावयवनमस्थानस्फुरंसी ॥ सूतग

सर्व्वपापे ज्वदानिंददूखवलगने॥ आनयूर्थ्यापाइकां॥ मन्तुखलु॥ ॐ ग ह्रौं श्रीनूउखलमाऽ
पिखनुमक्रखनुपिबअरुहानीकाथयाइकां॥ वतियरुक्रश्लाहा॥ ज्ञावादनादिपि
खलुमूजादर्गयनू॥ ॐ पिपिखलुमूजा॥ ॥थनमलक्ष्मानयूजनं॥ ननावालन्याम॥
पूनसिम्रान्याप॥ ॐ गजिवगत्वाधिकानह्मौंयानास्रिलसपाइकां॥ ॐ ग[illegible]मगत्वाधिका
नॐक्षौंङ्कूंञ्जंह्मौं रुटू नूपनायहृदयायवयाइकां॥ ॐ गजूघानक्षौं यवमघानङ्कूं घानन्
थङ्क्र१घानामूक्षीरीमसीमलीवमरपिवरनूनूरनवरुटू विद्यागत्वाधिकानयना

पनाशंगु स्कन्ध नयाइकाः ॥ ॐ त्रित्रिविद्यान्यास ॥ ॥ ॐ नमाभग ३ कय याइकाः ॥ जूनकास
नायया इकाः ॥ कन्यास नायया इकाः ॥ नयास नायया इकाः ॥ पयास नायया इकाः ॥ कस नास नाय
याइकाः ॥ कन्तुिकास नायया इकाः ॥ पयास नायया इकाः ॥ नाथमन्दलु लायया इकाः ॥ वजुम
ण्डु लायया इकाः ॥ वजुमण्डु लाखिपगय वज्रकप गास नायया इकाः ॥ सूर्यमण्डु लाखिपगयवि
कूप गास नायया इकाः ॥ जूखिमण्डु लाखिपगय कूदथ्र गास नायया इकाः ॥ वकमण्डु नाखि
पगय ॐ स्वनथ्र गास नायया इकाः ॥ अकिमण्डु नाखिकसदाजि वथ्र गास नायया इकाः ॥

व श्रू व णा स्त नाय या इ का ॥ व मा स्त नाय या इ का ॥ सि ला स्त नाय या इ का ॥ न मो क्ष न ॥ ॐ ग वृष
रु र्ह्रि ह्रि न दव, स्व व र्लु न्य मा रि र्न ॥ ए क व क्रु ति न स श्रू स्तु जा ह्ला द स क्षा नि र्न ॥ उ म नू व
व ह्ल च्चा नं. स्व ज्ञ म क्ं स व ज कं ॥ ए कं व क्रुं ति म न श्रूं ॥ र्नं स्व श्रू चो न वा झ श्रू. जू रु या रु व
द क्षि ल्ली ॥ व न दा व न दक्षि ल्ल. वा म स्व दा ञ नू त श्रू ॥ ध नू रु त क वा ञ र्द. व न्मो क या त वे
न श्रू ॥ जू रु या रु व दक्षि ल्ल. व ह न वि थि र्नं आ नू ॥ वा मा नू ह्म व द व मी. ए क व क्रु ति न प
श्रू ॥ जू नू ल्ला व र्लु व ल्ली ना ड्वि स्तु जा व न दा द वी ॥ सिं ह न्मा रु य स चं जु. ना ना रु य न सा ः

सा घा ‖ सनक्त नेवन क्तनें हन वा नद्व नु यायी ‖ अ ड्डा अ ल प्रक्षि त्रि ना. अवें ध्या खा मला

दवं ‖ क्षि यसि ध्रिद्र क्षि मान वा. ध्या न पू षं पाइ क्ता ‖ पि या ऊ ति ‖ त्रें ग जू घा न जां थ घा न

क्रां घा न घा न न न क्रूं रं सर्वनमर्व ऊं इंम: जां नूद नू पजा १ पाइ क्ता ‖ त्रें ड वज कुष्ठि नी क्षुं

अ ला क्ता क थं नि ऊं का मीं ग डा व नी क्षीं स्त्रीं म ला क्त रु क्ता न नी त्रें सीं म: श्री पाइ क्ता ‖ त्रें ग

न मा रु ग व नि क्षुं क्रु ष्टि का य जां ऊं क्रूं घा न जू घा न जू घा ला मू खि ख्रां क्षां कि नि र वि श्र

पाइ क्ता ‖ त्रें न न मा रु ग व नि क्षुं क्र ष्टि क्ता य क्षुं क्षुं म्हूं ८ ऊ न न म जू घा ना मू खि खां क्षां कि

निरविर्र्व्वयाइकी॥ ॐ ननमास्फगवगि क्रूं क्रूं कल्कि कं स्रूं स्रूं स्रूं वक्षै या नेत्रू षा नत्रूषा

नामूर्त्ति ह्रां ह्रूं क्रि निरविर्र्व्वयाइकी॥ ॐ ग म्रां आनन्द अर्कि रुनवानन्दविनाथिव

नयम्रां याइकी॥ ॐ ग म्रां म्रानन्दगकि रु नवानन्दविनाथिवनयम्रां याइ

कीपू म्रू अयामि॥ म्रूं ॥ नगपिकालगू गयूजनी॥ सावाम॥ ॐ ग क्रूं म्रूं मास

माय कुञ्जिकाशिविम्रू सावक्ष ध्वनी श्रीयाइकी॥ ॐ ग जूषानजां हरार जा म्रू नमः

लाथिवनयक्षियाअक्षियनायनिर्व्वानरान्दनादवाश्रीयाइकी॥ दक्षिणमृग॥ ॥ ॐ ग

यनमध्यान ह्रँ धानामू स्वा हिम हि व नीव म र पिव रह स्व न र नू नू र ओँ कूँ ऊँ स्हँ ठ स्हँ विः
या ग स्वा षि य ग य ह्ला न ज कि य ना थ नि र्वा न का ति का द वी श्री या र का॥ ज्ञ र्वं ज्य॥ ओँ ग कूँ
ऽर्घ ग ला षि य ग य ॐ स्ना ज कि नू य ना थ नि र्वा व ति का ति द वी श्री या र का पूज यामि॥
गणाति का न याञ्ज॥ ॥ऐं प श्री ज या दि द व गा स्वा या र का पूज यामि॥ ॐ गि य या दि॥ ॥ऐं
ज ऊँ ओं नू जि गा ग दि ह्रू रू न वा य या र का पूज यामि॥ ॐ गि नू जि गा जा दि॥ ॥ऐं ज व मा:
न्या दी व मा ए का शी श्री या र का पूज यामि॥ ॐ गि व मा न्या दि॥ ॥गणा ३ ति व लि पू जा॥

ॐ ग सं स लाय या इ क्की ॥ ॐ ग नं न लाय या इ क्की ॥ ॐ ग गं ग लाय या इ क्की ॥ ॥ गणा बा ब्र चउ का
ग्नि काल पूजनं ॥ क्षेत्र ॥ ॐ ग क्रां क्रीं क्रूं क ग पा ना य या इ क्की ॥ नैऋत्य ॥ ॐ ग गैं गैः गूं न कूलम्
ल ग्ब ना य या इ क्की ॥ वायव्य ॥ ॐ ग श्रीं क्रीं कू ल पूर चउ क ना थ य या इ क्की ॥ ॐ ईशान ॥ ॐ जं जां
या ग्नि ल्वा या इ क्की ॥ ॐ भिव उ क्कल पूजा ॥ ॥ गणा ना क या न पूजनं ॥ ॐ ग ॐ ल्हाय व ज द्रः
ला य स्लू ना क्षि य न य या इ क्की ॥ जाज्व न ग कि द ला य ग जा क्षि फ य न म ॥ य मा य द न्द द लाः
य य ना क्षि फ य न म ॥ नैऋ ला य स्व ॐ द ला य ता क्ष ता क्षि फ य न म ॥ ब नू ना य या स द ला य

ॐ लांक्षि कयनमः ॥ वायव्य श्वजद्द लायय नाथि कयनमः ॥ कूवनायगलाद्द लायधना:
क्षि कयनमः ॥ ॐ सानायत्रिजूद्द लायरूनाथि कयनमः ॥ जूलायवज्रद्द लायनागथि
कयनमः ॥ ॐ व्रकनयमद्द लायल ग्योंथि कयनमः ॥ ॥ गणाज्ञानादिमध्यगेयज
न ॥ ॐ जज्ञानाथयाइकी ॥ ॐ मच्छ्वयाइकी ॥ श्री कथाथयाइकी ॥ ॐ ग क्रूं नजुवनाथ
याइकी ॥ ग क्षौं मक्षयाइकी ॥ ॐ गिज्ञानादि ॥ ॥ ॐ ग क्ष्म्लौं जूनन्दगकि रूनवानन्द
विनाथियनयत्स्म्लौं याइकी ॥ ॐ ग स्म्लौं जूनन्दजकि रूनवा म्लौं नन्दविनाथियगयाश्री

महाविद्यानाथ्वरी ॐ श्रीमूलक्ष्मनरुद्रानकायपारुकापूजयामि ॥ वलिग्रहकरस्वाहा

॥ जूवाद्दनादि.ध्मनू थानिमूडारुर्जयपत्र ॥ ॐ शिवश्रीममूलक्ष्मानपूजाविधि ॥ ॥

मगासिद्धिनक्षापूजं नै ॥ न्यासम ॥ ऐं क्लां श्रीं खुं जा क्ष नादिमूसूपूकिकासनायपारुकी ॥:

ऐं ह्रीं यां खुं श्रीमहानूरु त्रगासनायपारुकीं ॥ क्षन ॥ ऐं ह्रीं श्रीखह्रीं गकूजयाजगूलव

नरुह्रीर्जीलयार्वगीन ॥ कूरुपासिद्धलिनरुटुर्जुआवनभासाममानांसिवा ॥ नूदक्लध्यग

लाजन[illegible]जिनिसं यींवानर्नांहूब्दनी ॥ यंवश्यक्रविनाजिनां.रुगवपिश्रीसिद्धिलक्ष्मी

हउं॥ ध्यान पूर्वयाय रंकी पूजायामि॥ ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रं ॐ क्रों नमः श्री सिद्धिलक्ष्मी ध्वनीयाय
की पूजयामि॥ वलिग्रह्रः रक्षा हा॥ आवाहनादि यानि मूजाउ र्थयन्न॥ ॐ श्री सिद्धिलक्ष्मीय
जा॥ ॥ गमागुं क्रान्ति पूजनं॥ ध्यान॥ ॐ ह्रं आध्यानादि जूवपूङ्खि कासनीयाइ की॥ ॐ क्रोम
हाह्र नवथगास नायवयाइ की॥ ॐ ह्रं श्री ह्रूं ह्रं म हाजि वासे नायवयाइ क्षी॥ ध्यान॥ ॐ ह्रं व
ध्यादिय वकयूनं गुलिदिय्य गीनीं॥ माल्लु सूरु नवलिवायनयान लपू॥ ह्यों नेर्ह्लगदमः
नमक्रूद विद्धमाग॥ यथाक्षि गीरुगव गीयनमाद आस्यां॥ सिंहरुका लक विअक्षरुवीग

गाक्ष ॥ याग्रजवामकमानवयक्तिवक्रा ॥ जूलीकृसायवगूमृअवयागयार्गं ॥ खद्वाङ्गवा
लकृडिमकृनयानियर्यां ॥ ॐ ह्रूं गुह्यकालि ध्यानपूर्वा याइकाँ ॥ ॐ ह्रूं सिद्धिकालाती
ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्त्रीं हूं नमः स्वाहा श्री गुह्यकालि याइकाँ पूजयामि ॥ ॐ ह्रूं दवलिग क्ष्म स्वाहा ॥
नृ वादनादि तुयानिमूजा ॥ ह्रूं रु ह्र काम्भनम्बलि दोमूजाड गयम् ॥ ॐ ह्रूं गुह्यकालि
पूजाविधि ॥ ॥ ॥ गणाधिप नमस्कार पूजनी ॥ न्यास ॥ ॐ ज ॐ क्षीं श्रीं
नृ क्षनादिजू पुयू ष्ट्रिकासतनयाइकाँ ॥ ॐ ज यवथ गासनायया इकाँ ॥ ॐ कामनूपया अ

स नाथाय नमः ॥ क्लीं पूर्णगिरिपीठ ओम नाथाय नमः ॥ सौः जालन्धरपीठ ओम नाथाय नमः ॥ ऐं क्लीं सौः

ः महारुद्रालिङ्गज्ञानपीठ ओम नाथाय नमः ॥ ध्यान ॥ ऐं क्लीं श्रीं ऐं क्लीं सौः मानिक्यरचिमा

नू रत्नचित्रयुनाथवज्रार्द्धं प्रत्ययानाद स्फुरद्धक्षमीं अनासनसनायाभ्रीकुलमौविभ्रमिं ॥ नः

कौशीमविनाजिनीसूवदनीहत्वकुञसहिनीकामाकअवर्यचिनी [illegible] मवर्पिंक्षाय

लनासुन्दनीं ॥ दक्षसाहादक्षानीमूर्वविगगनकन्याअस्माश्मक्षरूवालींयंत्रालानीन

नगगनकन्ययीकुजक्षासनाक्ष्मीं ॥ नकौवस्रुदक्षनीं स्फुपविपूजाकलीयोवनाश्रीसन्धवीं

न क्ष्मीं न क्लीं हुं फ स्वीं द सिद्धिविधिमकुलाय स्वयादीरुजली || वानार्के मनुलालासीं वउर्वाः
कृति सावनी || या ओं कूगगवाः स्थायी भनयाकिमिवारुज || यनायवाभियवदवमाय
भनवृषीयाइ्कायुउयाभि नम || ऐं यानिमूवउवेयमू || उग्रचण्डनी || त्रें क्रों श्रीं त्रें क्रीं सौं
क्ष्मूं क्ष्मूं मूं श्री मसाचियवनमन्दनीदश्रीश्रीयाइ्कायुजयामि || उग्रकाली || त्रें क्रों श्रीं त्रें क्ष्मीं
जूलियवक्रकामगियोनयभिसिआनन्दनाथलिकश्रीकामरवनीदवीर्थ
श्रीन ज्ञानमनकिश्रीयाइ्की || त्रिकालदक्षिणी || त्रैं क्रों श्रीं क्रों क्ष्मीं सूर्यचक्रजालेश्वरयाः

वसी आनन्दनाथलिक श्री वक्रन्वनी दवी विष्णुतमनक्ति श्रीयारकां॥ त्रिकानवाम॥ ऐं क्रीं
श्रीसौंऽ म्लूं सामवक्रपूर्णेगिरागन्धनऊत्रि आनन्दनाथलिक श्रीरुगनातिनि दवी श्रीर
वस्था क्तत्मजक्ति श्रीयारकां॥ वक्रनायिका॥ ऐं क्रीं श्री ह्रीं क्ष्म्रूं सौंऽ श्री विदनस्थावक्र
न्वनी यारकां॥ वेन्दवक्रायनम॥ ऐं क्रीं श्री ऐं क्रीं सौं सर्वगआस
यस्थामवक्र उड्यानपिठरयानन्दनाथलिक श्री महासिद्ध
नस्तन्वनीदवी यर्तवस्थात्मनक्ति श्रीयारकां पूजयामि॥ ऐं क्रीं श्री ऐं ह्रीं सौंऽ म्लूं ह्स्रूं ः

ह्स्ख्फ्रें श्री महाशिवयूवनसहनीमहारुद्रनीकाय श्रीवज्रवज्र श्वनीश्रीपादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें
ह्रूं ह्स्क्लीं ह्स्क्लौं १ शिवयूनरुनवीवज्रश्वनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥ ॥ त्रैयाग्निमुद्रा ह्रूं
दर्श ह्रूं ह्रूं ६७ ॥ थनक्षात जीन शिवयाजु ली ३ ॥ श्रीं ऐं ह्रीं ऐं सौं ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्क्लीं ह्स्क्लीं सौः ४
ऐं ह्रीं ऐं श्रीं पादुकां पूजयामि ४ ॥ बलिग्रहण २ स्वाहा ॥ आवाहनादि ह्रूं ह्रूं ऐं यो
निमुद्रां दर्शयेत् ७ ॥ ॥ ६ शिवियवनसहनमापूजाविधि ॥ ॥ नमाम ह्रूं आम्नाय
पूजनी ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्स्क्रौं ह्स्क्रीं ह्स्क्रौं पूर्वाम्नाय श्रीसमयादेवी नृत्यकि श्री ख्फ्रें श्री श्रीपादुः

कां पूजयामि ॥ ऐं ह्रां श्रीं ऐं ह्रीं सौः ऐं ह्रीं ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें समदवकुलु ख्फ्रौः दक्षिणाम्नाय श्रीसमयाः
देवी वृञ्जलानि थ्वना श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥ ऐं ह्रां श्रीं ख्फ्रां ख्फ्रौं ख्फ्रुं ख्फ्रौं रुगवः
णि नू ख्फ्रां ख्फ्रीं ख्फ्रूं स्त्रां स्त्रीं ख्फ्रौं ख्फ्रीं कुष्ठिक ख्फ्रां ख्फ्रीं ख्फ्रौं खगेन्द्र पादुका पान
जू थ्वा ना पूखी ख्फ्रौं ख्फ्रौं ख्फ्रं किनिकि निविर्द्धसौः ख्फ्रूं ख्फ्रौं
ख्फ्रौं ख्फ्रूं पश्चिमाम्नाय नीश्री कुजगनाथ कुजननाथी श्रीपादुकां पूजया
मि नमः ॥ ॥ ख्फ्रूं मसावउ यागंथ्वनी ख्फ्रूं मजखस्व नमहावनतयअगंजमव

रि त्रखा सफदं गीकला कालगासंकृ णागि उरु म्हा यश्री तमायादवी कालनाजीजः

नारवा नूयारुसा म्हा श्रीयापू ॥ सों १ यनाविश्या श्रीयापू ॥ जूकरी कजर्गोका स्य ॥ पाक्री

बल्ठ का लावगी ॥ मूजापूल्म त सघा दा याए मीयनमाकला ॥ क्रीं १ यनायासादविया:

श्रीयाइ कांपूज यामिनमः ॥ ॐ ॐ ॐ म र्व वबुज्ञकिनीयवजव र्जु नीसवजवथाव

नीयहूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा ॥ ॥ थननिर्व्वालयाय ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्ष्रौं क्ष्लौं क्ष्रुं नकवनल

श्रीयाइ कांपूजयामिनमः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्ष्रूं क्ष्लौं स्फ्रुं जुक्र वनवमश्री याइकांपूजयामिन

मः॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं यवनम अमृत ऐं मि अ्रव न म श्री पादुकां पूजयामि नमः॥ ऐं
ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्सौं ख्फ्रें श्री यग्निम निर्घामल श्री पादुकां पूजयामि नमः॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्सौं चां
ह्रीं ह्स्रौं ख्फ्रें ति श्रीं ल व नानन्द नाथ श्री ति श्रीं ल वी ग्रकि सद्दि नाय पादु
कां॥ पूज यामि नमः॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्सौं: सा र्धवि काना

थ श्री पादुकां पूजयामि नमः॥ वलि क्रः स्वाहा॥ अ
यन्॥ नि गेउ नायविय ह्न. ति ना का नाय धी मद्धि. न श्री सूनाव थाद या० । आवाह

नामी कावनिमूशाद्रणँयथू ।। ।। नमानिक्वो लयायावविधि ।। ॐ ।।

थनधानैँ मधमानैँ मधकायाव मतलाउवतिँ तिसधया ।। ॐ नमः श्री याइकः

त्वा नम ।। तँ गन्नजन श्वा यदृसृ ॐ अ श्वा नस्थँ व व ।। ॐ श्री न्द्रु मलिँ वड का श्वउ

खाकेतिमूसूदन ।। अमृकु ६ फे काय श्व ६ ला या ख्या मर्दँ हुकै ।। ते ना व ग श्व आ घान

आवधी सग खयनै ।। बृकँ का लृ थँवा दृश्व क म लबु कलानन ।। स्याम खश्वे व घ श्व

गादनन श्वउ खनक ।। बृ दा मा ना उ मा नाख्या ले को ना उरु ६ श्व न ।। ६ कायानी

५

म थ वा न्य स्था नू [illegible] व्रता म न॥ [illegible] क [illegible] न दा का र्न नदि क थ वि न ल्ति था॥ द वु ना

म न य ग्वे व ना ग क र्ण य व नु वा॥ [illegible] त्वा नी ना न र्शि द ग्व [illegible] कृ टि म घ वा सव॥ ष

ग न नी न व ग्वे व ल श्वा श्वा व त्त न ल्ति था॥ लु क ख लु स गा ना स्य स ना सा कृ कृ क ल्ति था

॥ क्ष या न क स्व य श्र अ ङ क्ष ख या ल उ दा द्द गा॥ य श्रा स व र्णु म ज्ञा र्न था न त्क्ष क्ष ग ते यो

का॥ ग मा व र्तु वि दि नावु क्ष ग या ल व उ द्द न॥ ए क ति ग व द्र का र्न श्र गा म व रु या

य दं॥ म सा ल क्षी व न घा र्न का ला म स्त्री ब न स दा॥ ए क व क्ष व ट वा थ वि ज न व द न

व स ॥ घ श्च ल श्वा यु स्त वा स. य य स्व ण्डु ऊ ना म न ॥ सं ग म स्तु वि श्च ना य १ व र्ष्व ग स नू ग स्त

था ॥ नि र्ग न ग्र व न व क्षौ. नि क्ष न म नि रु ढ क ॥ न स क्ष ग ध ना र्ध्वं कृ. य क्ष वा ठ वू क्ष्मा ङ्ः

क ॥ ऋ न श्च ग्र व नं वि या. ई या न्य म षू क स्तु था ॥ वू ३ १ म क्षी म स्ता वि र्या. या ल यि ल्वा धि

मा ऊ ग स ॥ न ग्र क्ष ग स दा क्षा र्ती. व लि ष ऊ नि व द रा ७ ॥ व ल्वा न स ग्र रू या ल. द्वि ॐ

घा र्ग ह्न म व्र लिं ॥ स्तु स्व म ग स्व नू मा क्षी. ग्व ल्वा नी व लि क्षा क्षि न ॥ नि ल्वा धि क्ष न ल्ल

न क्ष वा दा ॐ म न ऊ न ॥ व र्ष्व ना र्पि ग क जं ग्वा र्पि ग स्नू पि ग ला व ना ॥ ड क्षा क ला ल

वदनाकपानारुनस्मशाला ॥ काश्मीनश्चस्नुश्रीरत्नुसगादिमीनरक्तस्नुष ॥ पूष्पवः

स्नुगन्धश्चस्त.दिपमूर्यंवतुस्नुल ॥ स्वविस्वालालमदि वाद्या. कर्म्मपूजायवोयन ॥ धर्म्म

वायश्चगीनाया. गपिनाकामदामदा ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं अम कायजूवगन २ श्कतयालकपि

लजगारुनरुानैस्नुवपिनयकालासूखगँधपूष्पवलिपूजागृह्न२स्व नवनृपन.२स्न

२मनृ२ख२लर२ह्रूँ२म ह्रातामनाथियगयावलिंगृह्न२स्वाहा ॥ ॥

नॐ ह्रीं श्रीं ह्रूँ क्लीं ॐ जयावविजयाश्चेव.अपराजिता पानाजिमा ॥ नन्दारुजाजयारिमा.कला

व वा ष का न थ्या॥ दिव्य योगि महायोगि, सिद्धि योग्नि गणेश्वरी॥ डाकिनी कालरात्री च.
उर्द्धकेशिनि भैरवी॥ गरुडा वाषनी मूर्ति यवना गोउ लोमिका॥ हिरम्भा वमला नन्द.
कालामूखि नद्येववा॥ पिशाचि दंशिनी वेव यक्ष लो धूर्जटी नभ्या॥ विषरुक्ष स वेति:
द्धि उल्लि ॐ स्कन्दथे ववा॥ हूं कालीराखवि दीघी, धूम्राक्षी कलहप्रिया॥ मागंगी काकद्रु
मीव. गथप्रियू नवा केक्री॥ नाकोगी घाल नादा श्व.न क्र क्री विलनपिनी॥ रुयंकनीउँ
गौडरुम्मी, शुष्काङ्ग नरमांसभोजनी॥ वीररुद्र महाकाली, कंकाली विकृतानना॥ क्रोधना

सीमरुद्राख्य. वायव्य गारुयान ना॥ ब्राह्मी ववस्क्ष वा यो डा. वर्ज्जिका ॐ स्वनीनथा॥ वाना
ह्रि नानुलिंह्रिव. गिवाद्रू गिवरुमष्टिका॥ ॐ दद्ध्यामस्तायाग्नि. वलिगृह्न २ स्वाहा:
र्व्वदा॥ यो सथियागिनीस्यावलिगृह्न २ स्वाहा॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्ष्रुं क्लौं ः सर्व्व
या. भनीयवि भनी. ह्मा नावह्मानमवव॥ कं गा यक्षप्रसीददः. सर्व्वदिग्सां सीद्धि
म॥ योगिनीयागविनस्ता सर्व्वपन्त्रमगयाी॥ ॐ दर्व्वमस्तावङ्क. श्रीनाथ्यावन
दामम॥ यरुकासास नदवी. गुनूयादार्ज्जनन गा॥ सर्व्वसिद्धिप्रदाक्षाम. रवीमस्वा

रुवत्तदा॥ विलाक्षयाग्रानाश्च. मद्धिवक्लिमसानल॥ मदक्तोमवलिजवि. रामयावाः
न्मतक॥ शुभिस्त्रजिमनयूलि. मामसधा. ििविकृर्ग॥ निकुर्यक्तुइसाना. यागिडुं
लिगलसंकला॥ ओकासादिक्रयथा ण. सूर्यसानात्रकार्लिंगा॥ ओमधिश्वरुसंदलादि
श्रसू. विदिश्रसूव॥ मद्दियानालत्रक्ता नु. सर्वस्मनाकुनमव॥ यागिनीयागयूक्ता
त्मा. स. मयगिवक्तुसाधका॥ विलकर्मसूवीनत्ता. तत्वाभिमुन्दुदवगा॥ सिद्धाश्वयू.
उकावार्या. साधकाक्षिपिसायिना॥ नगनवाथश्रमवा. जूटयातात. निद्धने॥ वायि

कृपवधूकचा अभ्यागनमात्रमङ्गुल ॥ नानारूपधरा नानावडजाविविधानिव ॥ मकू
सर्वज्ञी संउक्षा बलिस ह्रूं स्वसर्वदा ॥ सलक्षागणाकर्ह गणा सर्वमगलक्ष्ण लप्रदा ॥ः
प्रागर्ब्दजलया कर्मेय लक्ष्मि विष्णुपिजन्द्रूणी ॥ वनिपूष्याप्रदानन संरक्षामगवि कल्प
॥ सर्वकर्मनिसिर्द्धउ स दोर्वे मबुसांगय ॥ सिवगूह्निवुआदन श्रीकृका नाम
नामर्ह ॥ ॐ लिसमयाबलि ॥ ॥ ॥ ॐ ङीं श्रीं कूं क्लीं स्रीं गूं स्रौं स्लूं ङीः
म्लूं ह्सौं यूं स्त्रीं लूं क्लौं क्रूं श्रीं ङीं ऐं ॥ साद्धि दहि सिद्धि दहि. स्मनै धदहि जायं दहि. मनी

दक्षि अनन्द दक्षि लक्ष्मी दक्षि ॐ ह्रूं मा म्हा हा बलिं गृह्न २ अमृ नाव स्वस्वाहा ॥ ॐ सिम

सबलि ॥ ॥ सिद्धि लक्ष्म्या बलि ॥ ॐ ह्रां श्रीं क्लूं क्षौं ४ हां फ्रां आनन्द रुद्र व वनया:

याति हूं श्व नाय बलिं गृह्न ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं क्षौं फ्रां ४ फ्रां फ्रां जां जां

ह्रूं हूं क्षां क्रः मसानडामनायममसर्वविघ्ना नाशय ४ सकल फ्रां फ्रां मना

य अनन्त साधयार ॐ ह्रूं मीं बलिं गृह्न २ सिद्धि दक्षि ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॥ ति

पूर्वलक्ष्मदक्षिणयाबलि ॥ जां श्रीं त्रें मक्षासिपलक्ष्मन्दनी क्ष्मीं महावज्र पूर्व नाथां ४

सर्व्वविघ्नानाशय सर्व्वं नक्षी कुन २ सर्व्वयथान सहितं बलिं गृह्न २ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं २

ठ स्वाहा॥ ऐं घान नूप ह्रीं मसाध्यान सौं मण्डु मालिनी मसाऌ नविं शमीं बलिं गृह्न ह्रूं २

ह्रूं फट् ठ स्वाहा॥ **॥ गणानि ऋौं न बलिविधि॥** ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं क्षौं कवर्ण्णकामनयं पलवि

पूलगगा. जालयो०उय न्याबद्धा. नमध यो०त्रियउगौनियना. दविंशगमठकोना

॥ ओ बा यों मि ह्रिसं घानन. कूल गन्नू ना. बहू कं या गबू न्ना. यक्षा दं यं व का या. उत्र लक

सहजा. दञ्च दृ. श्री न्न मामि॥ **॥ गणाश्चा कुमसाबलिविधि॥** ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं क्षौं कौं कौं

ह्सूं ह्सैं १ त्रपानाथाय बलिं गृह्ण २ हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रूं ह्सौं श्रीं ऐं कुलवृक्षवटुकनाथा
य बलिं गृह्ण २ हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रूं ह्सौं गं गीं गूं ग श्रीकुलगणनाथाय बलिं गृह्ण
२ हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रूं ह्सौं क्षं ममलाके तविल श्र श्र नाथियपमेय बलिं गृह्ण २ हुं फट्
स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रूं ह्सौं ह्स्ख्फ्रूं श्रीसिद्धिचामुण्डश्वनी बलिं गृह्ण २ हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं
ह्स्फ्रूं ह्सौं ज्ञाकाग वान नीविश्वरुस्वा बलिं गृह्ण २ हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रूं ह्सौं
सर्वस्याद्वव्यासर्वस्याडुभयासर्वस्यापि शवस्या ॐ ह्लूं द्वमाद्वीस्वा बलिं गृह्ण २

ह्रं ३ स्फ्रु स्वाहा ॥ ऐं श्मशानकृपिठि सिद्धासननिठ पषी ठ क्रशाव क्रवसखाहदि

वासिद्धि समयाचक्र याइ कां वलि ग्रु ह्रं ३ हूं स्फ्रु स्वाहा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं क्लौं उ क्लानु कं वक्षी

श्चितुलाशुर्ने हृदयायश याइ कां वलिं ग्रु ह्रं ३ हूं स्फ्रु स्वाहा ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं क्लौं ३

[illegible] क्लौं हूं श्रीं ह्रीं ऐं श्रीनवात्मानाथन वाभिक ग्नी. श्री ज्ञा स्वावि

ज निकर्म. मूल स्थान रुलालि क्षाय. श्री सिद्धि लक्ष्मी श्री

गुह्यकालि. श्री त्रिपुरसुन्दरी. सोगत यस वलि वा नाय सा

यथायमवारुनायॐसौवलिगुक्व२मिर्षिददिकंररुस्वाल॥ ॥धुयगावाक
॥वनम्यापिनमाल्यन्नं.गन्थाश्यागन्थाउलमः॥जास्तुयसर्वंथमनी.भूवयायंत्रपिगुः
क्वगी॥ ॥वायस्यावाक्व॥मत्रकालामह्लादाय.सर्वत्रपिनिन्यायदं॥मवाक्वास्याके
नक्वापि.दाथायंत्रपिगुक्वमी॥ ॥भैखध्ययावाक्व॥जून्नखउद्विमंखल.नमेख
रिममन्विमं॥मयानिथदिदंरुक्व्रागुहानखनमज्वीनी॥ ॥थनपिथक्वाय॥म
नाओंकिजिथामींह.नह्नापिहानमलंमं॥निढिसिढिक्वमंदंथं.जूनिमनानाददामह॥

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ ह्रां स्वाहा २१॥ ह्रीं [illegible] स्वाहा २१

ह्रौं स्वाहा २१॥ [illegible] स्वाहा २१॥ [illegible] स्वाहा २१॥ [illegible] स्वाहा २१॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

कुमयवहद्विगा, नन्दगकिः हुसीमा, श्विष्टि न्यायवतुम्ह, सुकुलकुनगर्नु, पीवर्कुलाः
नमक्षु, वला गार्दवका न्याः युननयिवरत्नः खात श्रङ्का हिस्वर्क, दया स्त्री सु, र्विमल
हुनरवरल का, ला, विदुखाश्रमडा, वृद्धकोमानवाने, यजमजिव कास्ना, वङ्कदवा
कुमान्या, श्री ब्राह्मं वङ्कसुर्या, नवनवकालिने, युमरुदङ आली, त्विनर्वेलिङ्गिवगाः
नै, स्वथसुकनियुग, कांकनस्वाथिकाने, नर्मावेयुसलिख्या, नवसुनुवयद, नसूम
यद्विनस्ली॥ श्री गानन्मयचिसुं, कुनकुमसकलै, मङुलाके कुमाने, लिश्यावेमलानी,

धनिस्रमसकल, पूर्णसंहावरुन्द ॥ आदावह्वादसाके, कुलक्रमसकलीं, मञ्जुलायान
पूर्ब, संलानशियामन, पञ्चमलकायके, त्रिकुलीसिद्धिशतिवाओ ॥ मध्यविश्रमसमी
पूजमननरुवीं, यवयसाविकानं, संत्रिनंजनमली, नमथगुनूबन्हिनवींश्राः
कूजग ॥ ॥ आसहिरुंगमक्ता, शिव०गणियूग, त्रिकनायीत्रकाना, त्रैनमा
श्रीआदियान, यवकनसहिनं, मधसंस्कृतदिक ॥ ओं नम श्रीजानंमनामणिकठि
गनिलय, दक्षिणलशेववकोल, श्रीवामगीसूतगिगनियीः० यशुजनरुयक्तस्थूलिवं

अनविग्वैं ॥ ॐ ग.स्याज्ञकामनूर्यं.मद्दनमनिशनं.सर्वसिद्धालायाखे.क्लौं विकाना
नसमसं.यनैमजिजक ना.लैंदुगं यागवदं ॥ क्लौं गल्मक्षदि यालिं गयत्रमनूसक
ला.विन्दुनूयाश्क.यं ॥ क्लौं निखानन्दलनूयं.गइयनिमथनं.मन्त्रकालविसान्नैहं
विद्यासगायग्रंमी.जनूरुवविमलं.गसायि०ललाठ ॥ ॐ जवं याक्ष समसं.क्लि नि
लयजनानी.नूडगक्लिश्तिरुदा.ॐ गयस्का दवदवा.जकूलकूलमया.मन्दक्षगील
गक्रा ॥ ॐ गुर्वाक्लाविदुरुगा.यशुजनरुयना.सिद्धिदियायनूया ॥ क्लौं निलंक्लान्या

शुनकाः रुगवनि शुरु ण्मानन्द अक्षि ६ त्रुनिज्ञाः कौँ कुर्वक्षि नत्र क्ताः कःवजिवननत्रूश्री
कृक्षिकाक्षानमानि ॥ ॥ सँक्षानँ मनूमार्स्मनः अूःन्ववँ नत्र ध्वना ॥ दि र्थ म ६ ष्यो०
मकानः लिद्धि ६ द्ध य मूः दाद्वर्गे ॥ उक्षि शुनी गुलवाजीः वृ कः र्स्वे व क व म्ब कौँ ॥ सँ क ग ६
लिलिक ६ प्राक्रः नूम्मावजुहवाजिनी ॥ गद्व वद्व पूँ प्राक्रः रा दा म ष्मा न रू न व ६ ॥:
याँ व म लि का द वीः वाम वा र्ज त्र क ल्य थ र ॥ अू न्व याँ प्र ल याँ ण्व नः म थि का न श्रेः
कौँ क न ॥ ज लव क्ष गि ना स्म नः ह्नि पि श्री का नू य कँ ॥ कि लिं ष्वि ष्वि नि वृ क्ष यः मि दि

ॐ नम

ये वर आगत॥ रसा ल्प नसा द वजि. या जा नां कूला कर्मी॥ यातसा धन रुधन. न्याती
कु ठ त्रु मंलु था॥ यूजि मे नयि न रुङ. लजि थ्या थनिदयगु॥ ॥ॐ नमः स्वस्ति
कार्ये॥ नमाह्रु नमसामाया. तु क्षद ह वा नायन॥ एकाक्कि नि वि शुद्रा त्मा ना दा कः
वि दृ मालिनि॥ जू द हा यन मू ल्व न्न. जू ब थ वि ग्व धनिना॥ म रहा कूनुलनि निलु. हु
नमथ्या व्य वङ्गिना॥ नामसू थ्यो ग्निमथ्य सू. वाः मयावि ययायन॥ ॐ का न वि गू हु
वष्ठ. द क नाङोर्ध धनिनी॥ यानयग न धनु श्रो. जूनन्म वा क्र य वाय॥ हकानार्ईके

नाक्षत्र.यमक्षिजल्कमात्रिग ॥ सकनाकमसामाया.वनदंशाकयूक्तिग ॥ त्रकेक

लाति मख्य ह्रू.मर्म मक्ष कहृदनो ॥ जूसर्त्रिंगल्कलादवी.हृदनीत्रुकानैं मुग ॥ वि

ह्रूल नानि सावदवी.तुर्जगकूटि लाकूलि ॥ त्रुकाविषू र्वें.ॐ ह्रः श्वनखसदाजिव ॥ः

ननयक्रमसायत्रना.यादमूत्रयवक्रिंगा ॥ जैसाकजनीनादवी.नमक्षे नक्रि नूयिः

नी ॥ ॐ ह्रःत्रयि गल मखक्ष.मूजलीगरुनूयिना ॥ विहृमख्यगनादवी.कूटिलवाक्ष

वनुविका ॥ रयानकलिकासम.क्षादसानावनैंविनी ॥ उमाकूहगणोना.क्षादसा

दिव्यवर्च्चस ॥ सत्यसन्धाकृतावसु. दसाक्यानखिमिनि ॥ लक्ष्मीक्षयनमादवी. द
क्षीलार्लनगार्मिनि ॥ नासाग्रवसमूलीर्ल्मा. मश्वसूत्रवाह्निनी ॥ हुक्षक्षयनमाः
नन्द. गालमर्स्त्रियवह्निग ॥ नादयत्नि. कसद्य श्री. गुलाहृकसमम्विग ॥ ल्हकसलक्ष
लेसश्व. वर्म्मावर्म्मयुद्धय ॥ कार्यकालनकदुर्ली. त्रिसूगानन्दविग्रह. ॥ यन
यमयम गुद्धवगन्धगसवगक्षव ॥ सर्द्धवगुभनादवी. गुक्षगर्लवावह्निग ॥ नाक्षि
मूलमल्लविक्षुरु. विद्वविग्रसमम्विग ॥ जमलीनमदासाग. संसानार्त्तवमानीः

नी॥जयाववि जयाशेव.जयन्तिवायनाजिता॥रश्मनूविजम ध्रस्लु.नमस्कायमा
वनी॥वर्मभाक्रकनीदवी.भातअक्ष ववद्धि.ग॥त्रमनिनक्रिनूलेन.म लाघ्र.ह
समन्विग॥त्रमनीत्रामलीत्तैनी.मायावन्द्रुयसंहनी॥स्वकु न्दरैनवीदवी.कायउ
न्मलरुनवी॥यक्ष्मसवर्तुनयहु.त्वयानूवउक्लिक्लिना॥त्रूनमायानूनू.वक्तु.नम
स्लक्ष्मनरुनवी॥उक्ष्मक्लटविघ्नज्ञिन्द्र.मानक्षक्षस्यानग॥नमामिदववदव्रमिः
नूयानघनविक्रम॥कानावनीवगवनी.उमादश्री नमस्तुन॥यागिनीवश्चियादवी.

णोनालक्ष्मासनहूगि ॥ दखनाईगदवी॰ग्रमूखी अक्षिक्ष्मालिनी ॥ क्राहूकसूरुग्रदवी॰
दुग्माकालायनीकृथा ॥ निखक्षिर्नसमास्वाना १ नकाएकाकनयथन ॥ त्रुक्षीमाहूश्वन
श्वेव॰कौमानीवेपूवीगथा ॥ वानाङ्क्षिश्वेवमाहूनन्द्री॰ग्रामूस्तीर्तिरुयानका ॥ यागिनिर्व
ङ्गिदवङ्गि॰कृनाष्ठकसमञ्चिग ॥ ऊँत्रीश्वेवरुजूस्नयी॰यामनेसत्यवानूनी ॥ वायूः
याश्वकाकौवलि॰ॐआनसमूदाहूगा ॥ त्राखागमवानूश्वकाना॰जूहरूसाजयक्षिका
॥ वनिरकौश्रिकश्वेव॰दवीकागरुवालूथा ॥ गथाकालीउमादवी॰दवदूनमाकुग ॥

रुद्रकालि महादेवी. वर्म्म सून्तु रुयानन ॥ मसान्नु भम ससा भ. नम सगकि नुयिना
॥ तुर्त्तु शवठस पिस्वासा भ. दया नाथा कृनुष्वम ॥ क्षनार्थि मामसामाया. एनदिक्षु
मिमदिरु ॥ यस्या दं स्फ० ग्रां. पित्रीं ष्या यवमानव ॥ आप्या नयनं मंसा नं. निर्ष्यानि
वनमंपद ॥ जिवगकि तमनलीं श्याया गनामर मंगय ॥ मिवजिकि तमास्वाना. स्वरु
नंतवनयथा ॥ कृनुनवामनुनवा. प्रतिमायायातक्षयि वा ॥ लिंगवक्षि तमूला वाः
विमायिजतनवस्या. ध्यामि स्वुमग्रतादिक्षु ॥ नविनं तू विनं कारीं. जीवनीं निनुय

व वं॥ या म स्या ह न ग नि ह्म॰ ॐ दं सि ड्डि सि द य स्वा॥ ॐ नि नि व्र भि कि स्र म व ना ला वा म

हा मा या स्कं व स्र मा कं॥ ॥ वं न्द स दा स स्कं ल स्मी वि कं भ न स्व न॰ कं प ज्व नें न न क या

क दं व मा लं॥ स्व भा ज व ल स्य ग क का ये द ल॰ दं न हि ग पि स्र व न ज्व न व ल स सा॰

॥ ॥ श्री श स न व द्व क ना था ॐ पि य सि ड्ड॰ स्क न्द॰ स ना नि ज न का न न धू प क

उ॰॥ गो ति स ग म क्ष्मि क्ष॰ लि गा म यीं द भ न॰ पा या ल्म न कं व म न॰ जि खि वा द नाः

ज॰॥ ॥ ति न्द न सा न्द्र म द म क्षि न ग क कं॰ श्रा नि ज्ञि द घ ना ज न य या ध न्द द नः

श्री ॥ विघ्नघ्नअनवपनमाधमरूकसूर्यपापादर्यगनमामि ॥ सकनार्थदामा ॥ ॥
नूष्टअनानवपादयुगंनमामि । पर्थआनाथपदर्द्वकजमात्रपद्म ॥ मेत्रनमानाहि
कमेर्स्वननयथमंस्रुगुद्विकगुनूपनसतगंनमामि ॥ ॥ यस्मिजमांनिबिसतगु
विमानमर्ख्व। संगिछ्नगकुलिगयपछ्जपक्रमस्थ ॥ जानन्दहेनपनपाममकछ्रि
गसुर्यंनमास्तुगुनपसनगंजिपाय ॥ ॥ नायनमामिगुनूपकिगजसमस्माः
द्विपोपसिद्धिकतिमानयिमानपेथानू ॥ यपांसदस्वनलपदजपनूसंगातंगा

[illegible] ग म य न लि म नु न ला ज ल क्ष्मी ॥ ॥ सं सा न या न वि व सा हि वि द ह स गा १ सं:

श्री अ ना रु य व सिं धृ वि व ल स उ ॥ स ल स ना य अ क्लि ज स न द ह ल क्ष्मा. व लि ख

न य सा हि ग सू ह न द या गि ॥ ॥ दि का वि ह ला ति न ली ल स मा न व ला. लीं व ध्य न

र य व म ग गि ति ना अ पृ ख्या १ ॥ ना ज्ञौ १ क ठ क न य नो १ रू नो स न व ला. ना मा ख्रि ११

स ध्रु न ने १ लि लि क न्तु ना ख ॥ ॥ दि स च्छि ना स न क म नु ल सा क्ष सू उ न ला. रु मा

क लि ग कू न्तु ल मा व ह नी ॥ या का रू ना रु म न क. स ना यु रु ना रा व्र क्ती. क ग उ म ग

सा गुरु मङ्गलाया ॥ ब्रह्माणीया ॥ ॥ ब्रह्म हंसासनस्थं बिबगुरुक्षमालि ॥ अक्षिलि
पुस्तक गिसे स्वजठकलाय ॥ ननस्वथस्थि दधगी वृषरुक्मिमा ॥ यामाहेश्वरीरुव
पुयासगुरु मंगलाया ॥ माहेश्वरीया ॥ ॥ सिन्दुनपूजमहेश्वरिमा वहगा ॥ त्रि:
शूल खट्वाङ्ग यगिमा नक्षिदक्षनां ॥ मायूनकासनहमा ह्लिमि बालनःयि कौमा:
रिका रुवरु सगुरु मंगलाय ॥ कौमारीया ॥ ॥ गरूत्मनी चक्र मिनिरुणमनू
लपहनस्था ॥ सुरेन्द्रयीगजसूस्वानवबैष्णवनाया ॥ श्रीखगिवक्र गदयाक्षिगवानू

दस्ला श्री वे सू वी गन नासि सवा पसन्ना ॥ वै सू वा या ॥ ॥ उन्नू ल्ल की गु कू द ला थि
कू न कू गा गी घा नासि घा न कू ति ना र्न्न न का ल व क्कू ॥ मी ला दि सि या स व ल या ॥
कि न वा कू द ला: वा ना दि का स दि ष या त ग ना न्न मा सि ॥ वा ला दी या ॥ ॥ व लु स्य
जा व द न ल न सू वा व णि: गा ल्ल ल र्द्द अ ड न य नि सा रु मा ना ॥ ग्र ना व गा स न ल्हि
गा ध्व रु व ऊ द स्ला ॥ स ड्डी न्ना मा सू ने कि न्न न द व व न्थ्या ॥ ६० ल्लाय ना या ॥ ॥
य न ल्हि ना न्त न क न क क या ल मा ला ॥ स द्दा ग ति ति स कू या ल स कू र्हि द स्ला: ॥

दक्षुक्तालवदनागऊदकक्षती ॥ वामृन्तुकासननामिसदायसन्ना ॥ वामल
या ॥ सोदच्यसानऋविनाकमलायगाक्षि ॥ यीनलनाललिगलानससारमना
॥ सक्रतिमूलवनवारुययानिनृका ॥ लक्ष्मीं नमामि मद्रुगीमद्रुनायमूर्लि ॥ मादा
लक्ष्मीया ॥ ॥ खक्तानीकमलवुसोच्यवदना. माद्रुव्यनीलया. कोमानिनिपू
दर्थनासनकनिवजायू. क्षवेक्षूवी ॥ वानाक्षाघनथानघघेनमूखोऽञ्जास
वजायक्ष. वामृजगननायरुनवा. गभालनकुवामानन४ ॥ ॥ जूजिना

ग नू नू व लु क्रा म उ न्म लु र्के न वं॥ क या ली ह्नि म न स्थे वं सं ह्ना ना स्थ क न मा स्नु न॥

॥ गुद्ध ता न्क सू सू र्ग ह्नू ठि क म वि म या॥ ढ्ढू न ढ्ढ र्यू न का न्कि प वा र्स्य य स्थ व र्त्नु॥ त्रु

ज ग द ज र्तु ज नू ल न र्त्रु द म न सू॥ ह्ना ना न्दि व्या ह्न र्हू म ग्नि न य न म ख्रि ल॥ त र्य

य ह्ना य वि र्ग द व ह्ल ढ्ढ म र्लि स क ल र्रु य ढ्ढ न न र्मि ना र्थं र्त्रि स्व ज म॥ ॥ स्व र्नु

र्क्रू म र्लु म गि ड्ड र्ज्रु य न क्रू वि र्ज द्दू त्वा नि स र्रु म नू र्स य गि र्शु र्रु म र्ग्र॥ ह्नू न्कि स्नव

घ्न द ह्नि ना वि न स म मा ना ह्ना म न्नि य व ज्ञ र ज क्रू वि ना जि ना या॥ ॥ उ र्तु ग याः

नः कृत्वा जगरि नदा नमाला। यशस्थि गारुराक्ष नाव नदात्रिनत्रा ॥ वज्र कवर्तु
सद्द जाम्ब नमाव दन्त्री। वागीश्वरी दलर प्रजन्त नाम्ब कानें ॥ ॥ सत्यत्रि काः
लसथम ह्नलमात्ति वृरु। नद्वा ऋमह्न दनर्यं ञज मह्नु श्र। गं ॥ द्वाने श्वरु ह्निः सद्दि
नदि कृं ञं श्वनीनां। नश्व कृ मनुलमद्दं ञनर्नं प्रयामि ॥ ॥ सत्यत्रि प्रा सन स्लो स
दसृदि नमूस्री वज्र यश्वदि न्मा। व्र म्मा न्या श्र ह्न यञ्ज ह्ल लदि कव्र ल व श्री प्रयागः
दि का श्र ॥ पृक्ष सृ विं स कांख वर स स स द स व वज नै ग्ग स्हू न की। सा स्मा विं ञनि रु

दारुमकृननृगगायाउद्वाशिनवर्क्षी ॥ ॥ ॐ स्वाग्यानिक्रियासासूनवननति
नासाद्विर्यामजलाख्या ॥ सागेनीसावदूर्ग्मारुगवपिगुरुदामारुकावगुमक्षु ॥
सावफासावविश्लूग्रहगननपिमारुनविकोउयालासानकानकूयाविविधः
गुनदया याग्निनीतीनमापि ॥ ॥ थ्यामाकानखवु [illegible] वर्णुवकूधायस्वानूवा
मछिना यासूर्थावृकानकानिमऊसनूमाविस्थिकोजकना ॥ यस्येकास्यदमाद
यानिदधना४सर्वायूक्षानत्रिल सात्रीमद्वनदाकृजाऊयर सानिखयनावद्धि

मू २

गा ॥ द[illegible] त्रिमंयस्यायालियनगुं वाकुरवज्ञाकुजं वजं अंरवं गथायगलयनद८
गन्त्री सगालि जिग८ ॥ य८रवदाऋ त्रिजूल वायेरलकेकायो सघलुं गथा यागक्षा
रूयवा म यानी सू समानु सलग्न गक्रीकन ॥ रुग वाऊ सू ज्वन साकु आन कुकु म
जीवि गं य हे वंथि नजा नुना ग मरु मा द वि वर्सि रुन्हि गा ॥ सायं पायरु गा मला
रूयरु ना सं साचव गायुनु ८ साय याउ कु न ज्वनकु ल युनु ८ श्री सकि ना थ ८ जि
व ॥ ॥ श्री मानका त्रि न जालन रुननमि गा मल मा गंगगासि. विश्वांसी या

नुव क्षात्र थ न ग ज घा नाम र ल लानल स्मा स्या ॥ दृ वा अे र्ब्व स्रु स्म स्व बु न व न क्व स्मे
र्ब्व र्ब्व ना क्व ग रा ना ला म श्री क्व स्रि क्म स्व्या वि म न रु ग न ला स्त्र न दि वो व मा घ स्र ॥:
५ ॥ ॥ उ स्तू ना म्बृ ज क र्ली श्रा य नि ग ना श्री सि स्रि ल क्ष्मी य ना क र्प्य न स्तू ठि क न्द क्षुः
न्व म वृ ना नि श्र ज व या या य हा ॥ र्ह सा ना र्हु व इ ष ख र्त क्व अ द ना नि स्क य द स र्व पा
श्री म त्व र्श्क मृ र्स्वा वृ आ द ग स्तु आ र्व न स्नि ना या र व ष ॥ ॥ या सा क का र्ग्नि क्वो र्ह वः
स्तु नि र्ह स्मा नृ या सा मा र्क्व व क्षि ति य श्च द ल म श्च र्स स्त्री ॥ वि स्क न वि क वि म या र्व्वः

विलीनरूपा स्वासुवसादिगकर्णौघनमापिकालीं॥ ॥मायाकृत्तुलि[illegible]नीक्रि
यामथूमणिकालिकलामालिनी॥ मार्गशिविजयाजयार[illegible]वगीद[illegible]वागिवाश्रा
रुवी॥ श्रीकाः ४ ओंकनवलसग्निनयना वाग्वादिनिरुनवीं ज्ञो कालिनि पूनाय पूना
यनमयी मानाकृमानीयति॥ ॥कामाख्यविद्रुदवाग्निरु[illegible]नजननी. त्वस्तुदि
वानपूर्ण. श्रीमार्तंजादिवकूञ्चवलसूनवनवन्धि माह्मावि लक॥ वारुर्वर्गप्रश
मकठविकठकन्ठकीकलठकानी. वूर्द्ध कोमाननूर्यगदननसगर्णकुलि[illegible]कमा

मखु ॥ ॥ याया द्‍ यायव कर्म्मा नां या या त्मयाय स्तरुव ॥ न्हि मीदव दवजी.
सर्वे याया रु यादुनेः ॥ जून्ह्यव सलनें नाश्लि. वं मेव सं नलीमम ४ ॥ गस्लाक्षाव
त्यस्लवन. नक्ष नक्षयव नमञ्जवनी ॥ ॥ पगीक्षादि ॥ थन. थव नें. जवमान.
यानें. नायव. जक्ष नकायाव. तजनवींगय ॥ वाक्ष ॥ जल्तस्तु सनें नाश्लि. नामवसव
नैमम ॥ गस्लाकावतरुव्यन. नक्ष यक्षयवनमज्वनी ॥ मक्षुहि नंक्रि याहिनं. रुः
क्लिहिनं नथैवव ॥ जयसमवि वालाक्षः क्षेमञ्जेयवनमं ज्वनी ॥ थनदव याकः

जिवमजिवजूयनाथक नमस्कारयाय॥ विदुविय॥ नमःश्रीनाथाय॥ नमःश्रीति
ह्विनाथाय॥ नमःश्रीकूजगनाथायनमानमः॥ यकानकेयाथव.मनुलअवादवे
नकायावकूय॥ थनजूनथाकास्यन.सुविविकूथढकायाथनर्थनयाय॥ ॥
अनिधूनढवा॥ वामलनमथ॥ गंगजमूनयानग.अग्रकुअलसनिहं॥ वामः
नमूखगांदव.सवंदनुविनिर्म्मिन॥ ॥ओकवनगमथ॥ मूक्वावालविवि
गांगं.मेदवायूसमाकूलं॥ मायूननिर्म्मिनदव.वजनेयग्निरुखगां॥ ॥

थ्वगिथ्वनकावर्तिमूखिङलसात पिपूजायाय॥ ॥ मैमूखमङनसा॥ वामञ्ज

लिविय॥ ॥ नगायमञ्जवलिपूजन॥ ॥ ञ्चुमनवायया॥ लिञायया॥ म्वर्थयः

थ्वायया॥ वभवनवायमाक्कनयया॥ द्दपि. कर्तुयमा. यंवायनाना. ञ्चुदवाल. जजप

का. माक्कनयया॥ थगिञाया॥ ॥ गुनुनन्क्षानं॥ न्यास॥ वं ञ्चुक्तायस्व ठ ४॥ कन

साधन॥ वां॥ अंगुष्ठाय नमः॥ वीं तर्जनीभ्यां नमः॥ वूं मध्यमाभ्यां नमः॥ वैं अनामि:

काभ्यां नमः॥ वौं कनिष्ठाभ्यां नमः॥ वं॥ करतलपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॥ करन्यास॥ ॥

ह्रां ॥ हृदयाय नमः ॥ ह्रीं ॥ शिरसे स्वाहा ॥ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ह्रैं कवचाय हूं ॥ ह्रौं ने
त्रत्रयाय वौषट् ॥ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ ॐ दिग्बन्धनम् ॥ ॥ जलपात्र पूजनं ॥ जल
पात्रासनाय नमः ॥ ऐं ५ ह्स्ख्फ्रें आनन्दभैरवानन्दविनाथिनीकाय ह्स्ख्फ्रें श्रीजलः
पात्ररुद्रानन्दाय याइ ह्स्ख्फ्रें क्लीं ॥ ह्रां हृदयाय याइका ॥ खेउ ॐ नमः ह्स्ख्फ्रें पूजा ॥ आ
वाहनादिध्यान मुद्रा ह्स्ख्फ्रें अर्घपात्र ॥ गायत्री ॥ कुब्जिकायै विद्महे कुल ह्स्ख्फ्रें दिमाय
धीमहि तन्नः कुब्जिका प्रचोदयात् ॥ ॥ सूर्यपात्र पूजनं ॥ ऐं ५ सूर्य पात्रास

नायनमः॥ ऐं ५ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ४ यस्रू न२ घा न२ग न ग नू नूयव ठू२क दू२व म२ दूम२

घा ग य२ वि घा ग य२ वि घ्रा२ ह्रूं ३ स्रू ठू क्री श्री महा कामातिका वि श्वे श्री नू र्घ याय

याइ क्री॥ ऐं ज ज्ञानन्द ग कि स्रू न वानन्द श्री महा विद्या नाउ म्वति क्रौं श्री नू

र्घ पा त या इ का॥ वत ॐ न मं प ॐ॥ ज्ञा वाहनादि यानि मू जाव मं

यन॥ थनरू न मुद्रि याय॥ ह्रीं ह दि॥ क्रूं व क्र॥ क्रौं जि न॥ गाम वि

नामन॥ ॐ तिरू न मुद्रि॥ ॥ नमायं वा मू ग म ना नं॥ वा क्ष॥ थव २॥ यं वा

ह्रां ५ हृदयाय नमः॥ ह्रीं ५ शिरसे स्वाहा॥ ह्रूं शिखायै वषट्॥ ह्रैं कवचाय हुं॥ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ह्रः ५ अस्त्राय फट्॥ ॐ इति षडङ्गन्यास॥ ॥जलपात्रपूजनं॥ जलपात्रासनाय नमः॥ ऐं ५ ह्स्ख्फ्रें आनन्दभैरवानन्दविनाथिय काय ह्स्ख्फ्रें श्रीजलः पात्ररूपानकाय याइ ह्स्ख्फ्रें क्लीं॥ क्लीं हृदयायययाइ क्लीं॥ खेउं नमः ह्स्ख्फ्रें पूजा॥ अमृ वाहनादित्यं नमः पूजाइ ह्स्ख्फ्रें र्यं यग॥ गायत्री॥ क्लिन्नाय विश्वहृत् क्लन ह्स्ख्फ्रें दिवाय धिमह्. गन्नक्लिन्नाय वा दयात्॥ ॥सूर्यपात्रपूजनं॥ ऐं ५ जय याग

नायनम॥ त्रूं ग ज्रां क्लीं ह्लूं ऊं १ यल नर २ घा नरगननगनूनूयव ठू २ कद २ वमर २ दमर
घा गयर २ वि घा गयर २ वि घ्रा २ ह्रूं ३ स्व ठू क्रौ श्री महा कामाति का वि ख्वे श्री जू र्घ या २
या २ को॥ ऐं ग ज्ञानन्द गकि रू न वानन्द श्री महा वि द्या ना उ म्ब ति क्रौं श्री जू
र्घ पा न या २ को॥ पतः ऊँ न मेघ ऊँ॥ ज्ञा वाह ना दि या नि मू जरु र्ग
य गु॥ थ न रू नमुद्रि या य॥ ऊँ ह दि॥ ऊँ व क्र॥ ऊँ जिन॥ गाम वि
गामन॥ ॐ गिरू नमुद्रि॥ ॥ नमयं वा मू ग म न ना नें॥ वाक्षा॥ थव २॥ यें वा

मनस्नानं॥ जनिस्नानं॥ बद्र.सिन्द्र.उरूयविनं.पूष्पा.नेवाद्य.न्यान.पूजनं॥
आवाहनं॥ अर्यसर्वनान॥ आसन॥ आम्नादिजहूपूगिकाअनाययारका॥
यनासनाययारका॥ ध्यान॥ नेगवामूजुवलुन्यावि.धानडस्नाकनालिनं॥
नकावलुधनीदवी.यवाकूसमसंनिरु॥ दातिमीपूष्पसंकाआ.सूर्य्यकाढि
समयरं॥ पिंगरूपिंगकमक्षु.नकाकावत्रिस्नावनीं॥ सूक्ष्माकेकालन्या
व.बुद्धकजीवमद्र.जा॥ सर्य्यसर्वाफरूमांग्री.हाजरुननरुषिनी॥ सूनुमा

लामनीभैडा.ह्याग्रासूकढिस्लुबली॥ खङ्गस्फटकद्रुम्लक्षू. तमर्न्दखह्माङ्गमवब

॥कार्लिकांयानश्वनीवग्रनदरुक्षिमस्वर्गौं॥ जवैश्वालामसादवीं. वर्श्वीक्ष

वनमाष्क्रु॥ ध्यानपूर्यांयाइकौ॥ पाद्यार्घ्यचमनीयस्नानं॥ वन्दनतिदूनाकम॥

यज्ञयवीनमूध्या॥ तियाकृति॥ ऐं ह्रीं श्री ह्रूं ह्सौं ख्फ्रें श्रीसिद्धि ह्राम्लुंयोवाइ

क्षौं॥ ३ ॥ धूपंवलि॥ ऐं ह्रीं श्री ख्फ्रें ह्सौं श्री सिद्धि वाम्लुंयवतिगृह्णरगा

किकनरसर्वविघ्नान्नाशय २ सर्वनागग्रआंकि कृनूर २०० दवालयगिम

ॐ गन्धं र्ह्रूं ह्रः स्वाहा ॥ पञ्चगगन पूजयाय ॥ आवाहनादि ॥ मुद्रा ॥ ॥
धनंयमिवानपूजनी ॥ ॐ ग जयाये याइ कों ॥ ग विजयाये याइ कों ॥ ग जूजिनाये
याइ कों ॥ ग जूयनाजिनाये याइ कों ॥ ग जम्भनी याइ कों ॥ ग स्तम्भनी याइ कों ॥ ग मो
हनी याइ कों ॥ ग जूाकर्षणी याइ कों ॥ ॐ बलि ॥ ॥ याव ऊ ऊं मल्ह सिस्था
वस्तु थाय्ज्जि नाय ना ॥ यजु या गरु कनकजी । रु खाल्हु बलि कर्म ला १ ॥ ॥
आवाहनादि ॥ मुद्रा ॥ धूप ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ न्यात ॥ फल ॥ ताम्बूल ॥ यज्ञदान ॥ ॥

जय॥ स्त्रोत्र॥ ॐ वाम. अवलवलु म. लु दनौं स नासारी थनीबा. जिनाति सा ईल
खिंगखजुबसैरु. तकैअकिंसु म. लुद्धं गं॥ याअं गामनहिद्धियालथनू. वं
ह्रुगींक्ष्लाथातिलीगांदवासगर्ग. नमामि जिनसारीगार्थरूयनाजिना॥ जू
जगन्नाथदि॥ ॐ निवासअवलिपजाविधि॥ ॥थनवपियजना॥ तखनमिन॥ व
न. लिंपूलननिवक. स्वानस्नाय॥ पूजना॥ पञ्जु ह्रूं दनायजीं ताहदअयथाइका॥
लाता॥ खजरु. लागी ह्रू थना. सर्वसरु नि थ्याजिगं॥ पञ्जुयाऽह्रूं दनाय. जूसि॥

मालनमास्तुन ॥ ॥ यगुपूजनं ॥ पिवथान, पूर्ध्वं वायक ॥ निर्म्मद्ध्याय ॥ बलि
ऊ ४ जूस्त्रायस्वाहा ॥ ३ ॥ किनाउ लीखनपिहीं नय्या ॥ न्यनविया ॥ गुरुकाम
मतादीयस्वादि ॥ ऊ ४ जूस्त्रायस्वाहा, बलिविसर्जनं ॥ पूर्वथाय लीखनसाय, थ
न, पिंथननिवक, लानद्धवक ॥ पूजनं ॥ भीउस, ॐ तास्यामी कलायनमः ॥ बा
लाउस, ॐ शान्ति कलायनमः ॥ ह्रूं ग्नेथस, ॐ विद्या कलायनमः ॥ नाहिस, ॐ
वनिस्वा कलायनमः ॥ क्लिश्वस, ॐ निवृत्ति कलाय २ ॥ ॥ भाउस ॐ ज्ञान

म ः ॥ दृ ग पि म. ॐ ऊँ न म ः ॥ कृ म य म. ॐ ऊँ न म ः ॥ ला म वि ला म न ॥ ॥ म कृ
क न ॥ य ञु नृ या य य वि य द. ज्ञि न ञ्जु वा य धी म ह्नि. न क्षा ञ्चा ग व्र वा द या ह्न ॥ ॐ ज
क्षाँ या य ह ङ्क ला य ख्वा ह्ला ॥ या इ को यु ऊ या मि ः ॥ म म य न क ॥ ॥ नृ या दि
म ॥ नि मि लि वा क ॥ य ञु ग ज्ञा मि द व गि व्र ह्न या उ वा मि न ऋ ख्या पि ह्लग
श्री सं य ह्लि. वा म ञ य प य य कृ म ॥ ॥ क्षा ग ह्लं व ति नृ य ल. म म ला ख्या द या ह्नि
नै प्र न मा ष्मि ग प ः म र्वं. नृ यि नं व ति नृ पि नं ॥ वा म ञ्जे प्री ष्मि दा म न नः द ह्ल ना य

पनस्नावम्पव्रयाय.शउॐ श्वामरत्वा॥श्रीसँमलोनस्नावाद्कनी॥ॐग्लूँ मनक्लम

ष्ठलश्रीस्नादिदवयाइकों॥पूजयामिनम ॥ ॐदोंश्रीश्लूं क्षौं

याइकोंपूजयामि॥वलि॥ ॥शिदवपूजनं॥ ॐगननाह्लायैयाइ

कों॥ॐगगांगींक्लूं श्रीक्लूँउयानासयाइकोंपूजयामि॥ॐगमयूना

ह्लाययाइकों॥ॐगश्रीक्रींक्लूंनपूउवस्कनाथययाइकोंपूजयामि॥

वलि॥ॐगमगाह्लाययाइकों॥ॐगगांगींग्लूंश्रीक्लूलगणलनासयाइकोंपूजया